स्थलीय अभ्यास प्रशिक्षण को सुगम बनाने हेतु

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये कार्यशालाएं

प्रशिक्षकों के उपयोगार्थ प्रशिक्षण मार्गनिर्देशिका

कमल कार

CLTS Foundation
a better tomorrow

WATER SUPPLY & SANITATION COLLABORATIVE COUNCIL

@ 2010 वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलेबोरेटिव काउन्सिंल, जनेवा, स्वीटजरलैण्ड

स्पष्ट किये जाने के अतिरिक्त समस्त छायाचित्र कमल कार के द्वारा

वाह्य पृष्ठ एवं पृष्ठ 09 छायाचित्र - सियरा लियोन में मल त्याग करने वाले क्षेत्रों का मानचित्रिकरण

पृष्ठ 07 : सूडान में वाइट नील स्टेट के गांव के समुदायिक सदस्यों द्वारा बड़े मानचित्रिकरण के द्वारा अपने घरों तथा मल त्याग के स्थानों को दिखाना।

पृष्ठ 16 : फीलिपिन्स में पूर्वी समर प्रान्त के ग्युआन नगरीय क्षेत्र की महिलाएं मलशब्द के उपयोग मात्र से मुहँ और नाक को ढक रही हैं। इनकी शरीर की भाषा से घृणा का भाव अपनेआप ट्रिगरिगं अभ्यास के दौरान निकलता हुआ। तीन से चार घण्टे के ट्रिगरिगं अभ्यास के दौरान सुगमकर्ता के लिये प्रत्येक समय महत्वपूर्ण है जब समुदाय को स्वयं के विश्लेषण के द्वारा अपने जीवन के वर्तमान स्थिति का आभास होता है।

पृष्ठ 43 : उत्तरी सूडान के वाइट नील स्टेट में महिलाओं द्वारा एक माह के भीतर खुले में शौच की प्रवृति को बन्द करने हेतु शपथ लिया जाना।

डिजाइन - एम एच डिजाइन/मारो हास

यह रिपोर्ट तथा अन्य प्रकाशन डब्लू. एस.एस.सी.सी. की वेबसाइट - www.wsscc.org पर उपलब्ध है।

स्थलीय अभ्यास प्रशिक्षण को सुगम बनाने हेतु

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये कार्यशालाएं

प्रशिक्षकों के उपयोगार्थ प्रशिक्षण मार्गनिर्देशिका

कमल कार

अप्रैल 2010

हिन्दी रुपान्तरण : विनोद मिश्र*

नवम्बर 2011

*विनोद कुमार मिश्र, उत्तराखण्ड प्रशासन अकादमी, नैनीताल में उपनिदेशक प्रशिक्षण के पद पर कार्यरत, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय , भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय की रिसोर्स सेन्टर (पेयजल एवं स्वच्छता) के समन्वयक एवं नोडल अधिकारी हैं। 2008 में अर्न्तराष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष के दौरान इन्होनें भारत सरकार के सहयोग से भारत के समस्त 612 जनपदों से दो चिन्हित प्रतिभागियों के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता (सी.एल.टी.एस.) पर लगभग 70 प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यशालाओं का सफलतापूर्वक संचालन किया। इसके अतिरिक्त भारत के विभिन्न राज्यों जैसे गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, हरियाणा एवं हिमांचल प्रदेश में सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण एवं सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण कार्यशालाओं का प्रबन्धन, संचालन एवं प्रशिक्षक के रुप में कार्य किया है।

(Email: vinodmishra2810@gmail.com)

CLTS Foundation
a better tomorrow

WATER SUPPLY & SANITATION COLLABORATIVE COUNCIL

विडियो फोटोग्राफर को शान्तिपूर्ण ढ़ग से ट्रिगरिगं की गतिविधि में बिना व्यवधान डाले हुए छायांकन करने हेतु निवेदन किया गया।

विषय-सूची

विषय-सूची - 05
आभार - 06
संक्षेपित शब्द एवं परिभाषाएं - 06
प्रस्तावना - 07
भाग 1 : परिचय - 09
1.यह मार्गनिर्देशिका क्यों? - 09
2.मार्गनिर्देशिका का उद्देश्य एवं उपयोगिता - 10
3.सी.एल.टी.एस. की शब्दावली से परिचय - 11

भाग 2 : प्रशिक्षण कार्यप्रणाली, तकनीक एवं प्रक्रिया - 16
4. प्रशिक्षण के लिये योजना एवं तैयारी - 16
4.1 प्रायोजक संस्थाएं - 16
4.2 कार्यशाला एवं गतिविधियों का समय - 16
4.3 प्रतिभागियों का चयन - 16
4.4 प्रतिभागियों एवं विशेषज्ञों को अग्रिम सूचना - 18
4.5 समुदाय/ग्रामों का चयन तथा तैयारी - 18
4.6 विडियो कैमरामैन का चयन एवं व्यवस्थाएं- 19
4.7 व्यवस्थाएं - 19
5. कार्यशाला संरचना - 19
5.1 प्रशिक्षकों की प्रारम्भिक बैठक - 20
5.2 अवधि एवं क्रम - 20
5.3 प्रशिक्षण की पूर्व संध्या - 20
6. कार्यशाला का प्रारम्भ - 21
6.1 उद्घाटन - 21
6.2 परिचय तथा प्रतिभागियों का घुलना मिलना - 22
6.3 अपेक्षाएं - 22
6.4 उद्देश्य - 22
7. सीखने एवं प्रशिक्षण की गतिविधियां एवं अभ्यास - 24
7.1 ''सी.एल.टी.एस. क्यों?'' अभ्यास - 24
7.2 व्यवहार एवं दृष्टिकोण हेतु रोल प्ले - 24
7.3 सी.एल.टी.एस. सुगम करने के आधार - 26
7.4 ट्रिगरिगं गतिविधयों का पूर्वाभ्यास - 27
7.5 चुनौतियों पर सत्र - 28
8. वास्तविक ट्रिगरिगं के लिये तैयारियां - 28
8.1 गांवों में ट्रिगरिगं समूहों का गठन - 28
8.2 ट्रिगरिगं समूहों की जिम्मेदारियॉं - 29
9. समुदाय का स्थल पर स्वयं के द्वारा किया गया कार्य - 30
9.1 प्रतिभागियों द्वारा क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की विडियोग्राफी तथा उसे प्रदर्शित किया जाना - 30
9.2 क्षेत्र में प्रशिक्षकों के लिये आवश्यक निर्देश - 31
9.3 शौचालय के लिये समुदाय द्वारा खोदे जा रहे गढढों की विडियोरिकार्डिगं - 33
10. प्रतिभागियों के अनुभवों की रिपोर्टिगं तथा इसे तैयार करना - 34
10.1 मीमांसा एवं समीक्षा - 35
10.2 कार्यशाला के अन्तिम दिन की गतिविधियों का संक्षिप्तीकरण - 36
11. समुदायों का प्रस्तुतीकरण एवं फीडबैक - 37
11.1 ट्रिगर हुए समुदाय के प्रस्तुतीकरण हेतु कुछ आवश्यक निर्देश - 37
11.2 रिर्पोट लेखन - 41
12. प्रतिभागियों की कार्ययोजना तथा उनका प्रस्तुतीकरण - 41
13. मूल्यांकन - 41
14. प्रबन्धकों एवं वित्तपोषकों की बैठक - 41
15. फॉलोअप - 41
15.1 अनौपचारिक मूल्यांकन - 41
15.2 ट्रिगरिगं के उपरान्त समुदाय में फॉलोअप को सुनिश्चित करना - 41
16. प्रतिभागियों के लिये सहयोग एवं परामर्श - 42
अन्त में - 42

भाग 3 : परिशिष्ट - 31
परिशिष्ट क : प्रशिक्षण कार्यशाला हेतु सामग्री एवं उपकरण - 43
परिशिष्ट ख : सीखने का अनुभवात्मक चक्र - 44
परिशिष्ट ग : प्रशिक्षण कक्ष के अभ्यास - 46
परिशिष्ट घ : समुदाय में सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिंग एवं उनके स्वयं के विश्लेषण को सुगम बनाने हेतु क्षेत्र में उपयोग में लाने हेतु सामग्री की चेकलिस्ट - 47
परिशिष्ट ड. : पहले दिन की ट्रिगरिगं के बाद सुगमकर्ता समूहों से पूछे जाने वाले प्रश्नों के कुछ उदाहरण - 48
परिशिष्ट च : सी.एल.टी.एस. के द्वारा ट्रिगर हुए गांवों के रिर्पोट हेतु मार्गदर्शिका - 49
परिशिष्ट छ : सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षण कार्यशालाएं कहॉं तक परम्परागत प्रशिक्षण कार्यक्रमों से भिन्न एवं विशेष हैं - 50
परिशिष्ट ज : ऐसे अर्न्तराष्ट्रीय प्रशिक्षकों के लिये ध्यान देने योग्य बातें, जो ऐसी भाषा में कार्यशाला आयोजित कर रहे हैं जिनमें उनकी धारा-प्रवाहिता नहीं है - 52
परिशिष्ट झ : सी.एल.टी.एस. रणनीति के लिये चैकलिस्ट - 53
परिशिष्ट ञ : सी.एल.टी.एस. के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी - 54

बॉक्स
बॉक्स 1 : जाम्बियां के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य - 23
बॉक्स 2 : श्रेष्ठ कार्य करने वाले समर्थक (चैम्पियन) की भूमिका - 38
बॉक्स 3 : हाथ धोना तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यवहार - 39

आभार

वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलेबोरेटिव काउन्सिंल, जनेवा, ने इस प्रशिक्षण मार्गनिर्देशिका को प्रकाशित करने में सहयोग दिया है। मैं श्री जॉन लेन अधिशासी निदेशक डब्लू.एस.एस.सी.सी. द्वारा दिये गये सहयोग, सहायता एवं प्रोत्साहन के लिये आभारी हूँ। मैं विशेष रुप से कोरालिन वान डॅर वूरडेन, कार्यक्रम अधिकारी, डब्लू.एस.एस.सी.सी., को ज्ञान प्रबंधन, नेटवर्किगं, निर्देशिका को अन्तिम स्वरुप देने हेतु दिये गये सम्पादकीय सुझावों एवं सहयोग के लिये धन्यवाद देता हूँ। ततैना फैदोतोवा तथा डब्लू.एस.एस.सी.सी. की संचार टीम को गुणवत्ता पूर्वक मार्गनिर्देशिका के खाका एवं छपाई कार्य को अन्तिम रुप दिये जाने के लिये धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

इस प्रशिक्षण मार्ग निर्देशिका को तैयार करने में प्रो0 राबर्ट चैम्बर्स, आई.डी.एस., ससैक्स, यू.के. का उनके सुझावों, सहयोग तथा प्रोत्साहन के लिये निष्ठापूर्वक अभारत व्यक्त करता हूँ। सी.एल.टी.एस. की सूचनाओं के संकलन तथा पाण्डुलिपि तैयार करने में पैट्रा बोगांर्टज के कार्यों के लिये धन्यवाद देता हूँ। (आईरिस एड, आयरलैण्ड के सहयोग से चलायी जा रही परियोजना ''अनुभवों को सांझा करना, अभ्यासों को सुधारना ; समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की क्षमता के अधिकतम उपयोग'' के अन्तर्गत इस मार्गनिर्देशिका को तैयार करने के लिये मेरे द्वारा दिये गये समय को आशिंक रुप से सहयोग प्रदान करने हेतु मैं आई.डी.एस. यू.के. का आभारी हूँ।)

मैं एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के सी.एल.टी.एस. के विभिन्न प्रशिक्षकों एवं सुगमकर्ताओं को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। उनकी जिज्ञासाओं, विचारों एवं सुगम करने के नये तौर तरीकों ने मुझे सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षकों का प्रशिक्षक माड्यूल एवं मार्गनिर्देशिका को विकसित करने में सहयोग दिया है।

कमल कार

शब्द संक्षेप एवं परिभाषाएं

सी.एल.टी.एस.	कम्यूनिटी लेड टोटल सैनिटेशन
सी.सी.	कम्यूनिटी कन्सलटैन्ट
आई.डी.एस.	इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, एट द यूनिर्वसिटी ऑफ ससैक्स, यू.के.
आई.एन.जी.ओ.	इन्टरनैशनल नान गर्वमैन्ट आर्गेनाइजेशन
एम. डी. जी.	मिलेनियम डैवलपमेंट गोल
एन. एल.	नैचुरल लीडर ; ऐसा व्यक्ति जो ओ.डी.एफ. गावों में नेतृत्व करता है, वह सी.एल. टी.एस ट्रिगरिगं के दौरान स्थानीय स्तर पर आगे निकल कर नेतृत्व करता है
एन.जी.ओ.	नॉन गवर्नमेन्ट ऑर्गेनाइजेशन
ओ.डी.	ओपन डैफीकेशन
ओ.डी.एफ	ओपन डैफीकेशन फ्री
पी.आर.ए.	पार्टिसिपेटरी रुलर अप्रेजल
डब्लू.एस.एस.सी.सी.	वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलेबोरेटिव काउन्सिल

प्रस्तावना

मैने प्राथमिक रुप से दिसम्बर, 1999 के बाद स्वयं अथवा सहयोगी प्रशिक्षकों के साथ 25 देशों में लगभग 100 से अधिक सी. एल.टी.एस. स्थलीय प्रशिक्षण (हैण्डस ऑन) कार्यशालाओं की रुपरेखा बनाने तथा सीधे क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर दिये गये स्थलीय प्रशिक्षणों के अनुभवों के आधार पर सी.एल. टी.एस. प्रशिक्षकों हेतु प्रशिक्षक मार्गनिर्देशिका विकसित की है। यह प्रशिक्षण सम्बन्धित देशों में आयोजित किया गया जैसे कि एशिया में बंग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इन्डोनेशिया, मंगोलिया, नेपाल, पाकिस्तान, चीन, फीलिपिन्स एवं लाओस ; मध्यपूर्व एशिया में यमन ; अफ्रीका में यूगाण्डा, जाम्बिया, इथोपिया, तंजानियां, केन्या, मलावी, मोजाम्बिक, सियरालिओन, माली, नाइजिरिया, लाइबेरिया, ईरिट्रीया, सूडान एवं चाड तथा दक्षिण अमेरिका में बोलविया। सही अर्थों में यह सूची और भी बड़ी है क्योंकि अधिकतर कार्यशालाएं क्षेत्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किये गये, जिनमें पड़ोसी देशों से अनुभवी प्रशिक्षक, सुगमकर्ता एवं उनकी सरकारों के वरिष्ठ नीतिनिर्धारक एवं निर्णयकारी अधिकारीगण, अर्न्तराष्ट्रीय संस्थायें, दानदाता संस्थानों के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया है। फ्रैंच भाषी पश्चिमी अफ्रीकी देशों में अधिकतर क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाएं फ्रैन्च भाषा में आयोजित की गयी हैं जिनमें घाना, सेनेगल, कांगों, मोरितेनिया, ग्यूनिया, बोरोकीना फासों तथा टागों के प्रशिक्षक, सुगमकर्ता एवं वरिष्ठ सरकारी नियोजकों ने प्रतिभाग किया है। मोजाम्बिक में पुर्तगाली भाषा में कार्यक्रम आयोजित किया गया है जिसमें अंगोला के स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनेक प्रशिक्षकों एवं पेशेवर कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया। इसी तरह बोल्विया में स्पैनिस भाषा में कार्यशाला का आयोजन किया गया है जिसमें पेरु, चिली, ब्राजील, पनामा, होन्डुरास एवं निकरागुवा के प्रशिक्षकों ने प्रतिभाग किया है। यमन एवं सूडान में अरबी भाषा में अनुवादक की सहायता से कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इस निर्देशिका में मैंने ऐसे प्रशिक्षकों/सुगमकर्ताओं के लिये भी ध्यान देने योग्य बातें बतायी हैं जो उन स्थानोंपर प्रशिक्षण देना चाहते हैं जहॉ की भाषा से वे परिचित नहीं हैं।

इस प्रशिक्षक मार्गनिर्देशिका का उपयोग करने वाला अपने तरीके से बेहतर उपयोग करने के लिये स्वतन्त्र है। जो विधियां बताई गयी हैं केवल वहीं सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षक के लिये अन्तिम विधियां नहीं है। प्रशिक्षकों को उनके अपनी निर्णय क्षमता के उपयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है तथा हर समय स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए सहभागिता एवं प्रतिबद्धता को नये एवं प्रभावी दृष्टिकोण से प्रशिक्षकों में विकसित किया जाता है जो अन्ततः समुदाय की सशक्तिकरण के स्तरों का निर्धारण करता है, तथा समुदाय को सम्पूर्ण स्वच्छता की तरफ और उसके आगे ले जाता है।

अन्त में मैं सावधान करना चाहता हूँ कि सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षक को दूसरों को प्रशिक्षित करने अथवा सी.एल. टी.एस. के सिद्धान्तों को किसी भी देश या संस्था में लागू करने हेतु दबाव बनाने से अलग रहना चाहिए। जब तक कि प्रशिक्षक पूरी तरह से संतुष्ट न हो जाये कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले पक्षकार की निष्ठापूर्वक इच्छा सी.एल.टी.एस. में है। सी.एल.

टी.एस स्वच्छता कार्यक्रमों हेतु अपनाये जा रहे विभिन्न दृष्टिकोणों में से एक है। सी.एल.टी.एस. का क्रियान्वयन किया गया हो अथवा किया जाना हो हमेशा मांग आधारित होता है। जैसे कि सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं अभ्यास के दौरान समुदाय से कभी भी शौचालय बनाने के लिये नहीं पूछा जाता और न ही खुले में शौच बन्द करने के लिये कहा जाता है। व्यवहार परिवर्तन का निर्णय हमेशा समुदाय के अन्दर से आता है उसी तरह स्वच्छता के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सम्बन्धित देशों की सरकार तथा संस्थाओं के अन्दर से सी.एल.टी.एस. के प्रति मांग आती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रशिक्षक पूरी दुनियां में सी.एल.टी. एस. एप्रोच को हर जगह बेचने के सिद्वान्त में विश्वास नहीं करता है। परिणामस्वरुप सी.एल.टी.एस. के प्रति सच्ची मांग निरन्तर बढ़ रही है। कृपया ध्यान रखिये कि ट्रिगरिगं के बाद फॉलोअप अथवा समुदाय की सहायता सी.एल.टी.एस. कार्यशाला में अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो स्थायी विकास या परिवर्तन लाती है। यदि आपके प्रशिक्षण कार्यशाला के दो-तीन महीने के भीतर खुले में शौच से विमुक्त गांवों की संख्या नहीं बढ़ती है तो इसे सफल नहीं माना जा सकता है। समुदाय मे तुरन्त एवं स्पष्ट स्वच्छता के प्रति सामूहिक व्यवहार परिर्वतन का आना सी.एल.टी.एस. के दृष्टिकोण की बड़ी ताकत है जो इसे अन्य परम्परागत प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अलग करती है।

मैं आशा करता हूँ कि पूरी दुनियां के सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षक इस मार्गनिर्देशिका को सी.एल.टी.एस. कार्यशालाओं की योजना बनाने तथा इन्हें क्रियान्वित करने में उपयोगी पायेगें तथा समुदाय को खुले में शौच से विमुक्त करने हेतु ट्रिगरिगं के बाद फॉलोअप गतिविधि तथा समुदाय की सहायता सुनिश्चित करेगें।

सी.एल.टी.एस. पर हस्तपुस्तिका की तरह यह मार्ग निर्देशिका को भी अन्य भाषाओं में अनुवादित किये जाने की छूट है। इसका उद्देश्य है कि इसका उपयोग पूरे विश्व में प्रशिक्षकों द्वारा तुरन्त किया जाये। पूरे विश्व में समस्त प्रशिक्षकों द्वारा इसे उपयोग में लाये जाने की प्रेरणा से अभिप्रेरित है। सी.एल.टी.एस. को समझने में मदद करने, क्षेत्र में सीधे अनुभव प्राप्त करने तथा पूर्णकालिक प्रशिक्षण के लिये निष्ठावान एवं अच्छे प्रशिक्षकों के द्वारा इसको असरदार बनाने हेतु यह न केवल प्रशिक्षकों के लिये अपितु उनके प्रबन्धकों के लिये भी उपयोगी है।

सी.एल.टी.एस जिस तरह विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से विकसित हो रहा है उससे हम सदैव सीख रहे है। प्रशिक्षण में हमेशा नवीनता और सुधार होगा फिर भी मुझे प्रमुख सिद्वान्तों एवं प्रथाओं के प्रति विश्वास है। हमेशा रचनात्मकता एवं विविधता की उम्मीद भी है। मैं इस मार्गनिर्देशिका के सुधार हेतु सुझावों का स्वागत करता हूँ।

कमल कार

अप्रैल 2010

भाग : 1
परिचय

1. यह मार्गनिर्देशिका क्यों?

सी.एल.टी.एस. बहुत से देशों के विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से फैल रहा है। प्रशिक्षण कार्य में अपना समय और क्षमता लगाने वाले सुगमकर्ताओं तथा सुगमकर्ताओं के लिये प्रशिक्षकों की बहुत कमी है।

यह इसलिये भी अधिक गम्भीर है क्योंकि समुदाय में सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं अन्य प्रकार के प्रशिक्षणों से भिन्न है। इसमें सम्प्रेषण एवं व्यवहार में विशेष शैली की आवश्यकता है। मैं यहां बल देना चाहूगां कि प्रशिक्षण प्रत्येक दशा में वास्तविक ट्रिगरिगं के साथ वास्तविक समय में स्थलीय हो जिससे अन्ततः समुदाय एवं गॉव खुले में शौच की आदतों से मुक्त हों। प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणों की उपलब्धियॉ इस बात में नहीं है कि कितनी संख्या में लोगों को प्रशिक्षण दिया गया अपितु इस बात में है कि प्रशिक्षु प्रशिक्षण के बाद स्वयं सुगमकर्ता के रुप में कितने प्रभावी हैं। केवल इसी प्रकार के सुगमकर्ता स्वयं गॉवों में ट्रिगरिगं की प्रक्रिया को सुगम बना सकते हैं तथा दूसरे को प्रशिक्षण भी दे सकते हैं। अच्छे स्थलीय अथवा हैण्डस ऑन प्रशिक्षण की पहचान यह है कि समुदाय में प्रज्जवलन का क्षण आया हो और समुदाय सामूहिक रुप से तत्काल कार्यवाही की हो। ट्रिगरिगं के बाद फॉलोअप तथा सहयोग की गतिविधि के साथ तेजी से खुले में शौच से मुक्त गॉवों की संख्या बढ़ती हो।

विकासशील देशों में ग्रामीण स्वच्छता की स्थितियों में सुधार के लिये सी.एल.टी.एस. पद्धति में बहुत बड़ी क्षमता है। मानवजीवन के स्तर में सुधार, सहस्राब्दी विकास के लक्ष्यों (एम.डी.जी.) की प्राप्ति हेतु बड़ी संख्या में अनुभवी एवं क्षमतावान प्रशिक्षकों की आवश्यकता है जो सुगमकर्ताओं एवं अन्य प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दे सकें अतः अच्छे प्रशिक्षकों की संख्या बढ़नी चाहिए तथा उनके प्रयासों को पर्याप्त सहयोग दिया जाना चाहिये।

कई स्थानों पर यह देखने में आया है कि प्रशिक्षण की मांग होने पर कई बार सैद्वान्तिक एवं चर्चा कक्ष आधारित अप्रभावी प्रशिक्षण दिया जाता है जिसका कोई

परिणाम नहीं आता। सही सिद्वान्तों, व्यवहार, दृष्टिकोण तथा उपयुक्त वातावरण के बिना सी.एल.टी.एस. के नाम से प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे सी.एल.टी.एस की पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं हो पाता है।

उपरोक्त चुनौतियों का सामना तथा उपयुक्त वातावरण के विस्तार हेतु प्रशिक्षकों की मार्गनिर्देशिका अत्यन्त आवश्यक है। मुझे उम्मीद है कि यह मार्गनिर्देशिका इन चुनौतियों का सामना करने में सहायक होगी। यह मार्गनिर्देशिका सी. एल.टी.एस. के पूर्व के प्रकाशनों (कृपया परिशिष्ट ञ देखें) तथा एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के 25 देशों में मेरे द्वारा 100 से भी अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अनुभव पर आधारित है। सुगमकताओं का प्रशिक्षक बनने से पहले स्वयं एक अच्छा सुगमकर्ता बनना पड़ता है। अतः इस मार्गनिर्देशिका में पहले अच्छे सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण पद्वतियों की व्याख्या की गयी है। इसके अतिरिक्त सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण को विशेष रुप से ध्यान में रखा गया है। इस प्रकार यह मार्गनिर्देशिका सुगमकर्ताओं तथा सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षकों दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

यदि सी.एल.टी.एस. को पूरी क्षमता एवं गुणवत्ता के साथ बड़े स्तर पर विस्तारित करना है तो अन्य प्रशिक्षकों तथा सुगमकर्ताओं का ध्यान रखना आवश्यक है। यह मार्गनिर्देशिका इनके लिये सहयोगी तथा निष्ठापूर्वक प्रशिक्षण तथा सी.एल.टी.एस. को व्यवहार में लाने में सहायक होगी। हम सभी के लिये यह खुशी की बात है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले अरबों लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो सकेगा।

इस निर्देशिका के तीन भाग हैं। भाग 1 (अध्याय 1 से 3) में सी.एल.टी.एस. की परिभाषा, क्षेत्र उद्देश्य एवं शब्दावली, भाग 2 (अध्याय 4 से 16) में प्रस्तावित प्रशिक्षण की पद्वतियॉ एवं प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन है एवं भाग 3 (परिशिष्ट क से ञ) में भाग 2 में दिये गयी व्याख्याओं के लिये अतिरिक्त अध्ययन सामग्री एवं संदर्भ दिये गये हैं।

2. मार्गनिर्देशिका का उद्देश्य एवं उपयोगिता

सी.एल.टी.एस. की हस्तपुस्तिका सी.एल.टी.एस. को सुगम बनाने हेतू मूलभूत बातों की व्याख्या करती है तथा यह पुस्तिका समुदाय के बीच कार्य करने वाले सुगमकर्ताओं के लिये एक आवश्यक एवं उपयोगी सामग्री है। यह मार्ग निर्देशिका मुख्य रुप से सी.एल.टी.एस. के सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षकों की आवश्यक्ताओं को एवं भविष्य के सी.एल.टी.एस प्रशिक्षकों जिन्हें सुगमकर्ता का अनुभव नहीं है, दोनों को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। यह निर्देशिका सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये भी उपयोग में लाया जा सकता है लेकिन इसके सभी भाग प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये उपयोगी नहीं हैं। ऐसी स्थिति में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षक को अपने सामान्य ज्ञान तथा अनुभव के साथ सीखने के अनुभवात्मक चक्र के उपयोग की आवश्यकता होगी।

सुगमकर्ताओं का प्रशिक्षक वह व्यक्ति है जो सीधे गॉव अथवा समुदाय के बीच सी.एल.टी.एस. की ट्रिगरिगं को सुगम कराने हेतु सुगमकर्ताओं को प्रशिक्षित करता है। यही सुगमकर्ता समुदाय में ट्रिगरिगं के बाद फॉलोअप अथवा सहयोग का कार्य करते हैं।

सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षकों का प्रशिक्षक वह व्यक्ति है जो कुशल सुगमकर्ता प्रशिक्षित करता है जो आगे चलकर सी.एल.टी.एस. का प्रशिक्षक बन जाता है। अन्य सहभागी पद्वतियों के प्रशिक्षक जो सी.एल.टी.एस. के सुगमकर्ता बन जाते हैं वह भी इसी श्रेणी में आते है। दूसरे शब्दों में सी.एल.टी.एस. का प्रशिक्षक होने से पहले उसे सी.एल.टी.एस. का सुगमकर्ता होना आवश्यक है। ऐसे लोग जिन्हें अभी तक सी.एल.टी.एस. को सुगम बनाने का अनुभव नहीं है वे लोग भी मार्गनिर्देशिका में दिये गये विवरण का पालन करते हुए सी.एल.टी.एस सुगमकर्ता के प्रशिक्षक बन सकते हैं तथापि जिन लोगों को पहले से सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ता का अनुभव है उन लोगों को मार्गनिर्देशिका में दिये गये समस्त चरणों से गुजरने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे लोगों के लिये प्रचलित प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्याप्त है।

सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षक को हर किसी को सी. एल.टी.एस. प्रशिक्षक बनाने पर जोर नहीं देना चाहिये जब तक कि वह व्यक्ति आवश्यक कुशलता प्राप्त करके किसी समुदाय में सी.एल.टी.एस. को सुगम बनाते हुए उसकी समस्त प्रक्रियाओं से गुजर कर सफलतापूर्वक कुछ गॉवों को खुले में शौच से मुक्त कराने का अनुभव न प्राप्त कर ले। यहॉ इस बात का जिक्र करना महत्वपूर्ण

होगा कि सी.एल.टी.एस. का अच्छा सुगमकर्ता वह है जो समुदाय में कम से कम आवश्यक टूल्स का उपयोग करते हुए उसे ट्रिगरिगं के स्तर तक पहुँचा देता है। वह अनावश्यक टूल्स का उपयोग नहीं करता है। जबकि सी. एल.टी.एस का प्रशिक्षक अपने प्रतिभागियों को सभी ट्रिगरिगं टूल्स की जानकारी देता है जो भविष्य में उपयोग में लाया जा सके। सी.एल.टी.एस ट्रिगरिगं समुदाय में एक वास्तविक एवं जीवन्त घटना है। प्रज्जवलन का क्षण आ जाने के उपरान्त अनावश्यक टूल्स का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। इन गूढ़ एवं चुनौतीपूर्ण स्थितियों के विषय में प्रशिक्षक को अपने प्रतिभागियों के समक्ष समस्त टूल्स की जानकारी देते समय बताया जाना आवश्यक है।

सी.एल.टी.एस. का सुगमकर्ता वह व्यक्ति है जो सीधे समुदाय में अथवा गॉव में सी.एल.टी.एस. की पद्वति के माध्यम से ट्रिगर करता है। सरकारी अथवा गैरसरकारी संगठनों में समुदाय के स्तर पर कार्य करने वाला कर्मचारी अथवा खुले में शौच से विमुक्त गॉव से निकलने वाला स्वाभाविक नेता (नेचुरल लीडर) कोई भी सी.एल.टी.एस. का सुगमकर्ता हो सकता है।

समुदाय सलाहकार वह व्यक्ति है जो सफल स्वाभाविक नेताओं (नेचुरल लीडर) के बीच से निकलता है। स्वाभाविक नेता खुले में शौच से विमुक्त गॉवों के अन्दर से निकलता है जो अपने गॉव को खुले में शौच से विमुक्त बनाने के बाद अन्य गतिविधियों में अपने को संलिप्त करता है अथवा पड़ोस के समुदाय अथवा गॉवों को परिवर्तित करने में लग जाता है। इन्हीं में से कुछ चयनित स्वाभाविक नेताओं को समुदाय सलाहकार के रुप में उपयोग में लाया जा सकता है जो सी.एल.टी.एस. को विस्तारित करते हैं। समुदाय संचालित स्वच्छता कार्यक्रम के अन्तर्गत आदर्श रुप में समुदाय संचालित प्रक्रिया का प्रसार होना चाहिये। दुनिया भर में बहुत से संगठन स्वाभाविक नेताओं को सामुदायिक सलाहकार के रुप में सी.एल.टी.एस. को विस्तारित करने हेतु उपयोग करते हैं।

स्वाभाविक नेताओं को सही ढ़ंग का कुशल सुगमकर्ता होने का प्रशिक्षण तथा कार्य करने का अवसर दिया जाये तो ये लोग सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं एवं फॉलोअप करते हुए अपने गॉव के बाहर दूसरे गॉवों को खुले में शौच से विमुक्त करा सकते हैं।

अतः प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण अथवा सुगमकर्ताओं के लिये प्रशिक्षण कार्यशालाओं हेतु प्रतिभागियों का चयन बहुत सावधानी पूर्वक करना चाहिये। कृपया यह देख लें कि प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त कौन प्रतिभागी किस श्रेणी का प्रशिक्षण किसे और कैसे दे सकता है।

दॉयी तरफ- गॉव के मुखिया के साथ स्वाभाविक नेता खड़े हैं तथा पास में तीन गॉव के मानचित्र लगे हैं। **बॉयी तरफ** - गुजरात के पोरबन्दर में महात्मा गॉधी के जन्म स्थान पर स्वाभाविक नेता अपने गॉव को खुले में शौच से विमुक्त करने हेतु शपथ लेते हुए।

3. सी.एल.टी.एस. की शब्दावली से परिचय

जैसा कि पहले ही बताया गया है कि सुगमकर्ताओं अथवा प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिये जाने से पहले मास्टर ट्रेनर को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सिद्वान्तों, मूल आधारों, आवश्यक कारणों, पद्वतियों एवं स्वीकार्यता के ज्ञान के अतिरिक्त समुदाय स्तर पर स्वयं के द्वारा सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं को वास्तविक रुप से संचालित किये जाने का अनुभव हो। अतः इस मार्गनिर्देशिका के

अध्ययन से पूर्व यह अपेक्षा की जाती है कि सी.एल.टी. एस. के सुगमकर्ता को सी.एल.टी.एस. की हस्तपुस्तिका का अच्छा ज्ञान होगा।

वैसे भी, सी.एल.टी.एस. में सामन्य रुप में प्रयोग में आने वाले शब्दों की व्याख्या संक्षेप में नीचे दी गयी है। मैं विशेष रुप से बल दूंगा कि इस मार्गनिर्देशिका को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की हस्तपुस्तिका के साथ संयुक्त रुप से प्रयोग में लाया जाना चाहिये।

सी.एल.टी.एस. पद्वति में उपयोग में आने वाले शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या नीचे दी गयी है विस्तार से जानने के लिये सी.एल.टी.एस. हस्तपुस्तिका के भाग 6 के अध्याय 4 को देखें। सी.एल.टी.एस. की हस्तपुस्तिका में दिये गये विभिन्न टूल्स संक्षेप में दिये जा रहे हैं।

''समुदाय के साथ सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं''

यह सी.एल.टी.एस. के विभिन्न टूल्स का उपयोग करते हुए सहभागी अभ्यासों के द्वारा सुगम बनाने की प्रक्रिया है। यहॉ समुदाय खुले में शौच की आदतों के बुरे प्रभाव को स्वयं महसूस करता है तथा स्वयं की स्वच्छता की वर्तमान स्थिति की रुपरेखा का सामूहिक विश्लेषण करके खुले में शौच की आदत को बन्द करने का सामूहिक निर्णय लेता है। इसे ट्रिगरिगं कहते हैं। ट्रिगरिगं का अभ्यास सामान्य रुप से व्यस्कों एवं बच्चों के साथ अलग-अलग किया जाता है एवं जहॉ कहीं आवश्यक हो महिलाओं के साथ भी पृथक रुप से किया जाता है।

''मल त्याग करने वाले स्थानों का सामुदायिक मानचित्रिकरण''

मल त्याग करने वाले स्थानों के मानचित्रिकरण के अभ्यास में स्थानीय समुदाय के लोग एक दूसरे के साथ मिलकर रंगीन पाउडर, चॉक, भूसे, राख तथा अन्य स्थानीय सामग्री के माध्यम से जमीन के बड़े हिस्से पर अपने गॉव की सीमा बनाते हुए मानचित्र बनाते है। जिसमें छोटे रंगीन कार्ड के द्वारा अपने घरो, स्कूल, मन्दिर, मस्जिद, चर्च, मुख्य मार्ग, जंगल एवं पेयजल के श्रोत इत्यादि को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त खुले में शौच करने के स्थानों को पीले रंग के पाउडर से दिखाते हैं तथा उन स्थानों पर मल त्याग करने वाले परिवारों को चिन्हित करते हैं। मानचित्र में यह स्पष्ट किया जाता है कि कौन व्यक्ति खुले में कहॉ पर शौच जाता है। विशेषकर महिलाओं, वयस्कों तथा बच्चों के मल त्याग के स्थानों को अलग-अलग दर्शाया जाता है। अलग-अलग मानचित्र में महिला, पुरुष एवं बच्चे रुचि लेकर अपने मल त्याग के स्थानों को दर्शाते हैं।

''मल की गणना''

यह गतिविधि सामान्य रुप से मल त्याग के मानचित्रिकरण के तुरन्त बाद किया जाता है। इस टूल में समुदाय के सदस्य आपस में विचार करके एक व्यक्ति के द्वारा प्रतिदिन औसत रुप से कितना मल त्याग किया जाता है, इस पर चर्चा करके परिवार के कुल सदस्यों में गुणा करके प्रति परिवार कुल त्याग करने वाले मल का वजन निकाला जाता है। उदाहरण के लिये यदि एक व्यक्ति एक दिन में 0.5 किलोग्राम मल त्याग करता है और परिवार में कुल पॉच सदस्य हैं तो उस परिवार के कार्ड पर एक दिन के लिये 2.5 किलोग्राम लिखा जाता है। इस प्रकार समस्त परिवारों के कार्ड पर किये गये गणना को एक बड़े कागज पर जोड़कर एक दिन में खुले में फैलाये गये मल की गणना की जाती है। इसके पश्चात एक सप्ताह में कुल मल त्याग, एक माह में कुल मल त्याग तथा एक वर्ष में कुल मल त्याग को एक फ्लिप चार्ट पर लिखकर पास की दीवार अथवा पेड़ पर लगा देते हैं। यह बच्चों और व्यस्कों के साथ अलग-अलग किया जाता है। यह अभ्यास समुदाय के उपस्थित सदस्यों में घृणा एवं शर्म का भाव पैदा करता है।

''प्रति परिवार पर आने वाले चिकित्सयी व्यय की गणना''

समुदाय इसकी गणना भी उसी प्रकार करता है जैसे मल की गणना। अभ्यास में प्रतिभाग कर रहे सदस्य खुले में शौच त्याग करने के कारणों से होने वाली आंत की बीमारियां, दस्त एवं हैजा जैसी बीमारियों पर किये जाने वाले व्यय का औसत निकालते हैं। यह व्यय एक परिवार से दूसरे परिवार के लिये अलग-अलग होता है फिर भी समुदाय के सदस्य प्रति परिवार प्रति माह एवं प्रति वर्ष होने वाले औसत व्यय पर सहमत होते हैं तथा उसे एक कार्ड पर लिखते हैं। इसके उपरान्त प्रति वर्ष इन बीमारियों के कारण पूरे गॉव का होने वाला खर्च निकालते हैं। 10 वर्ष के कुल व्यय की गणना भी की जाती है। इसे एक बड़े चार्ट पर लिखकर दीवार पर लगा दिया जाता है तथा

समुदाय के बीच खुले में फैलाये गये मल और उसके कारणों से होने वाली बीमारियों पर होने वाले व्यय पर तुलनात्मक चर्चा की जाती है। सामान्य प्रश्न पूछॉ जाता है कि क्या खुले में शौच की आदत उन्हें अमीर बनाती है या गरीब? यह गतिविधि सामान्य रुप से बच्चों के साथ नहीं की जाती है।

''मल त्याग के स्थानों का भ्रमण ''

इस अभ्यास के दौरान सामुदायिक मानचित्र के पास एकत्रित हुए समुदाय के सदस्यों से यह अनुरोध किया जाता है कि बाहर से आये लोगों को उन स्थानों पर ले कर जायें जहॉ पर सामान्य रुप से मल त्याग किया जाता है। व्यस्कों के एक या दो समूह गॉवों में खुले में शौच के स्थानों का भ्रमण कर सकते हैं। खुले मे शौच के स्थानों के भ्रमण के दौरान अनेक रुचिकर चर्चायें होती हैं। इस भ्रमण पर बच्चों और व्यस्कों को अलग-अलग ले जाया जाता है। इस अभ्यास विधि को अपनाये जाने का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि लोगों में घृणा, बीमारियों तथा मल के द्वारा पानी तथा भोजन को दूषित होने के डर से परिचय कराया जाता है।

''मल का मुहॅ तक पहॅुचने के रास्तों का रेखाचित्र''

इस अभ्यास को सामान्य रुप से खुले में शौच के स्थानों के मानचित्रिकरण अथवा खुले में शौच के स्थानों के भ्रमण के बाद किया जा सकता है। सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ता को अपने विवेक से परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेना पड़ता है। बड़े पैमाने पर प्रतिदिन मल त्याग करने तथा उसके गॉव के चारों तरफ खुले में प्रतिदिन फैलने पर समुदाय के सदस्यों से यह सवाल पूछा जाता है कि आखिरकार यह मल जाता कहॉ है? कुछ सदस्य कह सकते हैं कि वर्षा के दिनों में यह पानी में बह जाता है अथवा कुछ सदस्य यह स्वीकार कर सकते है कि मक्खियों, घरेलू जानवरों, साइकिल के टायर तथा जूतों में लगकर घरों में आ सकता हैं। समुदाय के लोगों द्वारा दिये गये उत्तरों को सुगमकर्ता को एक बड़े कार्ड पर लिखकर जमीन पर रखना चाहिये तथा मल के वापस समुदाय के बीच आने के रास्तों को जोड़ना चाहिये। यदि यह अभ्यास बच्चों के साथ किया जाता है तो बच्चे बड़ी रुचि के साथ मल से मुहॅ तक पहॅुचने के रास्तों का विश्लेषण करते हैं। इन कार्डो पर अकसर चित्र भी होते हैं जिन्हें बड़े चार्ट पेपर पर चिपकाकर बड़े समूह के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। यह अभ्यास समुदाय के भीतर घृणा के भाव को पैदा करता है। अकसर इस बिन्दु पर ट्रिगरिगं विधि अपने उत्कर्ष पर पहॅुच जाती है तथा लोग स्वीकार करते हैं कि **हम एक दूसरे का मल खा रहे हैं।**

''भोजन एवं मल''

सुगमकर्ता खुले मे शौच के स्थानों पर भ्रमण के दौरान कच्चा मल इकट्ठा करता है तथा भ्रमण के दौरान जहॉ पर लोग एकत्रित होते हैं उनके सामने रख देता है जिसके बगल में एक प्लेट में खाने की सामग्री भी रख दी जाती है। ताजा खाना तथा कच्चा मल मक्खियों को अपनी ओर आकृष्ट करता है तथा मक्खियॉ एक दूसरे पर आना-जाना शुरु कर देती हैं। समुदाय के लोग बहुत गौर से इसको देखते हैं तथा उनको मल का भोजन में आने की प्रक्रिया का आभास होने लगता है इस मौके पर कई बार महिलाएं घृणा से थूकती हैं अथवा उल्टी भी कर देती हैं। इससे अत्यधिक घृणा का भाव पैदा होता है जो आसानी से ट्रिगरिगं में सहायक होता है।

''जल एवं मल''

सुगमकर्ता द्वारा सीलबन्द बोतल का साफ पानी अथवा पड़ोस के घर से एक गिलास साफ पानी लेकर समुदाय के सदस्यों को पीने के लिये दिया जाता है। स्वाभाविक है कि उन्हें इस पानी को पीने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी। पानी पी लेने के बाद बोतल अथवा गिलास में बचे हुए पानी को वापस लेकर सुगमकर्ता अपने सिर से एक बाल निकालता है और वहॉ रखे हुए ताजा मल पर छुआ कर पानी में डुबोता है इसके बाद उस पानी को हिलाकर उसी व्यक्ति को पुनः पीने का अनुरोध करता है। यद्यपि वह पानी पहले की ही तरह साफ व ताजा दिखता है फिर भी वह व्यक्ति पीने से यहॉ तक कि छूने से भी मना कर देता है। इसके उपरान्त यह प्रश्न पूछा जाना चाहिये कि मक्खी के कितने पॉव होते हैं। मक्खी अपने पॉवों से इस बाल में लगे हुए मल से कितना अधिक मल लाकर खाने के प्लेट पर छोड़ती है? यह चर्चा समुदाय को धीरे-धीरे इस विश्वास की तरफ बढ़ा कर ले जाती है कि वह एक दूसरे का मल खा रहे हैं।

''ट्रिगरिगं के क्षण''

ट्रिगरिगं का क्षण वह क्षण है जब समुदाय स्वयं के विश्लेषण के द्वारा खुले में शौच की आदतों के खतरों के सम्बन्ध में सामूहिक रुप से स्वीकार करने लगती है और इस आदत को जारी रखने में शर्म महसूस करने लगती है। यहीं से समुदाय सामूहिक स्थानीय निर्णय लेकर खुले में शौच को तत्काल बन्द करने का निर्णय लेती है। ट्रिगरिगं के कुछ सामान्य लक्षण इस प्रकार से हो सकते है कि हम गरीब हैं और हम शौचालय नहीं बनवा सकते हैं क्या आप इसमें मेरी सहायता करेंगें? हम खुले में शौच की प्रवृति को तत्काल बन्द करना चाहते हैं और हम शौचालय के लिये तत्काल गढ्ढा खोदेगें।

"खुले में शौच से मुक्ति हेतु नियोजन"

ट्रिगरिगं के तुरन्त बाद समुदाय के कुछ लोग आगे आते हैं तथा उसी दिन अथवा अगले दिन गढ्ढा खोदने का निर्णय लेते हैं। गॉव के और लोग भी चर्चा में भाग लेते हैं और अलग-अलग विकल्पों की तरफ बढ़ते हैं। इस मौके पर सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ता सबसे पहले शुरु करने वाले को प्रोत्साहित करता है तथा उनके द्वारा खुले में शौच के विरुद्व किये जा रहे प्रयासों की प्रशंसा करता है। सुगमकर्ता समुदाय के अन्य सदस्यों से यह प्रश्न पूछता है कि गॉव का कोई और व्यक्ति शौचालय निर्माण के सम्बन्ध में तकनीक की जानकारी लेना चाहता है अथवा शौचालय निर्माण का कार्य प्रारम्भ करना चाहता है। बाहरी व्यक्ति समुदाय में खुले में शौच से मुक्त स्थिति को प्राप्त करने हेतु नियोजन करने की प्रक्रिया में सहयोग देता है। वह प्रति सप्ताह शौचालय निर्माण करने वाले परिवारों की सूची तैयार करता है तथा आवश्यकतानुसार स्वच्छता समितियों के गठन अथवा पूर्व में कार्यरत स्वच्छता समितियों को मजबूत करता है। स्वाभाविक नेताओं को पहचानता है तथा उन्हें अगले दिन कार्यशाला में अपनी भविष्य की रुपरेखा को प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित करता है। इसके अन्तर्गत खुले में शौच से विमुक्ति की अन्तिम तिथि की घोषणा भी सम्मिलित की जाती है।

"स्वाभाविक नेता "

ट्रिगरिगं की प्रक्रिया अथवा ट्रिगरिगं के बाद स्वयं की प्रेरणा से आगे आने वाला व्यक्ति स्वाभाविक नेता कहलाता है। स्वाभाविक नेता वह व्यक्ति होते हैं जो गांव की सफाई में मुख्य भूमिका निभाते हैं तथा उन्हें यह समझदारी आ जाती है कि कुछ शौचालयों के निर्माण के बजाय खुले में शौच की प्रवृति से मुक्त होना ज्यादा जरुरी है। स्वाभाविक नेता वह व्यक्ति होता है जो ट्रिगरिगं की पूरी प्रक्रिया से प्रोत्साहित होकर खुले में शौच की प्रवृति को बन्द करने हेतु सीधे कार्य करता है तथा समुदाय तथा पड़ोसियों को जोड़कर इसे आगे बढ़ाता है। स्वाभाविक नेता स्कूल जाने वाले छात्र या छात्राएं, नवयुवक या नवयुवती, बुजुर्ग व्यक्ति, धार्मिक पुजारी, पादरी, इमाम अथवा

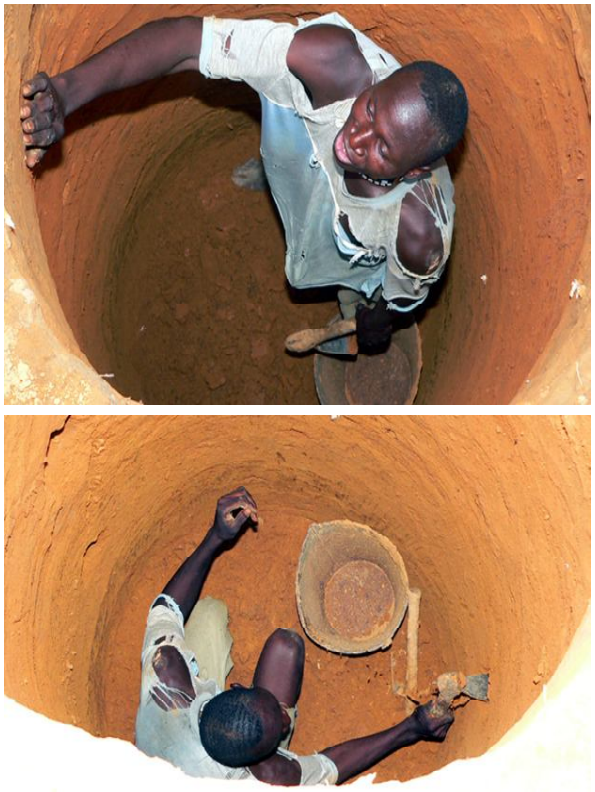

ट्रिगरिगं के 24 घण्टे के भीतर माली में कोलोकानी के पास के गॉव में समुदाय के लोगों ने 35 गढढे खोदे तथा शौचालय निर्माण प्रारम्भ किया।

औपचारिक या अनौपचारिक ढ़ग से गॉव में चुना हुआ व्यक्ति हो सकता है। सामान्यता स्वाभाविक नेता खुले में शौच की विमुक्ति का स्तर प्राप्त होने के बाद भी अपने प्रयासों को रोकते नहीं हैं अपितु सामान्य जन की अन्य आवश्यक्ताओं जैसे आजीविका, भोजन, शिक्षा, सुरक्षा अथवा प्राकृतिक आपदा के लिये प्रयास करते हैं।

"समुदाय का प्रस्तुतीकरण"

सामान्य रुप से समुदाय का प्रस्तुतीकरण सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षण कार्यशाला के अन्तिम दिन आयोजित होता है जब सी.एल.टी.एस. कार्यशाला के दौरान ट्रिगर हुए समुदाय के तीन या चार व्यक्ति मुख्य कार्यशाला स्तर पर अपने स्वच्छता विश्लेषण तथा भविष्य की कार्ययोजना

को प्रस्तुत करते हैं। गॉव के प्रस्तुतकर्ताओं को लाने के लिये वाहन तथा उनके दोपहर के भोजन इत्यादि की व्यवस्था की जाती है। सुगमकर्ता इन प्रस्तुतीकरण में ट्रिगरिगं की प्रक्रिया के द्वारा समुदाय के विश्लेषण करने तथा ट्रिगरिगं के बाद सहयोग की प्रक्रिया इत्यादि विषयों को सम्मिलित करते हुए प्रस्तुतीकरण तैयार करने में मदद करता हैं जिसमें खुले में शौच से विमुक्ति का स्तर प्राप्त करने की तिथि की घोषणा भी की जाती है। इस प्रस्तुतीकरण के समय सरकार के अधिकारियों, विभाग के पदाधिकारियों, स्वयं सेवी संस्थाओं तथा अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाओं के सदस्यों को प्रस्तुतीकरण सुनने हेतु आमंत्रित किया जाता है। समुदाय द्वारा बनायी गयी क्रियान्वयन की कार्ययोजना को प्रभावी बनाने हेतु बल दिया जाता है।

''सामुदायिक सलाहकार'

ट्रिगर हुए समुदाय जिस दौरान खुले में शौच से विमुक्ति के स्तर को प्राप्त करने हेतु अपने प्रयासों को क्रियान्वित करता है उस दौरान कुछ स्वाभाविक नेता अन्य लोगों से अधिक महत्व प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि उनमें पूरे समुदाय को सम्मिलित करके कार्य कराने की नेतृत्व क्षमता होती है। वह सामान्य रुप से स्थानीय लोगों को कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करके ठोस कूढ़े का प्रबन्धन, सामुदायिक शौचालयों की सफाई अथवा गलियों की सफाई जैसे कार्यों का नेतृत्व करता है। बाहरी सुगमकर्ता फोलोअप के दौरान ऐसे स्वाभाविक नेताओं पर नजर रखता है जो अन्य लोगों से अलग काम करते हैं तथा जो पास के गावों में ट्रिगरिगं करने हेतु कार्य करने के लिये सामुदायिक सलाहकार बन सकते हैं।

इस तरह के क्षमतावान एवं कुशल स्वाभाविक नेता जो दूसरें गावों अथवा दूसरे समुदायों के साथ कार्य करने को तैयार होते हैं उन्हें अतिरिक्त प्रशिक्षण तथा अन्य क्षेत्रों का भ्रमण कराकर सामुदायिक सलाहकार के रुप में तैयार किया जाता है जो भविष्य में व्यक्तिगत रुप से अथवा समूह में कार्य करते हैं। अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाओं, स्वयं सेवी संस्थाओं, विभिन्न सरकारी संगठनों द्वारा कुछ देशों में इस तरह के स्वाभाविक नेताओं को सामुदायिक सलाहकार के रुप में मानदेय का भुगतान करके उपयोग में लाया गया है। अकसर सामुदायिक सलाहकार खुले में शौच की आदत को समाप्त करने हेत समुदाय में बदलाव लाने हेतु महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। स्वाभाविक नेताओं को सामुदायिक सलाहकार के रुप में प्रयोग करके सी.एल.टी.एस. को तेजी से बड़े स्तर पर प्रभावी ढ़ंग से फैलाया जा सकता है।

''खुले में शौच की विमुक्ति की घोषणा तथा समारोह का आयोजन''

एक बार समुदाय खुले में शौच की आदत को पूर्ण रुप से बन्द कर देता है तथा इस आदत को लगातार कुछ माह तक बनाये रखता है और खुले में शौच की तरफ पुनः वापस नहीं आती है तब इसका बहुत कड़ाई से सत्यापन के पश्चात उसे खुले में शौच से विमुक्त गॉव के रुप में प्रमाणित कर दिया जाता है। सत्यापन तथा प्रमाणीकरण की प्रक्रिया में उस गॉव के लोगों, पड़ोसी खुले में शौच से विमुक्ति गॉव के स्वाभाविक नेता तथा ट्रिगरिगं एवं फोलोअप में लगी संस्थाएं संयुक्त रुप से भाग लेते हैं। उस गावॅ को खुले में शौच से विमुक्त घोषित करने के बाद समारोह का आयोजन किया जाता है। खुले में शौच से विमुक्त की घोषणा एक बड़े समारोह में की जाती है जिसमें आस-पास के गॉवों के प्रधानों, सरपंचों, व्यक्तियों तथा स्वच्छता से जुड़ी हुई संस्थाओं को आमंत्रित किया जाता है। इस पूरे समारोह को स्वाभाविक नेता संचालित करते हैं तथा अन्य उपस्थित समुदायों से अपील करते हैं कि उन्हें सहयोग चाहिए तो वे देने के लिये तैयार हैं। जहॉ तक सम्भव हो अखबारों तथा टेलीविजन समाचार चैनलों को भी इस समारोह में आमंत्रित किया जाना चाहिए।

भाग : 2

प्रशिक्षण की पद्धति, तकनीक एवं प्रक्रिया

4. प्रशिक्षण हेतु नियोजन एवं तैयारी

4.1 सहायक संस्थायें

यह हमेशा अच्छा है कि कोई एक संस्था प्रशिक्षण के लिये आर्थिक सहयोग देने हेतु आगे आये परन्तु कई समान विचार वाली संस्थाओं के प्रशिक्षण हेतु आर्थिक सहयोग के लिये सामूहिक सहयोग करना भी अच्छा विचार हो सकता है। सभी संस्थायें प्रशिक्षण हेतु प्रतिभागियों को एक ही कार्यक्रम में भेजती हैं तो इससे आपस में सहयोग की भावना विकसित होती है जो प्रशिक्षण के प्रभावों को बढ़ा देती है यह भविष्य में विभिन्न संस्थाओं के बीच क्रियान्वयन के स्तर पर आपसी तालमेल को भी बढ़ाती है जैसे कि प्रशिक्षकों का प्रशिक्षक आपस में मिलकर कार्य कर सकते हैं तथा स्वाभाविक नेताओं को एक दूसरे के यहॉ उपयोग में लाया जा सकता है।

4.2 कार्यशाला का समय तथा गतिविधियां

कार्यशाला का आयोजन समुदाय के उपयुक्त समय को देखकर तय किया जाना चाहिये। विशेष रुप से खेतों में बुआई व कटाई के समय को बचाना चाहिए तथा खाली समय में आयोजन किया जाना चाहिए। ट्रिगरिगं की प्रक्रिया कई दिनों की होनी चाहिये। बाजार तथा उत्सव के दिनों में कार्यशाला का आयोजन नहीं किया जाना चाहिए।

4.3 प्रतिभागियों का चयन

यह मार्गनिर्देशिका सी.एल.टी.एस. के सुगमकर्ताओं तथा प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण से सम्बन्धित है। प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण में सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण से कम प्रतिभागी रहते हैं।

निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिये तथा इसे लागू किया जाना चाहिये -

- युवा एवं उत्साही लोगों की संख्या अधिक हो
- अधिकतर लोगों को ग्रामीण प्रतिभागी मूल्यांकन (पी. आर.ए.) का अनुभव हो
- महिला और पुरुष प्रतिभागियों का सन्तुलन ठीक हो
- ज्यादातर प्रतिभागी समुदाय की स्थानीय भाषा ठीक से बोल पाते हों
- प्रशिक्षको के प्रशिक्षण में प्रशिक्षक को सीखने की अनुभवात्मक प्रक्रिया के प्रति खुला होना चाहिये न कि निर्धारित चर्चा

कक्ष आधारित पढ़ाने की प्रक्रिया में बंधकर कार्य करता हो।

- प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में 20 से 25 प्रतिभागी से अधिक न हों। यदि अनुभवी प्रशिक्षक हों तो प्रतिभागियों की संख्या बढ़ाई जा सकती हैं।

यदि सी.एल.टी.एस. को संस्था में स्थापित करने के लिये उच्चस्तरीय सहयोग की आवश्यक्ता हो तो जिस विभाग के प्रतिभागी प्रतिभाग कर रहे हैं वहॉ से एक या दो नीतिनिर्धारक अथवा मानवसंसाधन विकास से जुड़े हुए वरिष्ठ अधिकारियों को प्रतिभाग करना चाहिए। इसी तरह ग्राम्य विकास, शिक्षा, सामुदायिक विकास, स्वास्थ्य अथवा इंजीनियरिगं विभागों के वरिष्ठ तकनीकी प्रबन्धकों को प्रशिक्षण में बुलाया जाना चाहिए ताकि उनमें सी.एल.टी.एस. पद्धति के लिये सामान्य समझ विकसित हो सके। यहॉ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ऐसे लोग प्रशिक्षण में कम संख्या में प्रतिभाग करें।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि चयन करते समय सही व्यक्तियों का चयन हो जो भविष्य में सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षक बन सकें। प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों का चयन करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि हर व्यक्ति स्वभाविक रुप से प्रशिक्षक नहीं होता और न ही हर व्यक्ति आसानी से प्रशिक्षक और सुगमकर्ता के कौशल को सीख पाता है जैसा कि सी.एल.टी.एस. में अत्यन्त आवश्यक है। कुछ लोग स्वाभाविक रुप से सुगमकर्ता अथवा प्रशिक्षक के स्वभाव के होते हैं तथा बहुत जल्दी प्रशिक्षक के गुणों को स्वीकार कर लेते हैं इसलिये प्रतिभागियों के चयन में ज्यादा समय लगाया जाना चाहिये। भविष्य के सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ता अथवा प्रशिक्षक के चयन के समय निम्न प्रश्न पूछें। इसमें सकारात्मक उत्तर आवश्यक नहीं है लेकिन यह उनकी उपयुक्तता को अवश्य दर्शायेगा –

- क्या वह पूर्ण कालिक रुप से सी.एल.टी.एस.को समय दे पायेगा ?
- क्या इस बात का खतरा है कि भविष्य में इस व्यक्ति को पदोन्नति मिलने अथवा कार्य के पुर्ननिर्धारण के बाद वह व्यक्ति ऐसी जगह चला जायेगा जिसका सी.एल.टी.एस. से कोई सम्बन्ध न हो?
- क्या वह व्यक्ति स्वयं की रुचि से प्रशिक्षण में आना चाहता है अथवा मात्र प्रमाण पत्र के लालच से?
- क्या उसे प्रशिक्षण में बिना उसकी इच्छा के भेजा गया है?
- प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों के पास पॉच से दस साल का सहभागी प्रक्रिया के साथ समुदाय के बीच स्वयं कार्य करने का अनुभव है?
- प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों के पास क्या सफलतापूर्वक समुदाय के बीच स्थानीय लोगों की भागीदारी तथा स्थानीय लोगों के स्वप्रेरित कार्यो के द्वारा समुदाय के सशक्तिकरण का अनुभव है?
- क्या उनके पास ग्रामीण सहभागी मूल्यांकन तकनीक की जानकारी है और सहभागी प्रक्रिया के उपयोग की कुशलता, मानसिकता तथा व्यवहार का अनुभव है? ऐसा कई बार देखा गया है कि पी.आर.ए. की जानकारी के बिना भी कुछ लोग अच्छे सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ता बने हैं अतः यह अनिवार्य आवश्यक्ता नहीं हैं
- अधिक महत्वपूर्ण प्रतिभागी का लचीलापन, हँसमुख तथा मित्रवत् होना है। क्या उनके पास लोगों से मेलजोल बढ़ाने का प्राकृतिक गुण है? क्या वह लोगों से आसानी से घुलमिल जाता है? क्या ये लोग गाना, नाचना और आनन्द में रुचि रखते हैं?

यह ध्यान में रखना चाहिये कि नये व युवा कार्यकर्ता आसानी से सी.एल.टी.एस. के सुगमकर्ता अपने वरिष्ठ लोगों की अपेक्षा जल्दी बन जाते हैं। वरिष्ठ लोग स्वभावतः स्वच्छता के प्रति अपने पुराने विचारों विशेषकर अपने कार्यकाल के अन्तिम दौर में इसे बदलने को तैयार नहीं होते हैं। वैसे भी हमेशा की तरह कुछ लोग अपवाद इस प्रकरण में भी हो सकते हैं। बहुत से अर्न्तराष्ट्रीय व क्षेत्रीय कार्यशालाओं में मैं ऐसे वरिष्ठ प्रतिभागियों से मिला हूँ जिन्होंने कहा है कि मेरे पच्चीस से तीस वर्ष के स्वच्छता के क्षेत्र में पुराने विचार सी.एल.टी.एस. में प्रतिभाग करने से बदल गये और यह समझ बढ़ी है कि स्थानीय लोग अपनी स्वच्छता की आवश्यक्ताओं के अनुरुप निर्णय लेते हैं और अपने बारे में सही निर्णय भी ले सकते हैं।

4.4 प्रतिभागियों एवं विषय विशेषज्ञों प्रशिक्षकों को पूर्व सूचना देना

समस्त प्रतिभागियों एवं विषय विशेषज्ञ अतिथि वार्ताकारों को अग्रिम सूचनायें दी जानी चाहिये तथा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि उन्हें प्रशिक्षण शुरु होने के एक दिन पूर्व प्रशिक्षण स्थल पर पहुँच जाना चाहिये। उन्हें पहले ही यह बता देना चाहिये कि इस प्रशिक्षण में गतिविधियां समय में बधी हुई नहीं हैं तथा निर्धारित अवधि के पश्चात भी प्रशिक्षण चल सकता है। अगर यह लोग आस पास के रहने वाले हैं और प्रत्येक दिन घर लौटना चाहते हैं तो यह सम्भव नहीं होगा अतः उपयुक्त होगा कि सभी लोग प्रशिक्षण स्थल पर ही रुकें।

यदि सम्भव हो तो गॉव के स्थानीय नेता अथवा स्कूल के अध्यापकों को पहले दिन के कार्यशाला के भोजन के उपरान्त के सत्र में बुलाया जाना चाहिये जो कि कार्यशाला के प्रतिभागियों से मिल सकें तथा अगले दिन की रणनीति बना सकें।

सरकार तथा स्वयं सेवी संस्थाओं के वरिष्ठ लोगों को ट्रिगरिगं के दूसरे दिन की सायं जो सामान्य रुप से पॉच दिन की कार्यशाला में तीसरे दिन की शाम होती है, प्रतिभागियों से मिलने के लिये बुलाया जाना चाहिये जो सी.एल.टी.एस. की पूरी गति को महसूस कर सकें।

यदि सम्भव हो तो कुछ चुने हुए स्वाभाविक नेताओं को कार्यशाला स्तर पर बुलाया जाना चाहिये जो पहले से सी.एल.टी.एस. के सुगमकर्ता के रुप में पहचान रखते हों और दूसरों के लिये आर्दश बन गये हों। ये लोग अपने अनुभवों को प्रशिक्षण के दौरान सीधे व्यक्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण के अन्तिम दिन कुछ ऐसे स्वाभाविक नेताओं को बुलाया जा सकता है जो अपने समुदाय को पहले से ही खुले की शौच की आदतों से मुक्त करा चुके हों। ये लोग ट्रिगर हुए समुदाय की स्थितियों से परिचय करा सकते हैं।

4.5 समुदायों का चयन एवं तैयारी

प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को समूहों में इस प्रकार बॉटा जाता है ताकि वे समूह सीधे समुदाय में जाकर जीवन्त ट्रिगरिगं की प्रक्रिया को सम्पादित कर सकें। प्रत्येक प्रशिक्षण के प्रतिभागियों के लिये ट्रिगरिगं हेतु एक निश्चित संख्या में समुदायों अथवा गॉवों का चयन होना आवश्यक है। प्रतिभागियों को गॉवों में समूहों के रुप में भेजते समय सामान्य रुप से पॉच व छः व्यस्क व्यक्तियों तथा तीन से चार बच्चों का एक समूह बनाया जा सकता है। प्रत्येक समूह द्वारा कम से कम दो गॉव अथवा समुदायों में ट्रिगरिगं किया जाना चाहिये। गॉवों का चयन इस प्रकार होना चाहिये-

- कार्यशाला स्थल के करीब हो।
- खुले में शौच की प्रवृति जारी हो।
- अधिक से अधिक गॉवों में गन्दगी हो।
- सामान्य रुप से शौचालयों के निर्माण हेतु सरकारी अनुदान का वितरण न किया गया हो।
- गॉव बहुत बड़ा न हो। सामान्य रुप से 30 से 100 परिवारों का गॉव हो।
- लोकल संस्थायें फालोअप के लिये मौजूद हों।

फालोअप के लिये स्थानीय संस्थाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है जिसका सामान्य रुप से ध्यान नहीं दिया जाता है। प्रशिक्षण एक अच्छे व्यवहार का मॉडल बनना चाहिये तथा सी.एल.टी.एस. में बिना फालोअप के ट्रिगरिगं करना एक खराब आदत है और इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिये। फालोअप की व्यवस्था हेतु प्रशिक्षण से पूर्व ही सहमति प्राप्त की जानी चाहिये। जो संस्थायें फालोअप हेतु तैयार हों तथा अपनी सहमति दें उन्हें कार्यक्रम के अन्तिम दिन उपस्थित होना चाहिये। (नीचे देखें)

गॉवों के औपचारिक नेताओं को यह सूचना दिया जाना चाहिये कि बाहर के कुछ लोग आपके गॉव में स्वच्छता की वर्तमान स्थितियों को सीखने हेतु भ्रमण करेगें। गावों में जाने का समय और स्थान पर सहमति प्राप्त की जानी चाहिये। इस बात पर बल देना चाहिये कि गॉवों में सभी लोगों को सूचित किया जाये तथा आमंत्रित किया जाये। बाजार के दिन, छुट्टी के दिन, विवाह, उत्सव तथा त्यौहार के दिनों में जहॉ तक हो सके भ्रमण न किया जाये। ट्रिगरिगं के पूर्व की तैयारी में जुडे हुए कार्यक्रम के प्रबन्धकों को समुदाय के कुछ लोगों को कार्यशाला स्थल पर पहले दिन की समाप्ति के अवसर पर बुलाया जाना चाहिये जिससे कि प्रतिभागियों के समूहों से

उनकी मुलाकात हो सके तथा अगले दिवस गॉव में भ्रमण हेतु तैयारी की जा सके। इसके लिये कृपया 8.2 पर समुदाय के नेताओं के साथ अनौपचारिक बैठक को पढ़े।

4.6 विडियो कैमरामैन की व्यवस्था तथा उसका चयन

विडियो कैमरामैन की कई महत्वपूर्ण भूमिका है-

1 प्रतिभागियों का समुदाय के साथ ट्रिगरिगं के दौरान किये जा रहे व्यवहार और दृष्टिकोण का छायांकन करना जिसे बाद में उन्हें दिखाना।

2 समुदाय द्वारा ट्रिगरिगं के तुरन्त बाद फालोअप की गतिविधियों का छायांकन करना तथा पूरी कार्यशाला की गतिविधियों को अन्तिम दिन दिखाया जाना।

3 समुदाय के सदस्यों के अन्तिम दिन के प्रस्तुतिकरण का छायांकन करना जिसमें उनके द्वारा यह लक्ष्य घोषित किया जा रहा हो कि किस निर्धारित तिथि को अपने गॉव को खुले में शौच की प्रवृति से मुक्त करेगें तथा उस पर वरिष्ठ नीति निर्धारकों के विचारों को जानना।

कैमरा मैन के पास पर्याप्त समय की रिकार्डिगं हेतु बैटरी हो तथा सम्पादन हेतु आवश्यक तकनीक व मशीन उपलब्ध हो। उस कैमरामैन के पास बड़े स्क्रीन अथवा टीवी पर रिकार्डिगं को दिखाये जाने हेतु निर्धारित कार्ड का होना आवश्यक हो। वीडियोग्राफर को पहले से ही सभी बातों की जानकारी दी जानी आवश्यक है।

दाहिनी तरफ - समूहों के प्रस्तुतीकरण के बीच जगह की कमी तथा तेज धूप प्रस्तुतीकरण की गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित करते हुए **बॉयी तरफ** - सूडान में व्हाइट नील राज्य के एक गॉव में समुदाय का सदस्य एक बड़े मानचित्र पर अपने घर की स्थिति तथा खुले में शौच के स्थल को दर्शाते हुए।

4.7 व्यवस्थाएं

कार्यशाला स्थल

समय की बचत के लिये हमेशा कार्यशाला स्थल ट्रिगरिगं होने वाले स्थलों के समीप होना चाहिये। प्रशिक्षण स्थल एक बड़े हाल के रुप में हो जिसमें वीडियों अथवा स्लाइड दिखाने के लिये अंधेरा किया जाना सम्भव हो। कुर्सियां हल्की हों जिन्हें आसानी से हटाया जा सके। हॉल में फिक्स कुर्सी टेबल नहीं होनी चाहिये। सामान्य रुप से प्रतिभागियों को यू सेप में अथवा गोलाकार स्थिति में बैठाया जाना चाहिये। प्रतिभागियों के समक्ष कोई टेबल न रखा जाये। कुछ टेबल बड़े हाल की दीवार के साथ लगाकर रखा जा सकता है जिसे समूह चर्चा में उपयोग में लाया जा सके।

सुनिश्चित करने की कोशिश करें

- कार्यशाला से निकलने वाले चार्ट व पोस्टर को लगाने हेतु दीवार पर पर्याप्त जगह हो।
- 30-40 अतिरिक्त व्यक्तियों की बैठने की जगह हॉल में हो जिससे समुदाय के सदस्य अन्तिम दिन अपना प्रस्तुतीकरण हॉल में दे सकें।
- प्रशिक्षण कक्ष न तो बहुत गर्म हो न बहुत ठंडा। यदि गर्म हो तो वातानुकूलन की व्यवस्था हो (उदाहरण के लिये इस्लामाबाद में मुर्गी पालन केन्द्र पर बने हुए सेड के नीचे गर्मी और आर्द्रता के कारण प्रशिक्षण को रावलपिडिं के होटल में बदलना पड़ा। हिमांचल प्रदेश के कांगडा में ठंड के कारण प्रतिभागी सिकुडते नजर आये लेकिन जब 10 कोयले के चूल्हे लगा दिये गये तो हॉल में धुऍं के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था)

परिवहन

परिवहन हेतु पर्याप्त मात्रा में वाहनों की व्यवस्था की जानी चाहिये जिससे प्रत्येक समूह अलग-अलग समुदायों के बीच जा सके। कायदे से प्रशिक्षण के प्रथम दिवस सायं काल को गॉव के औपचारिक नेताओं को प्रशिक्षण स्थल पर लाने हेतु भी वाहनों की व्यवस्था की जानी चाहिये।

प्रवास एवं भोजन

प्रशिक्षण स्थल पर प्रतिभागियों के खाने व ठहरने की व्यवस्था की जानी चाहिये तथा प्रशिक्षण के अन्तिम दिन समुदाय के सदस्यों के द्वारा प्रस्तुतीकरण हेतु प्रतिभाग करने वालों की भी भोजन की व्यवस्था अलग से की जानी चाहिये।

प्रशिक्षण सामग्री एवं उपकरण (परिशिष्ट क देखें)

5. कार्यशाला की संरचना

5.1 प्रशिक्षकों की तैयारी बैठक

प्रशिक्षकों को एक दूसरे से आपस में सम्पर्क में रहना चाहिये तथा प्रशिक्षण से एक दिन पूर्व सभी प्रशिक्षकों को आपस में बैठक कर लेनी चाहिये।

5.2 अवधि एवं क्रम

प्रशिक्षण कार्यशाला का क्रम एवं उसकी अवधि अलग अलग हो सकती है। ट्रिगरिगं दो या तीन दिन अलग अलग समुदाय में हो सकती है। यह अनुभव एवं आत्मविश्वास की आवश्यक्ता को देखते हुए निर्धारित किया जा सकता है एक अच्छी प्रयोगात्मक प्रशिक्षण 5 दिन का होना चाहिये जिसमे दो या तीन दिन ट्रिगरिगं के लिये दिये जायें। यह हो सकता है -

प्रशिक्षण का पूर्व दिवस	▪ प्रतिभागियों का आगमन ▪ पूर्वसंध्या पर अनौपचारिक बैठक ▪ ठहरने, खाने तथा परिवहन आदि की व्यवस्थायें
दिवस 1	**कार्यशाला का प्रारम्भ** ▪ उद्घाटन (वैकल्पिक) ▪ परिचय, प्रशिक्षण के लिये नियमों का निर्धारण, अपेक्षायें (यदि पूर्व संध्या पर न की गयी हों) **सी.एल.टी.एस.क्यों?** ▪ व्यवहार एवं दृष्टिकोण परिर्वतन के लिये आवश्यक ▪ सी.एल.टी.एस. क्या है? अनुभवों का आदान प्रदान **प्रशिक्षण के अभ्यास एवं गतिविधियां** ▪ क्षेत्र भ्रमण हेतु समूहों का गठन ▪ समूहों का समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ बैठक ▪ गॉवों के भ्रमण हेतु रणनीति बनायें जाने हेतु कार्य
दिवस 2	▪ (पूर्वाहन) प्रशिक्षण अभ्यास एवं गतिविधियों का जारी रखना, समूहों पर पुर्नविचार, क्षेत्र भ्रमण हेतु बनायी गयी रणनीति का प्रस्तुतीकरण तथा सुधार ▪ (अपराहन) समूहों द्वारा अलग-अलग गॉवों में समुदाय के साथ जीवन्त ट्रिगरिगं
दिवस 3	**प्रतिक्रियाएं एवं समीक्षा** ▪ (पूर्वाहन) संक्षेप में प्रतिक्रियाएं एवं समीक्षा ▪ शीघ्रता से अनुभवों का आदान-प्रदान ▪ प्रशिक्षकों द्वारा वीडीयो फिल्मों को दिखाया जाना तथा उसका विशलेषण ▪ समूहों द्वारा समीक्षा तथा अपनी रणनीति में सुधार, प्रत्येक समूह द्वारा विस्तृत रुप से दिये गये विचारों के आधार पर परिवर्तन की आवश्यकता ▪ (अपराहन) समूहों द्वारा अलग-अलग गॉवों में समुदाय के साथ जीवन्त ट्रिगरिगं का दूसरा दिन
दिवस 4	**प्रतिक्रियाएं एवं समीक्षा** ▪ शीघ्रता से अनुभवों का आदान-प्रदान, द्वितीय तथा तृतीय दिवस के परिणामों पर चर्चा ▪ प्रतिक्रियाएं, पुर्नविचार तथा प्रशिक्षकों तथा सहायक प्रशिक्षकों द्वारा अभ्यास सत्रों का संचालन ▪ फालोअप तथा रिपोर्ट बनाना ▪ पॉचवें दिन के सम्बन्ध में विशेष निर्देश एवं सूचनाएं
दिवस 5	**समुदाय का फीडबैक तथा फालोअप के सम्बन्ध में नियोजन** ▪ समुदाय का फीडबैक ▪ संगठनों, विभागों, क्षेत्रों के आधार पर समूहों का गठन ▪ कार्ययोजना तथा वचनबद्धता को तैयार करना तथा उसका प्रस्तुतीकरण
प्रशिक्षणोपरान्त	▪ समुदाय तथा प्रशिक्षकों के साथ फालोअप

फिलीपीन्स के पूर्वी समर क्षेत्र में समूह चर्चा में प्रतिभाग करते हुए प्रशिक्षक/प्रतिभागी।

उपरोक्त विवरण केवल सुझावात्मक हैं, यह अत्यन्त व्यवहारिक पाये जाने के कारण समय एवं क्रम का निर्धारण हुआ है पहला दिन अत्यन्त व्यस्त एवं बड़ा होता है अतः प्रतिभागी कहते हैं कि दूसरे दिन ट्रिगरिगं के लिये जाना सम्भव नहीं है लेकिन बिना देर किये अपने हाथ से स्वयं कर के सीखने के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है।

प्रशिक्षण के दूसरे, तीसरे व चौथे दिन लगातार ट्रिगरिगं के लिये जाया जा सकता है और प्रशिक्षण पॉच दिन से अधिक का भी हो सकता है।

5.3 प्रशिक्षण की पूर्व संध्या

सभी प्रतिभागियों का प्रशिक्षण से एक दिन पूर्व प्रशिक्षण स्थल पर पहुॅचना सुनिश्चित कर लिया जाये जिससे कि देर से आने वाले प्रतिभागियों को पूर्व में दी गयी जानकारी को पुनः दिये जाने की समस्या से बचा जा सके। यह हमेशा अच्छा रहता है कि सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षण कार्यशाला की शुरुआत एक दिन पहले शाम को ही प्रारम्भ कर दी जाये इससे प्रथम दिवस के समय में काफी बचत हो सकती है। यह इस रुप में उपयोग में लाया जा सकता है कि -

- प्रशिक्षण के सम्बन्ध में मूलभूत जानकारी जैसे परिचय सत्र, प्रतिभागियों की अपेक्षाएं, कार्यशाला का उद्देश्य, कार्यशाला की समय सारणी, ठहरने के स्थल की आवश्यक जानकारियां, यात्रा इत्यादि की व्यवस्थाएं, आवास तथा भोजन की व्यवस्थाएं।

- कुछ ऐसे महिला अथवा पुरुष प्रतिभागियों की पहचान की जा सकती है जो तेजी से सीटी बजा सकें। 2 या 3 का चयन प्रतिभागियों की संख्या को देखते हुए किया जा सकता है तथा उनमें समय पर ध्यान दिलाने वाला मुख्य व्यक्ति तथा समय पर ध्यान दिलाने वाला उप मुख्य व्यक्ति इत्यादि की जिम्मेदारी दी जा सकती है। समय पर ध्यान दिलाने वाला व्यक्ति यह महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है कि वह सीटी बजाकर सभी को समय का ध्यान दिलाता है तथा सभी को सचेत रखता है।

- प्रत्येक प्रतिभागी को यह अवसर दिया जाना चाहिये विशेष रुप से उनके कार्यक्षेत्र एवं संगठनों के बारे में तथा सी.एल.टी.एस. की शब्दावली का सामान्य परिचय हो सके।

- प्रशिक्षकों को प्रतिभागियों को समझने का समय मिल जाता है तथा एक दूसरे के अनुभवों का आदान प्रदान करते हैं। जैसे व्यावसायिक पृष्ठभूमि, सोच, दृष्टि कोण तथा सुगमकर्ता कौशल इत्यादि के बारे में समझ सकते हैं। यह गॉव में ट्रिगरिगं हेतु जाने से पूर्व अत्यन्त सहायक होता है।

6. कार्यशाला का प्रारम्भ

6.1 उदघाटन

यदि औपचारिक रुप से उदघाटन किया जाना हो -

- किसे आमंत्रित किया जाना है यह निर्णय सावधानीपूर्वक होना चाहिये। सरकार के किसी वरिष्ठ अधिकारी अथवा अर्न्तराष्ट्रीय एन.जी.ओ. से जुडे हुए किसी व्यक्ति को बुलाया जाना चाहिये जो बाद में विस्तारित करने में कार्य कर सकें।

- उस व्यक्ति से पहले ही मिल लें और उसे बता दें -

  - अत्यन्त संक्षिप्त और विषय क्रेन्द्रित हो।
  - प्रशिक्षण के महत्व को स्पष्ट करें।
  - स्वयं के हाथ से करके सीखने के नये दृष्टिकोण के प्रति लोगों को उत्साहित करें।
  - सीखने के तनाव रहित, स्वस्थ एवं लचीले माहौल को बनायें यदि हंसी मजाक का पुट आये तो प्रशिक्षण में सहायक होगा।

6.2 परिचय तथा प्रतिभागियों का घुलना मिलना

(सामान्य रुप से यह कार्य प्रशिक्षण से एक दिन पूर्व शाम को अथवा प्रशिक्षण के प्रथम दिन के प्रातः किया जाये)

परिचय तथा प्रतिभागियों के घुलने मिलने के लिये 30 से 60 मिनट का समय दिया जाये इस प्रक्रिया को तेजी से तथा जीवन्त तरीके से किया जाये। उद्देश्य हो कि -

- प्रत्येक व्यक्ति को सभी से बातचीत करने का अवसर दिया जाये तथा आपस में घुलने मिलने दिया जाये।
- प्रशिक्षण हेतु तनाव मुक्त एवं सहज वातावरण बनाया जाये।

परिचय का तरीका सावधानीपूर्वक चयन किया जाये -

निम्न विकल्प -

- प्रतिभागियों से कहा जाये कि एक दूसरे से मिलें तथा उनके नाम, उनकी पारिवारिक स्थिति (वैवाहिक स्थिति, बच्चे इत्यादि), कार्यरत विभाग का नाम, कार्यानुभव की अवधि, रुचियां, पसन्दीदा रंग, पसन्दीदा फिल्मी कलाकार, पसन्दीदा भोजन, पसन्दीदा फुटबाल अथवा क्रिकेट की टीम से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछें।
- गृह जनपदों, व्यावसायिक पृष्ठभूमि, जूतों के रंग, स्कर्ट के रंग, शर्ट के रंग अथवा परिवार में बच्चों की संख्या के आधार पर छोटे समूह बनाकर परिचय की गतिविधि चलायी जा सकती है।

घुलने मिलने की प्रक्रिया संकोच को दूर करने तथा सी.एल.टी.एस. के प्रति भावना जागृत करने हेतु किया जाये -

- लोगों के सामने यह उदाहरण प्रस्तुत किया जाये तथा सभी को ''गुह'' शब्द के उपयोग के प्रति हिचक को कम किया जाये तथा मल के लिये अन्य भाषाओं में उपयोग में आने वाले शब्दों के सम्बन्ध में जानकारी ली जाये।
- सभी लोगों से यह हाथ खड़े करने का कहा जाये कि इनमें से कितने लोगों के पास खुले में शौच करने का अनुभव है। यहां तक कि जीवन में एक बार भी खुले में शौच करने का मौका मिला है। जिन लोगों ने हाथ खड़े नहीं किये उनके प्रति दया दिखाते हुए यह कहा जाये कि यह कितने बेचारे हैं कि जीवन के एक अदभुत अनुभव को इन लोगों ने नहीं प्राप्त किया है। इस दौरान काफी हंसी होती है।

यदि प्रतिभागी हंसी मजाक में तल्लीन हो गये हों तब भी परिचय तथा घुलने मिलने के सत्र को लम्बा न चलने दिया जाये क्योंकि प्रतिभागियों को मिलने तथा एक दूसरे को जानने के और भी अवसर प्राप्त होगें।

प्रतिभागियों के बीच सभी की राय लेते हुए प्रशिक्षण के दौरान व्यवहार तथा बातचीत के नियम निर्धारित किया जाना चाहिये जैसे प्रतिदिन कक्षा में कितने बजे आयेगें, शाम को कितने बजे तक कक्षा चलेगी, मोबाइल फोन को बन्द रखना, जब एक व्यक्ति बोल रहा हो तो दूसरा हस्तक्षेप न करे, समूह कार्यो के लिये समय अवधि निर्धारित करना, समय को ध्यान में रखकर याद दिलाने वाले की तैनाती करना जो सीटी का प्रयोग कर सकता है अथवा ताली बजाकर समय के प्रारम्भ होने तथा समाप्त होने का संकेत कर सकता है जिसका सभी प्रतिभागी अनुसरण करें।

मोजाम्बिक में प्रतिभागियों की अपेक्षाओं के कार्डो को वि-य के अनुरुप क्रम से लगाते हुए प्रशिक्षक।

6.3 अपेक्षाएं

प्रतिभागियों की अपेक्षाएं आपको यह बता सकती हैं कि उन्हें इस प्रशिक्षण से क्या उम्मीद है जिस आधार पर आप अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम को बना सकते हैं। प्रतिभागियों की अपेक्षाएं उनके दिमागी सोच तथा दृष्टिकोण को भी व्यक्त करती है तथा प्रशिक्षण के दौरान आने वाली चुनौतियों की जानकारी भी आपको मिल सकती है।

अपेक्षाएं जानने के कई तरीके हैं। एक पद्धित यह है कि चर्चा कक्ष के बीचों बीच छोटे कार्ड, स्कैच मार्कर रख दिया जाये तथा प्रतिभागियों से कहा जाये -

- आप अपनी अपेक्षाओं को बड़े शब्दों में लिखें एक अपेक्षा के लिये एक कार्ड का प्रयोग करें जैसे यदि आपको 10 अपेक्षाएं लिखनी हैं तो 10 कार्ड का प्रयोग किया जाना चाहिये।
- कार्ड हमेशा फर्श पर फेंक दें, प्रतिभागियों को स्वयं उठाने दें।
- इन कार्डो को मुख्य शीर्षकों के आधार पर वर्गीकरण करें, जैसे - पद्धति अथवा तरीके, सामुदायिक सलाह अथवा सहभागिता, अनुश्रवण इत्यादि। शीर्षकों के आधार पर वर्गीकरण के बाद शीर्षकों को अलग रंग के कार्ड पर लिखें तथा उस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले समस्त कार्डो की श्रेणी के ऊपर रखें।

इसके उपरान्त -

- प्रतिभागियों से स्वेच्छा से एक श्रेणी में आने वाले कार्ड को जोर से पढ़ने के लिये कहें इसे उपरान्त दूसरे श्रेणी में रखे गये कार्डो को दूसरे प्रतिभागी से पढ़वायें। यह ध्यान में रखा जाये कि समस्त प्रतिभागियों को प्रतिभाग करने का अवसर मिले विशेष रुप से महिलाएं, बच्चे, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ स्टाफ इत्यादि।
- इन कार्डो को वर्गीकृत श्रेणियों के आधार पर चर्चा कक्ष की दीवारों पर लगवा दें तथा इसे प्रशिक्षण के अन्त तक बनाये रखा जाये। प्रतिभागियों को यह भी छूट दी जाये कि वे चाहें तो नये कार्ड किसी भी समय जोड़ सकते है।
- प्रशिक्षण के दौरान इन कार्डो पर लिखी गयी अपेक्षाओं को जब भी प्रतिभागियों द्वारा संदेह पैदा किया जाये तो संदर्भ में ले आयें अथवा प्रतिभागियों की शंकाओं को दूर करने के लिये भी आप इन कार्डो का संदर्भ ले सकते हैं।

6.4 उद्देश्य

प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रशिक्षण आवश्यकताओं तथा प्रशिक्षण को आयोजित करने वाली संस्था से परामर्श के बाद पहले ही तय होना चाहिये। आप अथवा कोई अन्य व्यक्ति पहले ही तय कर सकता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य हमेशा लिखते समय यह ध्यान में रखा जाये कि प्रशिक्षण अवधि की समाप्ति पर प्रतिभागियों के द्वारा क्या प्राप्त किया जायेगा। बाक्स न.1 में जाम्बिया का एक उदाहरण दिया गया है -

बाक्स न0 1 : जाम्बियां के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य -

पॉच दिवसीय स्थलीय अभ्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों द्वारा -

1. समुदाय संचालित स्वच्छता के सिद्धान्तों, इसकी आवश्यकता, उत्पत्ति, विकास, पद्धति, जाम्बियां में इसकी स्वीकार्यता तथा फैलाव का ज्ञान एवं समझ प्राप्त किया जायेगा।
2. सी.एल.टी.एस. को सुगम करने हेतु कौशल का विकास तथा अपने कार्यक्षेत्र में सी.एल.टी.एस को ट्रिगर किया जा सकेगा।
3. सी.एल.टी.एस. के द्वारा ट्रिगर हुए समुदायों के उपयोगी स्वाभाविक नेताओं के नये अनुभव से परिचित होना तथा मोन्ज जिले में स्वच्छता के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं और जाम्बियां में कार्यरत राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्वयं सेवी संस्थाओं जैसे वाटर एड, आक्सफैम एवं प्लान इंटरनेशनल की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।
4. अपने से जुड़ी हुई संस्थाओं के द्वारा अगले छः महीने में सी.एल.टी.एस. को क्रियान्वित करने की कार्ययोजना को विकसित किया जा सकेगा।
5. जाम्बियां में सी.एल.टी.एस. के सुगमकर्ताओं, उपयोगकर्ताओं तथा संस्थाओं के आपसी अनौपचारिक सम्पर्क विकसित किया जा सकेगा।

जाम्बिया के चिसाम्बा में ट्रिगर हुए समुदाय की महिला प्रस्तुतीकरण देते हुए।

फ्लिप चार्ट पर उद्देश्यों को लगाना चाहिये तथा इसे पढ़ा जाना चाहिये और प्रतिभागियों से पूछा जाना चाहिये कि उन्हें यह समझ में आ रहा है या नहीं यदि कोई और स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो तो अवश्य दिया जाये।

उद्देश्यों को दीवार पर प्रशिक्षण की पूर्ण अवधि के दौरान लगाये रखना चाहिये क्योंकि प्रशिक्षण के अन्त में

यह उद्देश्य पूर्ण हुआ या नहीं इसकी चर्चा अवश्य की जानी चाहिये।

उद्देश्य के निर्धारण में 15 मिनट से अधिक का समय नहीं लगाना चाहिये।

प्रशिक्षक द्वारा प्रत्येक सत्र के लिये उद्देश्य का निर्धारण किया जाना चाहिये।

इस बात पर बल दिया जाना चाहिये कि यह ऐसा प्रशिक्षण नहीं है जिसके अन्त में प्रतिभागियों को सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ता का प्रमाण पत्र प्राप्त होगा अथवा यह ऐसा प्रशिक्षण नहीं है कि जो उनके प्रशिक्षणों की सूची में एक प्रशिक्षण के रुप में और जुड़ जायेगा। प्रतिभागी वास्तविक रुप से कार्यशाला में प्रतिभाग किये हैं इसका प्रमाण इस बात पर निर्भर करेगा कि वह भविष्य में समुदाय के बीच जाकर ट्रिगरिगं का कार्य कैसा करते हैं और उसका क्या परिणाम आता है।

यदि आप प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ सी.एल.टी.एस. के अनुभवी सुगमकर्ताओं के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं तो कृपया आप अपना पर्याप्त समय प्रशिक्षकों एवं सहप्रशिक्षकों के साथ अभ्यास सत्रों के लिये दीजिये। सीखने के अनुभाविक चक्र के सिद्वान्तों का उपयोग करें, व्याख्यान, रोल प्ले, केस स्टडी, सहयोगी प्रशिक्षण प्रणाली इत्यादि। प्रतिभागियों द्वारा गांवों में टीम प्रबन्धन तथा सुगम करने के तरीके का अध्ययन करते हुए समूहों का निर्माण कर सकते हैं तथा दिन के अन्त में प्रतिभागियों अथवा प्रशिक्षकों को स्टार, सहायक, शर्मीला, एकाकी और समस्या पैदा करने वाले के नाम दे सकते हैं। इस आधार पर अगले दिन की रणनीती इस प्रकार बनायी जानी चाहिये ताकि प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हो सके तथा समस्त प्रतिभागियों की सहभागिता बढ़े। बहुत ध्यानपूर्वक नजर रखने पर तथा प्रशिक्षण की रणनीति में सुधार करने से समस्या पैदा करने वाला प्रतिभागी भी स्टार प्रतिभागी बन सकता है। अनुभवी प्रशिक्षक यह तय करता है कि प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को देखते हुए किस प्रक्रिया को उपयोग में लाया जाये। व्याख्यान, केस स्टडी तथा प्रस्तुतीकरण मुख्य रुप से ज्ञान एवं सूचनाओं को देने में प्रभावी होते हैं। प्रशिक्षण के तरीके प्रमुख रुप से ज्ञान प्राप्ति पर आधारित हैं जबकि रोल प्ले, खेल, प्रर्दशन एवं क्षेत्रभ्रमण अध्ययन इत्यादि प्रमुख रुप से व्यवहार परिर्वतन, दृष्टिकोण एवं सोच परिर्वतन, मानसिकता को बदलने तथा कौशल प्राप्ति में प्रभावी रुप से कारगर है।

सीखने के अनुभाविक चक्र की विस्तृत जानकारी परिशिष्ट ख पर तथा चर्चा कक्ष में सुगम बनाने हेतु कुछ आवश्यक संकेत परिशिष्ट ग पर दिये गये हैं।

7. सीखने एवं प्रशिक्षण की गतिविधियां एवं अभ्यास

7.1 सी.एल.टी.एस. क्यों? अभ्यास

सी.एल.टी.एस. की आवश्यक्ता क्यों है इस चर्चा को आगे बढ़ाने के लिये प्रतिभागियों को प्रतिभगियों की संख्या के आधार पर तीन या चार समूहों में वर्गीकृत करना चाहिये तथा उनसे पूछा जाये -

- कि प्रतिभागी आपस में किसी ग्रामीण स्वच्छता के पुराने कार्यक्रम की चर्चा करें जो असफल हो गया हो अथवा अपेक्षित परिणाम नहीं आया हो। यह चर्चा मुख्य रुप से उसी प्रोजेक्ट की होनी चाहिये जो उस देश में सामान्य रुप से प्रचलित हो।
- असफलता के कारणों को लिखा जाना चाहिये तथा कक्षा में इसे सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिये। कभी-कभी कोई समूह असफलता के बहुत से कारणों को निकालता है इस स्थिति में उनसे मुख्य तीन या चार कारणों को लिखने को कहा जाये।
- किसी एक व्यक्ति को प्रस्तुतीकरण के समय संचालन एवं अध्यक्षता की जिम्मेदारी दी जाये।
- प्रत्येक प्रस्तुतीकरण के बाद चर्चा की जाये।
- प्रोजेक्ट की असफलता के प्रत्येक कारणों पर प्रत्येक प्रतिभागी का विचार लिया जाये।
- इन कारणों को पोस्टर में लिख करके दीवार पर लगा दिया जाये जो सम्पूर्ण कार्यशाला अवधि में दीवार पर लगा रहेगा। प्रतिभागियों में से स्वेच्छा से किसी व्यक्ति को इन पोस्टरों को इकट्ठा करने तथा विभिन्न कारणों को संक्षिप्त करते हुए तीन या चार कारणों को क्रम में लगाने हेतु कहा जाये। कार्यशाला के दौरान इन कारणों को बार बार सन्दर्भ में लाया जाये।

- इस समय आपको अत्यन्त सजग रहने की जरुरत है क्योंकि इसी समय कार्यशाला में यह पता चलता है कि कौन सा प्रतिभागी अपने विचारों को दूसरे प्रतिभागियों पर थोपता है। इसी समय यह बता देना अच्छा रहेगा कि सी. एल.टी.एस का प्रशिक्षण सीखने के नये अनुभवों के लिये हमेशा खुला रहता है।

- जब कभी चुनौतीपूर्ण प्रश्न खड़े हों तो हमेशा समूहों को जबाब देने के लिये प्रेरित करें अथवा समुदाय के सदस्यों से पूछने की सलाह दे सकते हैं।

- पढ़ाने और सीखने के बीच के अन्तर पर बल दें।

सी.एल.टी.एस. की व्याख्या

व्याख्यानों के संयोजन, विडियो फिल्म, स्लाइड एवं समूह अभ्यासों के फैलाव का प्रयोग करें। (व्याख्यान भाषण का छोटा रुप है। भाषण सामान्य रुप से पढ़ाने के काम में आता है जबकि व्याख्यान प्रशिक्षण में प्रयोग में लाया जाता है जिसमें सीखने के आनुभविक सिद्वान्तों पर बल दिया जाता है। व्याख्यान सामान्य रुप से 15 से 20 मिनट का होता है जिसमें बहुत से चित्र,वीडियो एवं अकसर प्रतिभागियों के अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है क्योंकि इसका प्रयोग व्यस्क लोगों के बीच होता है। प्रशिक्षण के दौरान लम्बे भाषण का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि ध्यान क्रेन्द्रित करने की क्षमता 20 मिनट तक ही रहती है।)

7.2 व्यवहार एवं दृष्टिकोण हेतु रोल प्ले

बाहरी प्रतिभागियों के व्यवहार एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन सी.एल.टी.एस. को सफलतापूर्वक सुगम बनाने के लिये आवश्यक है।

रोल प्ले प्रतिभागियों के स्वयं के तथा दूसरों के व्यवहार एवं दृष्टिकोण के प्रति जागरुक करता है जो प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण भाग है। इसके अन्तर्गत निम्न गतिविधियाँ सम्मिलित हो सकती हैं -

- **संवादहीन शरीर के संकेत-** समस्त प्रतिभागियों को चार या पॉच समूहों में विभाजित करके उन्हें पॉच से दस मिनट में संवादहीन शरीर के संकेतों के माध्यम से ''शीर्ष से नीचे की तरफ के आदेश'', ''हावी होने वाले'', ''मित्रता पूर्वक'' एवं ''सहभागी'' विषयों पर रोल प्ले की तैयारी करने दिया जाये। समूहों को समुदाय के सदस्यों एवं बाहरी व्यक्तियों की भूमिका करने दिया जाये। जब एक समूह रोल प्ले कर रहा हो तो अन्य ग्रुप उस समूह द्वारा किये जा रहे रोल प्ले में शरीर की भाषा तथा शरीर के संकेतों को नोट करे। प्रत्येक रोल प्ले के बाद अन्य समूहों से प्रश्न पूछकर उनके द्वारा प्राप्त हो रही शिक्षा को स्पष्ट किया जाये तथा प्रतिभागियों में से किसी व्यक्ति को फ्लिप चार्ट पर लिखवाया जाये। जिससे क्या करें अथवा क्या न करें? निकलता है। शरीर की भाषा को नोट करने वाले लोगों को बार-बार बाहरी लोगों के व्यवहार को याद दिलाया जाये।

- **सी.एल.टी.एस. को सुगम बनाना** - व्यवहार एवं दृष्टिकोण का गॉव के अन्दर गलतियों के साथ प्रदर्शन करने हेतु दो समूह बनायें जिसमें एक समूह में दो या तीन अनुभवी प्रशिक्षकों को रखें जो सुगमकर्ता की भूमिका में रहें तथा दूसरे समूह में 5 या 6 प्रतिभागियों को रखें जिसमें महिलायें भी सम्मिलित करें। दूसरा समूह समुदाय की भूमिका करे। अन्य प्रतिभागी इस रोल प्ले को ध्यानपूर्वक देखें। यह स्पष्ट कर दिया जाये कि रोल प्ले के समय सुगमकर्ताओं को, और उनके द्वारा किये जा रहे व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखें (विशेष रुप से शरीर की भाषा एवं आखों के सम्पर्क)। रोल प्ले के उपरान्त इसकी विस्तृत चर्चा की जाये। दोनों समूहों को पृथक से समझाया जाये। इनसे सी.एल.टी.एस. के ट्रिगरिगं अभ्यास के रोल प्ले को किये जाने की अपेक्षा है। इनके द्वारा की जा रही गलतियों, चूकों, पुष्टीकरण तथा सी.एल.टी.एस. को समुदाय में प्रवेश से रोकने वाले द्वारपालों अथवा सी.एल. टी.एस. की ट्रिगरिगं से अपने आप को बचाने हेतु सुरक्षा कवच बनाने वालों के सम्बन्ध में नीचे दिया गया है।

हमारी गलतियॉ -

- जब समुदाय के द्वारा सामुदायिक मानचित्रीकरण किया जा रहा हो उस समय एक सुगमकर्ता मानचित्र के ऊपर टहलते हुए प्रवेश करे तथा समुदाय के कार्यो में हस्तक्षेप करे। दूसरा सुगमकर्ता उसको खीचकर मानचित्र से बाहर ले आये।

- जब एक सुगमकर्ता समुदाय को अपने घरों को दिखाने के लिये तथा मल की गणना के लिये अपने हाथ से कार्ड दे। दूसरा सुगमकर्ता पहले सुगमकर्ता के हाथ से कार्ड

छीनकर मानचित्र के बीच में रखे और समुदाय से कहे कि वह कार्ड स्वयं उठायें।

- यही बात रंगीन मार्कर अथवा सफेद या पीले पाउडर को देने में किया जाये।
- जब एक सुगमकर्ता समुदाय के द्वारा बताने पर मल की गणना को जोड़ने लगे तथा उसे दिन महीने एवं वर्ष में विभाजित करे। उस समय दूसरा सुगमकर्ता उसके हाथ से कागज छीनकर समुदाय को दे दे और उनसे गणना करने को कहे।
- जब एक सुगमकर्ता लोगों के नाम कार्ड पर लिख रहा हो तो उसके हाथ से कलम को छीनकर समुदाय को दे दिया जाये।
- एक सुगमकर्ता भाषण देना अथवा आलोचना करना शुरु कर दे तो दूसरा सुगमकर्ता उसे कन्धे पर हाथ रखे और दोनों हॅस दें।

हमारी चूॅक -

- जब कोई महिला धीरे से बोले कि हम एक दूसरे का मल खा रहे हैं उस समय सुगमकर्ता अनदेखा कर दे। दूसरा सुगमकर्ता दौड़कर उस महिला के पास जाये और कहे कि तुम जोर से बोलो और समुदाय के अन्य लोगों से पूछे कि क्या आप लोग इससे सहमत हैं।
- एक व्यक्ति कहता है कि मैं तुरन्त गढ्ढा खोदना शुरु करने जा रहा हूॅ, सुगमकर्ता इस पर ध्यान न दे। दूसरा सुगमकर्ता उस व्यक्ति के पास जाये और कहे कि जो आपने अभी कहा है उसे पुनः दोहराइये तथा अन्य लोगों को इस व्यक्ति की तारीफ करने के लिये ताली बजाने को कहे।
- एक व्यक्ति कहता कि वह अत्यन्त गरीब है तथा बिना बाहरी सहायता के वह कुछ नहीं कर सकता। उस समय सुगमकर्ता दूसरों से पूछे कि क्या आप लोग जब तक बाहरी सहायता नहीं मिलती तब तक मल खाने को तैयार है।

हमारा पुष्टीकरण -

- प्रत्येक अभ्यास के बाद सुगमकर्ता के द्वारा जो कुछ हुआ है या सीखा गया है उसका संक्षिप्तिकरण किया जाये।
- मानचित्रीकरण के बाद सुगमकर्ता को स्पष्ट करना चाहिये कि मानचित्र में क्या दिख रहा है तथा मानव मल चारों तरफ फैला हुआ है।
- मल की गणना के उपरान्त सुगमकर्ता को यह बल देना चाहिये कि कितना मल प्रतिदिन पैदा हो रहा है और खुले में फैल रहा है।
- बीमारियों पर किये जा रहे व्यय की गणना के उपरान्त सुगमकर्ता को स्पष्ट करना चाहिये कि समुदाय के द्वारा कितना व्यय किया जा रहा है।
- मल का मुॅह तक पहुॅचने के रास्ते स्पष्ट हो जाने के बाद सुगमकर्ता को स्पष्ट किया जाना चाहिये कि लोग कैसे एक दूसरे का मल खा रहे हैं इत्यादि।
- सुगमकर्ता को लगातार यह कहना चाहिये कि आप हमें गलत न समझें हम आपको शौचालय बनवाने अथवा खुले में शौच करने से रोकने के लिये नहीं कह रहे हैं हम तो आपके बीच सीखने के लिये आये है।
- **सी.एल.टी.एस. को समुदाय में प्रवेश से रोकने वाले द्वारपालों अथवा सी.एल.टी.एस. की ट्रिगरिगं से अपने आप को बचाने हेतु सुरक्षा कवच बनाने वालों से कैसे निपटें?**
- जब कोई समुदाय का व्यक्ति मानचित्रीकरण पर हस्तक्षेप करता है अथवा विरोध दर्ज कराता है तो सुगमकर्ता को उसके पास जाना चाहिये और उससे मित्रता पूर्वक बातचीत करते हुए मानचित्र के बाहर ले जाना चाहिये।
- रोल प्ले के माध्यम से मुख्य सुगमकर्ता, सहायक सुगमकर्ता वातावरण बनाने वाले तथा रिपोर्ट लिखने वाले की भूमिका तथा उनका आपस में टीम वर्क का प्रदर्शन किया जाये। ट्रिगरिगं समूह की जिम्मेदारियां विस्तार से 8.2 पर देखें।

7.3 सी.एल.टी.एस. सुगम करने के आधार

सी.एल.टी.एस. को सुगम कराना पी.आर.ए. की भांति नहीं है। सी.एल.टी.एस. का सुगमकर्ता समुदाय के भीतर अपने को सीखने वाला बताने पर बल देता है। जैसे कि वह आपके स्वच्छता के व्यवहार को जानना अथवा समझना चाहता है। सुगमकर्ता समुदाय को कुछ भी बताने अथवा पढ़ाने के उद्देश्य से नहीं जाता है बल्कि सीखने वाला छात्र बनकर समुदाय के पास सीखना

चाहता है। इसके साथ ही ट्रिगरिगं की प्रक्रिया को समुदाय के बीच निर्धारित क्रम में इस तरह करता है कि समुदाय अपनी स्वच्छता की स्थिति को स्वयं आभास करने लगता है। जिसके माध्यम से समुदाय स्वच्छता की अपनी वर्तमान स्थिति से होने वाले दुष्परिणामों का विश्लेषण करता है।

सुगमकर्ता को इस बात पर लगातार ध्यान रखना चाहिये कि जब कोई व्यक्ति वर्तमान स्वच्छता की आदतों की आलोचना करता है। इस स्थिति में सुगमकर्ता इस आलोचना पर बल देते हुए लोगों से पूछता है कि आप लोगों में से कितने लोग इनकी बातों से सहमत हैं?

क्या करें क्या न करें इसके लिये परिशिष्ट 'ग' देखें।

7.4 ट्रिगरिगं गतिविधियों का पूर्वाभ्यास

समूहों से ट्रिगरिगं गतिविधियों का पूर्वाभ्यास करने के लिये कहा जाये (सी.एल.टी.एस. हस्तपुस्तिका के सम्बन्धित पेज का नम्बर दिया गया है।)

ऊपर - बोल्विया के कोचाबम्बा के पास के गॉव में ट्रिगरिगं के उपरान्त स्वाभाविक नेता तथा सामुदायिक इन्जीनियर द्वारा पूरी प्रक्रिया को अपने नियंत्रण में लेकर अपने स्वयं के शौचालय का खाका तैयार करते हुए। **नीचे** - बोल्विया में कोचाबम्बा के पास के गॉव में समुदाय द्वारा बिना किसी बाहरी सुगमकर्ता के प्रक्रिया को चलाते हुए।

ट्रिगरिगं

- **प्रारम्भ करें** - समुदाय के साथ मेल जोल स्थापित करना, परिचय, भ्रमण के उद्देश्यों को बताना, गॉव का एक चक्कर लगाना तथा लोगों को बैठक के स्थल तथा बैठक के सम्बन्ध में जानकारी देना। स्थानीय परम्पराओं के अनुसार लोगों को बुलाया जा सकता है।

- **मानचित्रीकरण** (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 31) - मानचित्रीकरण निश्चित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कराया जाये। यह कार्य तेजी से हॅसी मजाक के साथ पूर्ण किया जाये। मानचित्र में कार्ड, रंग,चाक या खड़िया तथा संकेतों का प्रयोग करते हुए जमीन पर बनाया जाये। स्वास्थ्य से सम्बन्धित जानकारी तथा दस्त होने पर उपयोग में आने वाले स्थानों विशेषकर मलत्याग के स्थलों को स्पष्ट दर्शाया जाये। विशेषकर झोलाछाप डाक्टरों के निवास स्थान तथा बीमारियों पर होने वाले खर्चे इत्यादि को दर्शाया जाये।

- **मलत्याग के स्थलों का भ्रमण** (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 27 से 29) - भ्रमण के समय समुदाय से प्रश्न पूछें।

- **मल तथा बीमारियों पर होने वाले खर्चो की गणना** (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 33)

- **ग्लास का पानी तथा मल** (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 34 व 35)

- **मल और भोजन** (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 34 - 36)

- **मल का मुहॅ तक पहुॅचने के रास्ते तथा संक्रमण-** खुले में मल से खुले मुॅह तक (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 34)

ट्रिगर होने के बाद की गतिविधि

प्रज्जवलन के क्षणों की चर्चा विस्तार से प्रशिक्षण कक्ष में करें। वास्तविक ट्रिगरिगं के लिये गॉव में जाने से पूर्व प्रतिभागियों से प्रज्जवलन के क्षणों की चर्चा की जाये। यदि ऊपर की गतिविधियों के उपरान्त प्रज्जवलन होता है तो प्रतिभागियों को अगले चरण के लिये बढ़ना चाहिये।

- यह पूछा जाये कि कौन लोग खुले में शौच को तत्काल बन्द करना चाहते हैं, हाथ उठायें।

- यदि शौचालय की कीमत अधिक लग रही हो तो यह पूछा जाये कि कौन लोग अन्य समुदायो द्वारा सस्ते

शौचालय बनाने की विधि को जानने को इच्छुक हैं। (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 37)

- जब सभी सहमत हों तथा सस्ते शौचालय की विधि जानने की बात करें तो काले स्कैच पैन से बड़े कागज पर सस्ते शौचालय का मानचित्रीकरण करें।
- गॉव वालों को मार्कर दिया जाये ताकि वह अपनी इच्छा से अपना चित्र बना सकें।
- यह पूछा जाये कि कौन लोग तत्काल कार्य करने को तैंयार हैं उनके नाम भी लिखे जायें।
- सम्भावित स्वाभाविक नेताओं की पहचान की जाये तथा कार्यशाला के अन्तिम दिवस उन्हें कार्यशाला में बुलाया जाये। समुदाय से भी कहा जाये कि वह अपना प्रतिनिधि चुनें जो कार्यशाला में जाकर उनकी कार्ययोजना को बता सके।
- मार्कर और कागज समुदाय के पास रख दिया जाये ताकि अन्तिम दिवस उसे लेकर कार्यशाला स्थल पर आयें। समुदाय से कहा जाये कि जो मानचित्र यहॉ बना है उसे कागज पर उतार लें तथा अपनी प्रस्तुतीकरण कार्यशाला में करें।
- समुदाय को सूचित कर दिया जाये कि कार्यशाला के अन्तिम दिवस उनके द्वारा गॉव में स्वच्छता की स्थिति, आगे की कार्ययोजना, खुले में शौच की आदत को पूर्ण रुप से बन्द करने की तिथि तथा ट्रिगरिगं के बाद अड़तालीस घण्टों में गॉव में हुई प्रगति को आधार बनाकर अपना प्रस्तुतीकरण तैयार करें।
- यदि कुछ लोग सीधे गढ़ढा खोदने लगते हैं तो उसकी वीडियो फिल्मांकन किया जाये। अगर कोई व्यक्ति अगले दिन गढ़ढा खोदना चाहता है तो उससे पूछा जाये कि वह भी अपने कार्य का फिल्मांकन करवाना चाहता है अथवा कार्य पूर्ण होने पर फिल्मांकन चाहता है। इसको कार्यशाला के अन्तिम दिवस दूसरे गॉव के समुदाय को दिखाया जाये।
- समुदाय को अन्तिम दिवस कार्यशाला स्थल पर आने एवं वापस जाने तथा भोजन इत्यादि की व्यवस्थाओं की जानकारी दी जाये।

7.5 चुनौतियों पर सत्र

प्रतिभागियों के समूहों से पूछा जाये कि उन्हें किन-किन चुनौतियों का अंदेशा है तथा इन चुनौतियों का जबाब उनके द्वारा कैसे दिया जायेगा।

- संदेहों पर चर्चा करें।
- समस्याओं एवं गलतियों के प्रति ईमानदार होने के प्रति बल दें। यदि उनके द्वारा कोई प्रश्न उठाया जाता है तो उसकी विस्तृत चर्चा करें।
- स्वयं की प्रतिक्रिया पर बल दें।
- जो अपनी गलतियों को स्वीकार करे उनकी प्रशंसा करें।
- स्वयं की आलोचना के प्रति जागरुकता को प्रर्दशित करें।
- सम्भावित चुनौतियों के सम्बन्ध में प्रतिभागियों के उत्तरों पर चर्चा करें।
- इस बात पर बल दें कि प्रत्येक ट्रिगरिगं के बाद परिणाम एक सा नहीं आयेगा।
- पक्ष तथा विरोध में आने वाली परिस्थितयों पर चर्चा करें।
- चार तरह के समुदायों के व्यवहारों की चर्चा की जाये (हस्तपुस्तिका पृष्ठ 38-39)। इस बात पर बल दिया जाये कि गीली माचिस की स्थिति असफलता नहीं है।

8. वास्तवितक ट्रिगरिगं के लिये तैयारियां

8.1 गॉव में ट्रिगरिगं के लिये समूहों का गठन

समूहों का निर्माण कब किया जाये, यह निर्णय आवश्यक है। समूह निर्माण से पूर्व प्रत्येक प्रतिभागी की क्षमता तथा सुगमकर्ता के कौशल को जॉचना आवश्यक है। कुछ प्रतिभागी स्टार अथवा अच्छे सीखने वाले, कुछ प्रतिभागी शर्मीले, कुछ प्रतिभागी समस्या पैदा करने वाले तथा कुछ मध्यम दर्जे के प्रतिभागी होते हैं। इन सभी को मिलाते हुए संतुलित समूहों का गठन किया जाना आवश्यक है। यदि एक बार कक्षा में समूहों का गठन हो जाता है तो समूहों के सदस्यों को बदला जाना ठीक नहीं रहेगा।

तथापि मेरा अपना अनुभव है कि समूह का गठन जितनी जल्दी हो सके कर दिया जाये। एक बार समूह का

गठन हो जाता है तो प्रतिभागी अपने समूह के सदस्यों से परिचित हो जाते हैं तथा एक दूसरे के कौशल, मजबूती एवं कमजोरी को पहचानते हुए अपने समूह में कार्य करने की प्रणाली विकसित कर लेते हैं। पूरा समूह एक टीम के रुप में कार्य करने लगता है।

सामान्य रुप से गॉव में ट्रिगरिंग के लिये बनाये गये समूहों को इस प्रकार होना चाहिये -

- 5 एवं 6 वयस्क व्यक्ति तथा 3 से 4 तक बच्चे इस तरह कुल 10 सदस्य एक समूह में हो सकते हैं।
- स्त्री एवं पुरुष का सन्तुलन हो।
- कुछ सदस्यों को स्थानीय भाषा का ज्ञान हो।
- अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले प्रतिभागियों का सन्तुलित मिश्रण हो (विशेष रुप से जब कई विभागों, मंत्रालयों तथा संगठनों के लोग हों तथा कनिष्ठ एवं वरिष्ठ दोनों हों।)
- सरकार अथवा स्वयं सेवी संस्थाओं के क्षेत्रीय स्तर पर कार्य करने वाले अग्रिम पंक्ति के कर्मचारी अवश्य हों जिनके ऊपर ट्रिगरिगं के बाद फोलोअप की जिम्मेदारी दी जायेगी। यह जॉच कर लेनी चाहिये कि इन लोगों के पास मोबाईल फोन अवश्य हो ताकि स्वाभाविक नेताओं से फालोअप हेतु आवश्यकतानुसार सम्पर्क किया जा सके।

जब समूह चर्चा कक्ष में एक साथ खड़े हो तो उनसे हाथ खड़ा करवाकर उनके गठन की जानकारी ली जा सकती है।

8.2 ट्रिगरिगं समूहों में जिम्मेदारियां

प्रत्येक समूह अपने कार्य करने की रणनीति स्वयं बनाता है। रणनीति बनाते समय सम्भावित प्रश्नों उसके विभिन्न चरणों तथा ट्रिगरिगं की प्रक्रिया का विस्तार से विवरण दिया जाना चाहिये जैसा कि अध्याय 7.4 में ट्रिगरिगं गतिविधियों का पूर्वाभ्यास में दिया गया है। गॉवों में भ्रमण से पहले समुदाय से पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार होनी चाहिये। ट्रिगरिगं टूल को आधार बनाते हुए उसी क्रम में प्रश्न तैयार किये जाने चाहिये, जिसमें गॉव में जाने पर लोगों से तालमेल बनाना, परिचय प्राप्त करना तथा खुले में शौच की आदत से मुक्त होने की योजना बनाना सम्मिलित है। अचानक उत्पन्न होने वाली विपरीत परिस्थितियों के लिये सुगमकर्ताओं द्वारा वैकल्पिक व्यवस्था बनायी जाये। समूह में प्रत्येक सदस्य

इरिट्रिया में आसमारा यूनीसेफ की ऐरागलेम सोलोमान (बायें) दो सहयोगी सुगमकर्ताओं के साथ, हेल्थ साइंस कालेज, असमारा के जेरियाब्रुक टी (दायें) तथा घिडे जी (बीच में), प्रशिक्षण शुरु होने से एक दिन पहले की शाम को प्रशिक्षण में उपयोग में आने वाले उपकरणों एवं सामग्री की जॉच करते हुए।

को जिम्मेदारी दी जाये जैसा कि अध्याय 7.4 में दिया गया है। यहॉ पर सी.एल.टी.एस. की हस्तपुस्तिका में दिये गये महत्वपूर्ण प्रश्नों का सन्दर्भ लें।

बच्चों के लिये तथा वयस्कों के लिये अलग-अलग ट्रिगरिगं के लिये अपने समूह के सदस्यों को नामित करें। बच्चों के साथ हमेशा अलग से ट्रिगरिगं होनी चाहिये, इन्हें वयस्कों के ट्रिगरिगं स्थल से दूर ले जाना चाहिये। टीम के सदस्यों की भूमिका प्रभावी होगी यदि -

वयस्कों के साथ ट्रिगरिगं को सुगम करना -

1) प्रमुख सुगमकर्ता, जो सम्पूर्ण ट्रिगरिगं प्रक्रिया का नेतृत्व कर रहा है, को चर्चा को आगे बढ़ाने के लिये प्रश्न पूछना चाहिये। सहभागी अभ्यासों की पहल करे तथा विभिन्न सामूहिक गतिविधियों का संचालन करे। प्रमुख सुगमकर्ता को स्थानीय भाषा में बात करने की पूरी क्षमता हो तथा समुदाय से संवाद स्थापित करने का कौशल हो। इसके पास इस प्रकार का दृष्टिकोण एवं व्यवहार हो कि वह स्थानीय समुदाय से कुछ सीखना चाहता है। सहभागिता पूर्वक कार्य करने का अनुभव भी हो।

2) सहायक सुगमकर्ता, मुख्य सुगमकर्ता को मुख्य रुप से सहायता प्रदान करता है। ट्रिगरिगं की समस्त प्रक्रिया को बार-बार स्पष्ट करें तथा उसका संक्षिप्तीकरण करें।

समुदाय की बड़ी भीड़ को नियंत्रित करने में प्रमुख सुगमकर्ता की सहायता करता है। सहायक सुगमकर्ता समुदाय के द्वारा किये जा रहे सहभागी विश्लेषण तथा दिये जा रहे उत्तरों के निष्कर्ष को सामने लाने में सहायता करता है।

3) रिपोर्ट लेखक मुख्य रुप से जो कुछ गतिविधि हो रही है उसका नोट तैयार करता है तथा यह अनुश्रवण करता है कि उसकी टीम अपने द्वारा बनायी गयी रणनीति पर कैसे चल रही है। यह भी प्रमुख सुगमकर्ता को आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करता है।

4) वातावरण निर्माणकर्ता मुख्य रुप से कार्य करने योग्य वातावरण को तैयार करता है। यह सुनिश्चित करता है कि बच्चे मुख्य भीड़ से अलग हो जायें और बच्चों को अलग सहभागी अभ्यासों में सम्मिलित कर देता है। ट्रिगरिगं के दौरान बाधा पैदा करने वाले लोगों को सम्भालता है तथा इस बात का भी अनुश्रवण करता है कि बच्चों के समूहों का प्रस्तुतीकरण वयस्कों के समूहों में कब और कैसे किया जाये ?

बच्चों के साथ ट्रिगरिगं को सुगम करना -

1. प्रमुख सुगमकर्ता
2. सहायक सुगमकर्ता
3. वातावरण निर्माणकर्ता (वयस्कों की ही तरह)
4. नारे, गीत तथा रैली हेतु सुगमकर्ता

यदि महिलायें ट्रिगरिगं में प्रतिभाग नहीं करती हैं अथवा मुख्य ट्रिगरिगं स्थल पर उनकी उपेक्षा होती है तो ऐसी स्थिति में उनके लिये पृथक ट्रिगरिगं स्थल की व्यवस्था की जा सकती है लेकिन ऐसी स्थिति में यह ध्यान में रखना चाहिये कि सुगमकर्ता केवल महिलाएं हों।

प्रत्येक समूह को इस बात पर बल देना चाहिये कि वह ट्रिगरिगं के लिये एक आचार संहिता अवश्य बना ले। यदि कोई समूह का सदस्य भाषण देने लगता है अथवा हावी होने लगता है तो कुछ संकेत के माध्यम से रोकने की विधि भी बना ली जाये। हमेशा प्रमुख प्रश्न पूछें जायें। जैसे कन्धे पकड़कर बात करना अथवा किसी व्यक्ति को मार्कर पैन दिया जाना आदि व्यवहार अपनाया जा सकता है।

प्रतिभागियों को सचेत कर दिया जाये कि उनके द्वारा प्रत्येक ट्रिगरिगं अभ्यास के बाद प्रत्येक दिन की रिपोर्ट लिखी जायेगी जिसके आधार पर अन्तिम दिन कार्यशाला की पूर्ण रिपोर्ट तैयार की जा सकेगी।

गॉव के नेताओं के साथ अनौपचारिक बैठक

कार्यशाला में पहले दिन के अन्त में गॉव से आये समुदाय के लोागों का स्वागत करें तथा उनसे अगले दिवस के कार्यक्रमों पर बातचीत करें। उनके साथ चाय-नाश्ता करें। यह उम्मीद जाहिर करें कि गॉव में अगले दिन सब लोगों से मुलाकात होगी, गॉव का भ्रमण भी होगा। उनसे ट्रिगरिगं को सुगम बनाने की रणनीति एवं बिना अनुदान के शौचालय निर्माण पर चर्चा न करें।

यह सुनिश्चित करें कि सभी प्रतिभागी क्षेत्र भ्रमण के लिये पूरी तरह तैयार हो जायें। सी.एल.टी.एस. की ट्रिगरिगं हेतु तथा क्षेत्र में सामुदायिक विश्लेषण को सुगम बनाने हेतु उपयोग में आने वाली सामग्री का विवरण परिशिष्ठ 'घ' पर दिया गया है।

9. समुदाय का स्थल पर स्वतः किया जाने वाला कार्य

9.1 प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की विडियोग्राफी तथा उसे प्रर्दशित किया जाना

जिस समय प्रतिभागी गॉव में ट्रिगरिगं का कार्य कर रहे हों अथवा बातचीत कर रहे हों उस समय सावधानीपूर्वक उनके व्यवहार की विडियोग्राफी की जानी चाहिये। विशेष रुप से उनके निर्देशात्मक व्यवहारों का। यह ध्यान में रखें कि विडियोग्राफी इस तरह से करें कि प्रतिभागियों को पता न चले। आप देखेगें कि विडियोग्राफी के दौरान प्रतिभागियों के इस तरह के व्यवहार की रिकार्डिगं हो जाती है जिस व्यवहार की सामान्य रुप से अपेक्षा नहीं की जाती है। प्रतिभागी अकसर अपने सामान्य निर्देशात्मक एवं ऊपर से नीचे की ओर आदेश देने वाले व्यवहार को करते हैं तथा समुदाय को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं। आप इस तरह की विडियो रिकार्डिगं को कक्षा में दिखाकर ट्रिगरिगं के अनुभवों की पुर्नसमीक्षा करें। प्रतिभागियों से कहें कि आप विडियों देखें तथा पहचानें कि कहॉ पर आपने गलती की है। विडियो दिखाते समय विडियों को ऐसे स्थलों पर रोकें, जहॉ प्रतिभागियों की स्वाभाविक गलतियां, जैसेः समुदाय से बातचीत करते

वक्त धूम्रपान करना, मोबाइल पर बात करना अथवा सभी लोग जमीन पर बैठे हों उस समय सुगमकर्ता कुर्सी पर बैंठे हों, अथवा दो प्रतिभागी आपस में कोई निजी बातचीत करके हँस रहे हों इत्यादि। प्रतिभागियों से पूछे कि उन्होंने क्या गलती की तथा उन्हें कैसे अलग ढ़ग से काम करना चाहिये था। वीडियोग्राफी का फीडबैक लोगों में जागरुकता बढ़ाने तथा गलत बातों पर प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षण के लिये आवश्यक है जो सी.एल.टी.एस. के लिये जरुरी है। वीडियोग्राफी पर अपने व्यवहार को देखने के बाद प्रतिभागियों के सुगमकर्ता के कौशल में बहुत तेजी से सुधार होता है।

वीडियोग्राफी का उपयोग ट्रिगरिगं प्रक्रिया के महत्वपूर्ण क्षणों व घटनाओं को दिखाने के लिये भी किया जा सकता है।

संकेत

कैमरामैन को क्षेत्र में जाने से पहले निम्न प्रकार को समझायें –

- एक से अधिक गॉवों का भ्रमण करें।
- छिपकर अलग रहें ताकि वीडियोग्राफी पर किसी का ध्यान न जाये विशेषकर बच्चों का।
- यह ध्यान में रखें कि पहले दिन उसके द्वारा निम्न की वीडियोग्राफी की जाये – 1. सुगम करने के दौरान प्रतिभागियों का व्यवहार तथा दृष्टिकोण 2. शरीर की भाषा तथा शरीर के संकेत 3. तोड़ फोड़ करने वाले, हावी होने वाले, सी.एल.टी.एस. को प्रवेश से रोकने वाले, अलग-थलग प्रतिभागी (फोन पर बात करने वाले, आराम करने वाले, धूम्रपान करने वाले इत्यादि), खुले में शौच के स्थलों के भ्रमण के दौरान, मल और भोजन के प्रदर्शन एवं मानचित्रीकरण प्रक्रिया इत्यादि पर पुनः पूछे गये प्रश्नों की वीडियोग्राफी अवश्य करें।

निम्न व्यवहार की वीडियोग्राफी करें –

- भाषण।
- मोबाईल फोन का प्रयोग।
- धूम्रपान।
- प्रतिभागी का अलग-थलग पड़ना अथवा गॉव में कुर्सी पर आराम करना।
- स्वाभाविक नेता का उभरना तथा पूरी प्रक्रिया को अपने नियंत्रण में लेना।
- प्रज्जवलन का क्षण।
- ट्रिगरिगं के क्रम की रिकार्डिगं।

कैमरामैन को प्रमुख प्रशिक्षक के साथ ट्रिगरिगं के पहले दिन जाने दें।

दूसरे दिन कैमरामैन अपने तरीके से जा सकता है।

9.2 क्षेत्र में प्रशिक्षकों के लिये आवश्यक निर्देश

- एक प्रशिक्षक के रुप में आपको कभी भी सीधे सुगमकर्ता के रुप में क्षेत्र में कार्य नहीं करना चाहिये और न ही सीधे ट्रिगरिगं करनी चाहिये। अगर कहीं विशेष परिस्थिति आ जाये जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को आपकी सहायता एवं हस्तक्षेप की जरुरत हो वहीं प्रशिक्षक को सुगमकर्ता की भूमिका में आना चाहिये। प्रतिभागियों को समस्त गतिविधियां संचालित करने की जिम्मेदारी दें तथा आप पीछे रहकर उन्हें प्रोत्साहित करें।
- जिस समय प्रतिभागी काम कर रहे हों उस समय हस्तक्षेप न करें क्योंकि आपकी उपस्थिति का संज्ञान होने पर प्रतिभागी अत्यधिक सर्तक हो जायेगें जिससे उनकी स्वाभाविक गतिविधि रुक सकती है।
- जब आप गॉव का भ्रमण करें जहॉ कोई समूह ट्रिगरिगं कर रहा है वहॉ आप शान्तिपूर्वक प्रक्रिया में बिना बाधा डाले जायें। अपनी गाड़ी को कहीं दूर खड़ा करें तथा ट्रिगरिगं स्थल तक आप पैदल जायें ताकि ट्रिगरिगं में लगे हुए लोगों की गतिविधियों में आपके पहुचने से कोई व्यवधान न हो।
- अगर कुछ लोग इकट्ठे हो रहे हों तथा कुछ अभी आने को शेष हों ऐसी स्थिति में प्रक्रिया प्रारम्भ करने के लिये आप एक अतिरिक्त समूह बनाने पर विचार कर सकते हैं।
- वीडियोकैमरा मैन को अपने साथ ले जाना ना भूलें। आप कैमरामैन को (प्रतिभागियों से अलग) इस प्रकार समझायें

स्थानीय सामुदायिक मुखिया के प्रति आदर भाव दिखाना आवश्यक है। सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं के सत्र को प्रारम्भ करने से पहले माली के एक गॉव में मुखिया का अभिवादन।

कि उसे सामुदायिक विश्लेषण की कौन सी गतिविधियों का फिल्मांकन करना है। केवल एक दो समूहों तक ही अपना भ्रमण सीमित न रखें बल्कि कोशिश करें कि अधिक से अधिक समूहों को सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं करते हुए आप देख सकें। इसलिए आप तेजी से कैमरा मैन के साथ बिना अधिक समय गवाएं भ्रमण करें। कमजोर समूह पर अपना समय ज्यादा दे सकते है। भ्रमण के लिये वाहन का प्रयोग करें।

- भ्रमण के दौरान एक गॉव से दूसरे गॉव तक ट्रिगरिगं की प्रक्रिया को देखते हुए दिन के अन्त में सामान्यतः शाम के समय आप स्वयं को ऐसे गॉव में पायें जहॉ प्रक्रिया लगभग पूरी होने वाली हो तथा विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकल रहा हो कि खुले में शौच की आदत के लिये सामूहिक निर्णय लिया जाये अथवा नहीं। यदि आप पाते हैं कि वहॉ लोगों में जागरुकता कम है और समुदाय का उत्तर ''बिखरी हुई चिंगारी'' अथवा ''गीली माचिस'' की तरह है अर्थात समुदाय के लोग बाहरी सहायता की तरफ नजर लगाये रहते हैं ऐसी स्थिति में आप दूसरे गॉव के अपने अनुभव को यहॉ पर रख सकते हैं और उनसे कह सकते है कि मुझे कितना आश्चर्य है यह देखकर कि आपके पड़ोस के गॉव के लोग (गॉव का नाम अवश्य इंगित करें) तत्काल खुले में शौच की आदत को बन्द करने के लिये कदम उठाने को तैयार हैं। आपको देखकर मुझे आश्चर्य है कि आप बाहर से आने वाले पैसे तथा सहायता का इन्तजार करेगें तथा एक दूसरे का मल खाने की प्रक्रिया जारी रखेगें। आप समुदाय से कह सकते हैं कि आप जैसे अदभुत लोगों की क्या मैं फोटो ले सकता हूँ? पड़ोस के लोगों के अनुभव को उनके समक्ष रखें।

- प्रत्येक समूह को यह अवश्य याद दिलायें कि समुदाय में से कुछ चुने हुए लोगों को कार्यशाला स्थल पर प्रस्तुतीकरण हेतु अवश्य आमंत्रित करें तथा उनके लिये वाहन इत्यादि की व्यवस्थाओं की भी जानकारी दें।

- अगर आप की जानकारी में यह आता है कि प्रतिभागियों में से कुछ लोग अपनी भूमिका का निर्वहन ट्रिगरिगं के दौरान नहीं कर पा रहे है तो आप परेशान न हो अपितु उनको दी गयी जिम्मेदारी को आप स्वयं करने लगिये जैसेः यदि वातावरण निर्माणकर्ता सभी लोगों को ट्रिगरिगं की प्रक्रिया अथवा बातचीत में सम्मिलित नहीं करा पाता है तो आप पीछे खड़े समुदाय के शर्मीले लोगों को अथवा पूरी प्रक्रिया से अपने को अलग किये हुए लोगों को आगे आने के लिये प्रोत्साहित कर सकते हैं। जब प्रतिभागी आपको अपने कार्य करते हुए देखेगें तो वह स्वयं अपने कार्य पर लग जायेगें।

- यदि आपकी जानकारी में ट्रिगरिगं की प्रक्रिया के दौरान कोई बड़ी गड़बड़ी दिखाई देती है और आपका हस्तक्षेप आवश्यक हो तो ऐसी स्थिति में आपको प्रतिभागियों के समूहों में से कुछ लोगों को बुलाकर बातचीत करनी चाहिये और यह पूछना चाहिये कि गलती कहाँ हो रही है। उनके विचारों को लें तथा यदि उनकी इच्छा हो तभी आप पूरी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करें। ऐसी स्थिति में आप सीधे बीच में जायें और सुगमकर्ता का कार्य करें और प्रत्येक चरण को स्पष्ट तरीके से करके प्रतिभागियों को दिखायें जिससे उन्हें पता चलेगा कि वे कहॉ गलत थे।

- प्रक्रिया के अन्त में यदि आप देखते हैं कि सुगमकर्ताओं का समूह कुछ महत्वपूर्ण चरणों को छोड़ रहा है या भूल रहा है तो आप सीधे सुगमकर्ता के रुप में उतरकर प्रक्रिया पूरी करा सकते हैं।

- कृपया यह याद रखें कि क्षेत्र भ्रमण के दूसरे दिन आपके हस्तक्षेप की आवश्यकता कम रह जायेगी। अपने जाने से

पहले प्रतिभागियों को क्षेत्र में जाने एवं कार्य करने का पूरा अवसर दें।

- याद रखें कि दूसरे दिन से ट्रिगरिगं के सुगम करने की प्रक्रिया में अत्यधिक सुधार होता है। आपके लिये यह आवश्यक है एवं चुनौती भी है कि जितनी जल्दी हो सके आप स्वयं को स्थलीय प्रशिक्षण कार्य से अलग कर लें तथा समस्त जिम्मेदारी प्रतिभागियों पर छोड़े।

- आप कभी-कभी यह महसूस कर सकते हैं कि सही समूह का निर्माण तथा कार्यो के वितरण के बावजूद कुछ समूह गॉव में प्रवेश करते ही उलझन में होते हैं अथवा किंकर्तव्यविमूढ़ होते हैं, उन्हें समझ में नहीं आता है कि क्या करें। एक स्थल पर हैरान खड़े रहते हैं। ये लोग कभी-कभी स्वयं का विस्तृत परिचय कराते हैं (जैसेः मैं फला व्यक्ति विश्व बैंक या सरकार की फला मंत्रालय से हूँ इत्यादि)। हमेशा लम्बे परिचय को हतोत्साहित करना चाहिये क्योंकि यह अधिक समय लेता है और यह आवश्यक भी नहीं है। यह शुरु में ही अधिक समय लेता है अतः अच्छा है कि आप तत्काल बातचीत की प्रक्रिया प्रारम्भ करें। आप जमीन की सफाई शुरु कर सकते है जहॉ समुदाय को मानचित्रीकरण करना है अथवा ताली बजाकर सभी लोगों को बुलाकर कोई चुटकुला अथवा गीत अथवा नृत्य शुरु कर सकते हैं यह सब परिस्थितियों पर निर्भर करता है। जैसे ही समूह अपने कार्य पर लगता है वैसे ही आप अलग हो जायें।

ऊपर - माली के एक गॉव में ट्रिगरिगं के 24 घण्टे के बाद समुदाय द्वारा शौचालय के लिये खोदे जा रहे गढढे का विडियोग्राफर द्वारा रिकार्डिगं। **नीचे** - चाड के एक गॉव में ट्रिगरिगं के उपरान्त खोदे जा रहे गढढे की वीडियोरिकार्डिगं। प्रशिक्षण कार्यशाला के अन्तिम दिन इस वीडियो डाक्यूमेन्ट्री को 10 अन्य समुदायों को दिखाया गया।

- अकसर मैने देखा है कि बहुत से पेशेवर लोग समुदाय के एक वर्ग से ही बात करते है तथा अन्य वर्ग को अनदेखा करते है। इसमें सुधार किया जाना चाहिये तथा बातचीत में सभी को सम्मिलित किया जाना चाहिये।

- यहॉ तक कि कुछ अच्छे सुगमकर्ता समुदाय के साथ विश्लेषण की प्रक्रिया में इतने मशगूल हो जाते है कि प्रज्जवलन के बाद ट्रिगरिगं की प्रक्रिया के आगे के चरण को भूल जाते हैं जो समुदाय को खुले में शौच की आदत से मुक्त करने की तरफ ले जाता है। ऐसी स्थिति में आप मुख्य सुगमकर्ता अथवा वातावरण निर्माणकर्ता को समय के बारे में अथवा क्रम के बारे में बता सकते है। सामुदायिक विश्लेषण एवं आगे की योजना बनाने हेतु एक सा समय दिया जाना चाहिये।

9.3 शौचालय के लिये समुदाय द्वारा खोदे जा रहे गढ्ढे की वीडियो रिकार्डिगं

सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं के प्रशिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में ट्रिगरिगं के 24 से 48 घण्टे के भीतर समुदाय में सबसे पहले गढ्ढा खोदना प्रारम्भ करने वाले की वीडियोग्राफी करना तथा उसे दिखाना एक महत्वपूर्ण घटना है। यह सामान्य रुप से समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति तथा दूसरे समुदायों को तेजी से खुले में शौच की आदत से मुक्त करने के लिये प्रेरित करता है। सामान्यतः यदि ट्रिगरिगं अच्छी हुई हो तो समुदाय के कुछ सदस्य ट्रिगरिगं के दिन अथवा उसके दूसरे ही दिन शौचालय के लिये काम करने का निर्णय लेते है। ऐसे उत्साही लोगों की पहचान की जानी चाहिये तथा उनसे बातचीत करके उनकी सुविधानुसार अगले दिन का समय निर्धारित करके विडियोग्राफर को भेजना चाहिये ताकि वह समुदाय के सदस्य द्वारा खोदे जा रहे गढ्ढे की वीडियोग्राफी कर सके। यहॉ तक कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से बनाये जा रहे शौचालयों अथवा गन्दे शौचालयों के सुधार

की प्रक्रिया की भी वीडियोग्राफी की जाये। कैमरामैन से समुदाय के उन लोगों का परिचय कराना चाहिये जो शौचालय निर्माण हेतु तत्काल कार्य करने को तैयार हों।

कृपया कैमरामैन को यह समझाना ना भूलें कि समुदाय के ऐसे सदस्य जो शौचालय निर्माण की तरफ बढ़ रहे है उनसे किस प्रकार के प्रश्न पूछें जायें। फिल्मांकन के समय साक्षात्कार अत्यन्त संक्षिप्त हो।

अन्य प्रश्नों में से कुछ प्रश्न इस प्रकार हो सकते हैं

- आपने अपने शौचालय का निर्माण आज शुरु क्यों किया ?
- आप इतने दिनों तक बाहर खुले में शौच कहॉ करते थे ?
- आपके समुदाय में कितने परिवार इस तरह के शौचालय का निर्माण करेंगें ?
- यदि कुछ लोग शौचालय नहीं बनाते हैं और खुले में शौच की पुरानी आदत को जारी रखते हैं तो क्या होगा ?
- इस शौचालय का प्रयोग कौन करेगा तथा यह किसका बनाया हुआ ढॉचा है ?
- इस शौचालय की कीमत क्या है ? क्या इस गॉव के समस्त परिवार ऐसा शौचालय बना सकते है ?
- इसके प्रयोग में लाने में कितना समय लगेगा और क्या आप दूसरे लोगों को ऐसे शौचालय बनाने में सहयोग करेंगें ? इत्यादि

यह वीडियो प्रत्येक व्यक्ति को प्रशिक्षण कार्यशाला के अन्तिम दिन दिखाया जाये। यहॉ तक कि ट्रिगर हुए समुदाय के सदस्यों को भी देखने का अवसर दिया जाये। यह याद रखें कि आपने पहले से ही स्वाभाविक नेताओं के उभरने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है जो अपने कार्य एवं प्रोत्साहन से आगे आये हैं। हर जगह मैने उपलब्धि एवं जोश का भाव समुदाय के उन चेहरों पर देखा है जिनके चेहरे वीडियोफिल्म दिखाये जाते समय सार्वजनिक रुप से दिखाये जाते है। मैं अत्यधिक प्रभावित हो गया था जब मैने मध्य अफ्रीका के चाड के एक गॉव में ट्रिगरिगं के तुरन्त बाद अगले दिन प्रातः 55 परिवारों से भी ज्यादा लोगों ने शौचालय के लिये गढ्ढा खोदा। इसमें से ज्यादातर लोग रमजान का महीना होने के कारण व्रत में थे और दिन की धूप इन्हें झुलसा रही थी। पुनः यह मेरे लिये अविश्वसनीय है जब एक कैमरामैन शाम को गॉव से लौटा और मुझे रिपोर्ट दिया कि सुडान के एक गॉव में ट्रिगरिगं के 24 घण्टे के भीतर 160 परिवारों में से 157 परिवारों ने शौचालय के लिये गढ्ढा खोदना प्रारम्भ कर दिया। प्रत्येक व्यक्ति ने यह अनुरोध किया कि प्रत्येक व्यक्ति का गढ्ढा खोदते समय की फिल्म को कुछ समय के लिये अवश्य दिखाया जाये। इस तरह की बहुत सी सफलता की आकर्षक कहानियां है।

10. प्रतिभागियों के अनुभवों की रिपोर्टिगं तथा इसे तैयार करना

क्षेत्र भ्रमण के अनुभवों की रिर्पोटिगं तथा रिपोर्ट को तैयार करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है क्योंकि सीखने एवं आत्मसात करने के बहुत से मौके क्षेत्र भ्रमण करने के दौरान प्राप्त होते है।

- समूह को चर्चा कक्ष में प्रस्तुतीकरण से पहले प्रत्येक सदस्य को अपने अनुभव अपने टीम के सदस्यों के बीच प्रस्तुत करने का पर्याप्त समय दें।
- अच्छी चर्चा को आगे बढ़ाने के लिये आप कुछ प्रश्नों की रुपरेखा दे सकते है।
- समूह के लोगों को प्रस्तुतीकरण के समय दृश्य श्रव्य उपकरणों के उपयोग के लिये प्रोत्साहित करें। अकसर समूहों द्वारा प्रस्तुतीकरण के लिये पावर प्वाइंट उपयोग में लाये जाते है। वीडियो कैमरामैन को उपयुक्त चित्रों की पहचान करने तथा उनका क्रम विभिन्न समूहों के हिसाब से लगाने में सहायता करें तथा प्रत्येक समूह के प्रस्तुतीकरण के समय छोटी वीडियोफिल्मों को दिखायें। ऐसी वीडियो फिल्में सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं की प्रक्रिया की विविधता को समझने में सहायता करते है कि क्या अच्छा हुआ और क्या अच्छा नहीं हुआ।
- एक या दो प्रतिभागियों को ऐसे प्रस्तुतीकरण के समय अध यक्षता करने को कहें, सामान्य रुप से ऐसे लोग जो सरकार अथवा एन.जी.ओ. के वरिष्ठ हों।
- प्रत्येक समूह के प्रस्तुतीकरण के बाद दूसरे समूहों से पूछे कि उन्हें इस प्रस्तुतीकरण से क्या सीखा।

10.1 मीमांसा एवं समीक्षा

जैसा कि पहले बताया गया है कि पहले दिन की गतिविधियों की समीक्षा एवं मीमांसा नयी सीख को प्रकाश में लाने के लिये बहुत ही उपयोगी हो सकता है। प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करें कि विषय सामग्री के बजाय प्रक्रिया पर बहुत बल दें तथा बाधाओं और असफलताओं की चर्चा सफलताओं के साथ जरुर करें। हम सभी अपनी असफलताओं से सीखते है। कृपया प्रश्नावली के विवरण के लिये परिशिष्ट 'ड.' देखें।

यह हमेशा अच्छा रहता है कि प्रतिभागियों की अपेक्षाओं को सन्दर्भ में ले आयें तथा प्रमुख प्रश्नों का उत्तर खोजें, विशेष रुप से प्रतिभागियों की शंकाओं एवं अविश्वास पर चर्चा करें। इन बातों पर बातचीत करने का यही उपयुक्त समय है।

प्रशिक्षकों के विश्लेषण के साथ वीडियो को पुनः दिखाना

आप अथवा आपके सहायक प्रशिक्षक को इस सत्र के प्रारम्भ होने से पहले वीडियोकैमरा मैन के साथ कुछ समय व्यतीत करना चाहिये। कृपया ट्रिगरिगं अभ्यास के दौरान प्रतिभागियों द्वारा की गयी कुछ सामान्य गलतियों को चिन्हित करने का प्रयास करें। यह दृष्टिकोण एवं व्यवहार, टीम के समन्वय, सुगम करने के कौशल, क्रमबद्धता, वातावरण को बनाने अथवा किसी अन्य विषय से सम्बंधित हो सकता है। कैमरामैन के साथ बैठकर खास चित्रों को चिन्हित करें (कैमरा में नामांकन कर लें) और सम्बन्धित समूह के प्रस्तुतीकरण पर इसे दिखायें।

किसी खास चित्र अथवा स्थल पर कैमरा को खड़ा कर दें तथा आप शान्त रहें। आप प्रतिभागियों की तरफ से आने वाले जबाब का इन्तजार करें और उनसे पूछें कि क्या गलत है ? क्या ठीक होना चाहिये था ? प्रतिभागियों से पूछें कि वह स्वैच्छिक रुप से बतायें कि क्या गलत हुआ तथा किसी खास बिन्दु पर कैमरे के स्थिर होने पर अपना हाथ उठायें। इस तरह का वीडियोविश्लेषण पूरे कक्षा में हॅसी मजाक का वातावरण पैदा कर देता है लेकिन इससे वास्तविक सीख मिल सकती है।

अगले दिन के लिये सी.एल.टी.एस. को सुगम बनाने की रणनीति को सुधार करने हेतु समय देना

प्रथम दिन के सी.एल.टी.एस. के ट्रिगरिगं के अनुभवों के आधार पर अगले दिन की रणनीति बनाने तथा समीक्षा के आधार पर उसमें सुधार लाने के लिये समूहों को समय दें। समस्त समूहों को इस बात के लिये प्रोत्साहित करें कि पिछली रणनीति में सुधार की आवश्यकताओं पर विस्तृत टिप्पणी करें।

समूहों में आपस में सदस्यों को स्थानान्तरित करने से बचें जब तक कि एक समूह से दूसरे समूह में एक सदस्य का स्थानान्तरण करना बाध्यकारी न हो गया हो। जैसेः किसी एक सदस्य का अचानक प्रशिक्षण छोड़कर चले जाना, किसी एक प्रतिभागी का बीमार होना, किसी एक प्रतिभागी के सामने भाषा की गम्भीर समस्या हो गयी हो। ऐसी स्थिति में कृपया चर्चा करें तथा समूह के सदस्यों की आपसी सहमति से उनका स्वैच्छिक स्थानान्तरण करें। आप यह सुनिश्चित करें कि आपका भ्रमण अपेक्षाकृत कमजोर समूह के क्षेत्रभ्रमण के दौरान हो तथा आप अपनी सहायता उन्हें दें।

दूसरे समुदाय में ट्रिगरिगं

सामान्य रुप से दूसरे दिन सभी समूह ट्रिगरिगं को अच्छे तरीके से सुगम कराते हैं। कभी ऐसा भी हो सकता है कि एक या दो गॉवों में ट्रिगरिगं का अभ्यास किया जाना किसी अचानक उत्पन्न हुई परिस्थिति के कारण सम्भव नहीं है (जैसे किसी गॉव में अचानक ट्रिगरिगं के दिन किसी की मृत्यु हो गयी हो या कोई और आपात स्थिति पैदा हो गयी हो) ऐसी स्थिति में उस गॉव का भ्रमण प्रशिक्षण के दौरान रोक दें तथा समूह को विभाजित करके अन्य समूहों के साथ जोड़ दें। जहॉ ये लोग उनकी सहायता करें अथवा उन्हें एक दिन पूर्व ट्रिगर हुए समुदाय में यह देखने के लिये भेज दें कि सामूहिक प्रक्रिया से गॉव में क्या प्रगति हुई है।

प्रतिक्रिया एवं अभ्यास सत्र

दूसरे दिन के गॉव की ट्रिगरिगं के बाद शाम को अनुभवों के आदान प्रदान का एक छोटा सत्र रखें जैसा कि पहले दिन हुआ था। समूह के लोगों से कहें कि वह पहले दिन व दूसरे दिन के ट्रिगरिगं के परिणामों की

तुलना करें तथा यह कारण बतायें कि वह अपने निर्णय पर कैसे पहुँचे।

रिपोर्ट एवं फालोअप के लिये तैयारी

समूहों को दूसरे दिन की ट्रिगरिंग की रिपोर्ट तैयार करने हेतु चर्चा का पर्याप्त समय दें। उन्हें याद दिलायें कि जिस गॉव का भ्रमण उन्होंने किया है उसकी स्वच्छता के मूलभूत आकडों को भी अवश्य संकलित करें जो भविष्य में उस गॉव के खुले में शौच करने की आदत से विमुक्त होने के लिये होने वाले अनुश्रवण एवं मूल्यांकन का आधार बनेगा।

10.2 कार्यशाला के अन्तिम दिन की गतिविधियों का संक्षिप्तीकरण

सामान्य रुप से कार्यशाला का अन्तिम दिन अत्यन्त व्यस्त दिन होता हैं। इस समय, समय का प्रबन्धन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस बात की सलाह दी जाती है कि अन्तिम दिन की गतिविधियों का विवरण प्रतिभागियों को पहले से ही चौथे दिन की शाम को बता दें तथा उन्हें जिम्मेदारियां सौंप दें। अन्तिम दिन निम्न गतिविधियां सम्मिलित रहती हैं - **1.** समुदाय के लोगों का प्रस्तुतीकरण **2.** ट्रिगरिंग के तुरन्त बाद समुदाय द्वारा लिये गये निर्णयों तथा किये गये कार्यो और ट्रिगरिंग की प्रक्रिया की छोटी वीडियो फिल्म का प्रदर्शन **3.** ट्रिगर हुए गॉव के लिये ट्रिगरिंग के बाद फोलोअप की क्रिया को अन्तिम रुप देना **4.** आमंत्रित समुदाय के सदस्यों के साथ दोपहर का भोजन **5.** आगे के एक वर्ष अथवा छः माह के लिये संस्थाओं की कार्ययोजना पर चर्चा तथा प्रस्तुतीकरण **6.** कार्यशाला की अपेक्षाओं तथा उद्देश्यों पर पुर्नचर्चा **7.** प्रशिक्षण कार्यशाला का मूल्यांकन 8. औपचारिक रुप से समाप्ति की घोषणा।

समस्त समूहों को निम्न बातें बतायें

- स्वाभाविक नेताओं को ट्रिगर हुए गॉवों से लाने के लिये वाहन की व्यवस्थाओं की पूर्वजॉच।
- प्रशिक्षण हॉल के बाहर बड़ी खुली जगह पर सीधी दीवार वाले स्थान का चयन। चक्रानुक्रम में समुदाय का प्रस्तुतीकरण खुले स्थान पर आयोजित करायें तथा खुली चर्चा का समय दें। बातचीत तथा ताली बजाने को प्रोत्साहित करें। एक साथ प्रशिक्षण भवन में समस्त प्रस्तुतीयों को आयोजित किया जाना कठिन है क्योंकि इससे बहुत शोर पैदा होगा। खुले सत्र में समुदाय के प्रस्तुतीकरण से बचें क्योंकि हो सकता है कि समुदाय के लोग बड़ी भीड़ के सामने अपने प्रस्तुतीकरण करने में परेशानी महसूस करें। वैसे भी इस तरह का आयोजन अधिक समय लेगा तथा प्रश्न एवं उत्तर भी सीमित हो जायेगें। समुदाय के प्रस्तुतीकरण हेतु खुले स्थल के चयन को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।
- समुदाय के सदस्यों का कार्यशाला स्थल पर पहुँचने के तुरन्त बाद उनके लिये पेयजल, चाय, शीतल पेय तथा हल्के जलपान की व्यवस्था की जाये।
- प्रत्येक समुदाय के सदस्यों के लिये उनके चार्ट को दिखाने के लिये पहले से ही स्थल निर्धारित कर दें। प्रत्येक गॉव का नाम बडे कार्ड पर मार्कर से लिखकर उपयुक्त स्थल पर चिपका दिया जाये। प्रत्येक समुदाय के प्रस्तुतीकरण स्टेशन के लिये अलग अलग नम्बर दे दिया जाये जैसेः 1, 2 ,3 इत्यादि। ऐसा करने से अगले दिन प्रस्तुतीकरण के समय उत्पन्न होने वाले भ्रम से बचा जा सकेगा।
- समुदाय के सदस्यों के लिये सीटी तथा प्वांटर की व्यवस्था अवश्य की जाये।
- प्रत्यके प्रस्तुतीकरण स्टेशन पर पीने के पानी की बोतल रखें।
- मुख्य प्रशिक्षण कक्ष में कुर्सियों की अतिरिक्त व्यवस्था करा दें ताकि समुदाय के लोगों को बैठने की पर्याप्त जगह मिल सके।
- बाहर के प्रस्तुतीकरण के बाद, चर्चा कक्ष में प्रस्तुतीकरण हेतु माईक,स्क्रीन एवं एल.सी.डी. प्रोजेक्टर की व्यवस्था करें।
- सभी के लिये दोपहर के भोजन की व्यवस्था (प्रशिक्षण के प्रतिभागी, समुदाय के आमंत्रित सदस्यों हेतु) करें। इसे शीध्रता से समाप्त करें।
- समुदाय के सदस्यों को वापस अपने गॉव लौटने हेतु वाहनों का प्रबन्ध अवश्य करें।

11. समुदायों का प्रस्तुतीकरण एवं फीडबैक

कार्यशाला के अन्तिम दिन ट्रिगर हुए समुदायों से प्रतिनिधियों को बुलाया जाये (जिनका चयन सुगमकर्ताओं

द्वारा ट्रिगरिंग के दौरान किया गया)। ये लोग कार्यशाला स्थल पर अपनी कार्ययोजना तथा सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिंग के अनुभवों तथा अपने कार्य की प्रगति को सभी के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु आते हैं। प्रतिभागियों को ट्रिगरिंग के बाद गॉव में मार्कर, चार्ट पेपर इत्यादि छोड़कर आना चाहिये जिससे स्वाभाविक नेता अपना प्रस्तुतीकरण बना सकें। जिसे प्रदर्शन हेतु कार्यशाला के दौरान उसकी दीवारों पर लगाया जाये तथा समुदाय के सदस्य एक एक कर अपना प्रस्तुतीकरण कर सकें।

प्रत्येक समुदाय को खुले में शौच से विमुक्त होने की तिथियों को घोषित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाये तथा खुले में शौच से विमुक्ति की स्थिति प्राप्त होने पर आयोजित होने वाले उत्सवों में सभी को आमंत्रित करने के लिये कहा जाये। यह उनके बीच में प्रतियोगिता प्रारम्भ कर देता है।

ट्रिगरिंग के तुरन्त बाद की समुदाय की गतिविधियों के कुछ चयनित वीडियो दिखाया जाये।

11.1 ट्रिगर हुए समुदाय के प्रस्तुतीकरण हेतु कुछ आवश्यक निर्देश

प्रशिक्षण के दौरान यह हमेशा महत्वपूर्ण एवं उत्तेजक घटना होती है। समुदाय के प्रस्तुतीकरण के दौरान सीखने के नये अवसर पैदा होते हैं। बहुत से लोग जो अभी तक आशिंक रुप से सहमत थे समुदायों के प्रस्तुतीयों को देखने के बाद पूर्ण रुप से सहमत हो जाते हैं। यह समुदाय के प्रस्तुतीकरण की शक्ति का परिचायक है।

सामने - अगस्त 2009 में पीपुल रिपब्लिक इरिट्रिया के स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशक ट्रिगर हुए समुदाय के प्रस्तुतीकरण को सुनते हुए दिखाई दे रहे हैं।
नीचे बायें - नार्थ सूडान में प्लान सूडान के कन्ट्री डायरेक्टर डान मैक फी ट्रिगर हुए समुदाय के प्रस्तुतीकरण को सुनते हुए। यहॉ पर ट्रिगरिंग के 24 घण्टे के भीतर 160 परिवारों में से 157 परिवारों ने शौचालय के लिये गढढा खोदना प्रारम्भ कर दिया।
नीचे दायें - समुदाय द्वारा किये जा रहे प्रस्तुतीकरण पर ध्यान नहीं देना अथवा उसका अनादर करना नहीं चाहिये अन्यथा यह समुदाय के उत्साह एवं मनोबल को प्रभावित करता है।

तैयारियां

- पहले से ही विभागीय मंत्रियों/वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों/नीतिनिर्माताओं/राज्य एवं जिला स्तर के विभागाध्यक्ष एवं कार्यालयाध्यक्ष/क्षेत्रीय परिषदों/नगरपालिकाओं के अध्यक्ष तथा मेयर इत्यादि को समुदाय के प्रस्तुतीकरण के समय आमंत्रित किया जाना चाहिये। निचले स्तर पर अग्रिम पंक्ति के कार्य करने वाले कर्मचारियों की सहायता के लिये तथा सी.एल.टी.एस. को विस्तारित करने के लिये इनका आना आवश्यक है।
- उपरोक्त अतिमहत्वपूर्ण अतिथियों को एक सप्ताह के भीतर कम से कम एक या दो बार प्रशिक्षण स्थल एवं समुदाय के प्रस्तुतीकरण के समय के बारे में अवश्य याद दिलायें।
- समुदाय के सदस्यों को प्रशिक्षण स्थल पर पहुँचने की पूर्ण व्यवस्थाएं की जायें।

जब समुदाय के सदस्य प्रशिक्षण स्थल पर पहुँचें

- इनका गर्मजोशी से स्वागत किया जाये तथा सूक्ष्म जलपान की व्यवस्था की जाये। उन्हें प्रशिक्षण के माहौल में इस तरह ढाल दिया जाये कि वह अपने को सहज महसूस करें तथा वहॉ पहुँचने पर उन्हें बाहरी व्यक्ति के रुप में महसूस न हो।

- प्रतिभागियों को तत्काल निर्देशित किया जाये कि वह अपने से सम्बन्धित समुदाय के प्रस्तुतीकरण को दीवार पर लगाने में समुदाय की सहायता करें। आप अन्तिम समय में तैयारियों को अन्तिम रुप देने में जहॉ कहीं आवश्यक हो सहायता दे सकते हैं।

- समुदाय के प्रस्तुतीकरण को प्रदर्शनी के रुप में लगाने के लिये पर्याप्त समय दें। प्रत्येक गॉव के चार्ट एवं पोस्टर को प्रदर्शित करने हेतु पर्याप्त जगह दिया जाये। यह ध्यान में रखा जाये कि चार्ट और पोस्टर बहुत करीब-करीब न लग जायें वरना प्रस्तुतीरकरण के समय अव्यवस्था फैल सकती है तथा एक दूसरे की आवाज से इतना शोर होगा कि प्रस्तुतीकरण ठीक से नहीं हो पायेगा।

- समुदाय के सदस्यों से कहें कि अपनी प्रस्तुतीयों के ऊपर अपने गॉव का नाम बड़े अक्षरों में लिखें। सभी प्रस्तुतीयों की नम्बरिगं कर दें ताकि समूहों को चक्रानुक्रम में प्रत्येक प्रस्तुतीकरण के लिये जाने में शंका न हो।

- प्रतिभागियों से कहें कि समुदाय के सदस्यों के प्रस्तुतीयों की जॉच कर लें कि प्रत्येक प्रस्तुतीकरण में खुले में शौच से विमुक्ति की तिथियां साफ-साफ लिखी हों तथा क्या खुले में शौच से विमुक्त होने के बाद होने वाले उत्सवों में प्रतिभागियों को आमंत्रिम करना चाहेंगें।

- समुदाय के एक या दो व्यक्तियों को प्रस्तुतीकरण हेतु कहें तथा यह सुनिशिचित करें कि समुदाय के सदस्यों के हाथ में व्याख्या करने हेतु प्वांटर अथवा स्टिक अवश्य हो और उनके पास पानी की बोतल रखी हो ताकि प्यास लगने पर पानी पी सकें।

- एक बार समुदाय के प्रस्तुतीकरण करने वाले लोग अपनी जगह पर खड़े हो जायें तो अन्य लोगो को प्रस्तुतकर्ता के पास खड़े होने को कह दें। ऐसे तीन या चार व्यक्ति प्रत्येक समुदाय से हो सकते हैं।

- यह पहले से ही सूचित कर दें कि सीटी के बजने पर बराबर की संख्या में प्रतिभागी समुदाय द्वारा किये जा रहे प्रस्तुतीकरण के समक्ष पहुँच जायेगें तथा निर्धारित अवधि के बाद सीटी बजने पर चक्रानुक्रम में आगे बढ़ते रहेंगें।

- प्रस्तुतीकरण करने वालों से आप कहें कि अपनी प्रस्तुती में खुले में शौच से विमुक्त होने की अपनी योजना का विवरण प्रस्तुत करें। 5 या 10 मिनट के उपरान्त पुनः सीटी बजने पर प्रतिभागी समुदाय के दूसरे प्रस्तुतीकरण के पास चले जायें।

- अगर 10 समुदाय के लोग प्रस्तुतीकरण कर रहे हों तो इस प्रकार से 9 चक्र चलेंगें।

- कुछ प्रतिभागियों से आप कहें कि समुदाय के सदस्यों से हाथ धोने की व्यस्थाओं के बारे में पूछें। अगर ऐसा है तो कहॉ और कैसे स्पष्ट किया जाना चाहिये।

- यह सुनिशिचित किया जाये कि प्रत्येक प्रस्तुतीकरण के उपरान्त प्रस्तुतकर्ताओं की प्रशंसा की जाये तथा ताली बजायी जाये।

- आप महत्वपूर्ण अतिथियों के साथ समुदाय के प्रस्तुतीकरण में उपस्थित रहें। यदि आपस में प्रश्न व उत्तर का सत्र चल रहा हो तो समय पर ध्यान न दें। महत्वपूर्ण अतिथि समुदाय के साथ सीधे बातचीत से ही पूर्ण रुप से सहमत हो पाते हैं।

समुदाय के प्रस्तुतीरण के बाद खुला सत्र

- जब समुदाय के सदस्य प्रशिक्षण कक्ष में प्रवेश करें तो सभी प्रतिभागियों से कहें कि इनका खड़े होकर गर्मजोशी से ताली बजाकर स्वागत करें।

बाक्स 2 श्रेष्ठ कार्य करने वाले समर्थक (चैम्पियन) की भूमिका

जिम्बाब्वे में चोमा जिले के प्रमुख माचा राष्ट्रीय स्तर पर सी.एल.टी.एस. को आगे बढ़ाने वाले श्रेष्ठ समर्थक के रुप में ऐसे ही एक प्रस्तुतीकरण में प्रतिभाग करने के उपरान्त उभर कर आये। इन्होंने समुदाय का प्रस्तुतीकरण में संयोगवश प्रतिभाग किया था। केन्या के मोम्बासा में स्वास्थ्य विभाग के राज्यमंत्री ने समुदाय द्वारा दिये गये प्रस्तुतीकरण में उपस्थित रहने के उपरान्त सी.एल.टी.एस. को पूर्ण सहयोग देने की प्रतिज्ञा की।

माली में कोलोकानी के पास के गॉव में ट्रिगरिगं के 24 घण्टे के भीतर किये गये वीडियो रिकार्डिगं को यूनीसेफ माली के निकोलस ओसबर्ट द्वारा अन्य आमंत्रित समुदाय के लोगों के समक्ष दिखाते हुए। ये लोग अन्य गॉवों से अपनी प्रस्तुतीकरण के लिये आये हैं। गॉव के लोग अपने गॉव नयी ऊर्जा के साथ वापस हुए।

- यह सुनिश्चित करें कि समुदाय के सदस्य प्रशिक्षण कक्ष में आगे बैठें। प्रतिभागियों को हॉल में उनके पीछे खड़ा होने को भी कह सकते हैं।

  समुदाय के सदस्यों का व्यक्तिगत रुप से स्वागत करें तथा यह कहें कि आप लोग हमारे लिये गुरु हैं। हम सभी ने पिछले कुछ दिनों में बहुत कुछ सीखा है।

  समुदाय के सदस्यों को एक-एक समूह में चर्चा कक्ष में खड़ा होने का अवसर दें तथा उनसे सम्बन्धित गॉव का नाम पुकारें तथा समुदाय के सदस्यों को स्वयं अपना परिचय देने को कहें। प्रत्येक गॉव के परिचय के उपरान्त ताली बजाकर उनकी प्रशंसा करें।

- समुदाय के सदस्यों को आमंत्रित किया जाये कि यदि उन्हें अलग से कुछ कहना है तो कह सकते है।

- दूसरे और तीसरे दिन की ट्रिगरिगं के दौरान ट्रिगर हुए समुदायों के क्रियाओं का किये गये वीडियोग्राफी के सम्पादित रुप को दिखाया जाये। यह बताया जाये कि ट्रिगरिगं के 24 से 48 घण्टों के भीतर क्या हुआ है। ऐसे समुदाय के सदस्य जिन्होंने ट्रिगरिगं के उपरान्त सामूहिक प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं तथा उनकी वीडियोग्राफी हुई है उन्हें प्रोत्साहित करें। उन्हें अपने स्थान पर खड़ा होने को कहें तथा उनका ताली बजाकर स्वागत किया जाये।

- समुदाय द्वारा बनाये गये खुले में शौच के मानचित्रीकरण में से किसी एक को चुनें जो प्रस्तुतीकरण में उपयोग में लाया गया हो। अन्य समुदाय के सदस्यों को दिखायें कि गॉव के लोग किस तरह रंगीन मार्कर तथा चिन्हों का प्रयोग अपने प्रतिदिन के तथा साप्ताहिक प्रगति के अनुश्रवण के लिये करते हैं। उदाहरण के लिये जिस समुदाय के मानचित्र का उपयोग किया जा रहा है उसमें से किसी एक सदस्य को बुलायें तथा यह पूछें कि इस मानचित्र में आप अपना घर बताईये। फिर उससे पूछिये कि आप अपने घर के ऊपर निशान कब लगाना चाहेगें। निशान लगाने से पहले यह ध्यान दिलायें कि वह तीन बातों का ध्यान रखे - 1. मक्खी अवरोधक गढ्ढे/अन्य शौचालय 2. साबुन या राख से हाथ धोने की व्यवस्था 3. परिवार के प्रत्येक सदस्य जब शौचालय का उपयोग प्रारम्भ कर दें।

- यह ध्यान में रखें कि उस व्यक्ति के द्वारा तीनों बातों का विस्तार से वर्णन सभी के समक्ष किया जाये। उसके बाद वह मानचित्र पर निशान लगाये। समुदाय के दूसरे सदस्यों से कहा जाये कि अगर आप चाहते हैं तो आप अपने विचार रख सकते है।

- समुदाय के सदस्यों से कहें कि आप लोगों में से कौन व्यक्ति इस बात का निरीक्षण व जॉच करेगा कि प्रत्येक परिवार के सदस्य सही निशान लगा रहे हैं जो सभी को स्वीकार्य हो।

- स्पष्ट रुप से यह घोषणा कर दी जाये कि जो भी मानचित्र तथा चार्ट गॉव के लोगों के द्वारा प्रस्तुतीकरण के समय बनाया गया था। वह गॉव के समुदाय की सम्पत्ति है तथा वापस जाते समय उन्हें गॉव मे वापस ले जायें। सामुदायिक अनुश्रवण के लिये इन मानचित्रों को गॉव में सार्वजनिक तथा सभी व्यक्तियों के लिये सुविधाजनक स्थल पर लगाया जाना चाहिये।

- दीवार पर लगाये गये समुदाय द्वारा बनाये गये चार्टो में अंकित खुले में शौच से विमुक्त होने की घोषणा का संक्षिप्तीकरण करें तथा उस सुगमकर्ता का नाम भी बतायें जो उस गॉव में फालोअप के लिये जिम्मेदार हो। मुख्य स्वाभाविक नेता तथा खुले में शौच से विमुक्ति की तिथि तथा उनके मोबाईल नम्बर को भी स्पष्ट किया जाये। प्रत्येक चार्ट को एक के बाद एक पढ़ा जाये तथा उनकी ताली बजाकर प्रशंसा भी की जाये।

बाक्स न0 3: हाथ धोना एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यवहार

पूरे विश्व में सैकड़ों सी.एल.टी.एस. प्रक्रिया से ट्रिगर हुए समुदायों के मनोविज्ञान के बारे में मेरा अनुभव कमोबेश एक तरह का है। पीढ़ियों से खुले में शौच करते आ रहे समुदायों में शौचालय बनवाने के विचार के प्रति अत्यधिक उत्तेजना रहती है। यह उत्तेजना स्वच्छता एवं आरोग्य के अन्य व्यवहारों के ऊपर तात्कालिक रुप से प्रबल हो जाता है जैसे कि : हाथ धोना, मलद्वार की सफाई तथा सफाई के जल का निस्तारण, नाखून काटना, शौचालयों में चप्पल का उपयोग इत्यादि। तथापि कुछ अपवादों को छोड़कर मैने अधिकतर देखा है कि ट्रिगर हुए समुदाय उपरोक्त महत्वपूर्ण बातों पर तुरन्त अथवा बाद में ध्यान अवश्य देते हैं। उपरोक्त सभी एक के बाद एक क्रम से स्वीकार कर लिये जाते हैं यदि प्रारम्भ में सामूहिक व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से समुदाय खुले में शौच की आदतों से विमुक्त हो जाता है। कुछ समुदायों के मस्तिष्क में अन्य ये बातें अन्य समुदायों की अपेक्षा तेजी से आती हैं। मैने शौच के बाद नियमित रुप से हाथ धोने की आदतों की तरफ लोगों को बढ़ने में समय की दृष्टि से काफी विभिन्नता देखा है। कुछ समुदायों में यह आदत लगभग एक साथ आती है। इन्डोनेशिया के पूर्वी सुमात्रा में खुले में शौच से विमुक्त समुदाय में मैने देखा है कि समुदाय के लोग पूरे उत्साह के साथ शौच के बाद अपने शौचालय के पैन को साबुन से नियमित रुप से धोते हैं जबकि शौच के उपरान्त अपने हाथ को तब तक नहीं धोये जब तक ट्रिगरिगं के उपरान्त फोलोअप बैठक में इस बात की चर्चा नहीं हुई। इसका तत्काल असर हुआ और एक दिन के भीतर में ही 260 परिवारों वाले समुदाय तत्काल साबुन का उपयोग करने लगे। इससे यह सीख मिलती है कि खुले में शौच से विमुक्ति का स्तर प्राप्त करना स्वच्छता और आरोग्यता के बहुत से व्यवहार के परिर्वतन का पूर्वगामी है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर दोनों पर हो सकता है। मैने खुले में शौच से विमुक्त तथा खुले में शौच करने की आदतों वाले गॉवों में हाथ धोने की आदतों के लिये चलाये जा रहे अभियानों के परिणामों के स्थायित्व तथा लगाये गये कीमत में भी विभिन्नता पाया है। सुगमकर्त्ता के लिये यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि वह इस महत्वपूर्ण पहलू पर सावधान रहे और किसी भी ट्रिगर हुए समुदाय को हाथ धोने के सम्बन्ध में सलाह देने अथवा निर्देशित करने का प्रयास तब तक ना करे, जब तक कि समुदाय स्वयं प्रारम्भ न करे। अच्छी बात यह है कि आप सही समय का इन्तजार करें, ज्यों ही समुदाय का कोई व्यक्ति ट्रिगरिगं की प्रक्रिया के समय अथवा उसके उपरान्त हाथ धोने के ऊपर चर्चा करता है, उस समय आप बातचीत के माध्यम से प्रश्न पूछें जैसे : क्या होता है अगर एक व्यक्ति शौचालय से आने के बाद राख या साबुन से अपना हाथ नहीं धोता ? क्या ऐसी स्थिति में वह अपने गॉव को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर सकेगा ? क्या खुले में शौच से 100 प्रतिशत विमुक्त गॉव कह सकते हैं जबकि कुछ लोग शौच के उपरान्त साबुन से हाथ नहीं धोते ? कौन पीड़ित है ? क्या किसी को इस आदत के लिये प्रयास करना चाहिये जैसा कि खुले में शौच से विमुक्ति के लिये किया है ? यदि हॉ तो क्या व्यवस्थाएं होंगी ?

सबसे उपयुक्त समय इस बात की चर्चा का तब है जब समुदाय अपने गॉव को खुले में शौच से विमुक्त करने की कार्ययोजना को प्रस्तुत करता है। चक्रीय ढ़ग से हो रहे प्रस्तुतीकरण में समुदाय की प्रस्तुतीयों को सुन रहे अन्य समुदाय से पूछें। जब इस तरह का प्रश्न एक बार ट्रिगर हुए समुदाय से पूछा गया तो उसने कहा, ''यदि गॉव का प्रत्येक व्यक्ति शौच के लिये शौचालय का उपयोग करता है तो कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का मल नहीं खाता है परन्तु यदि कोई व्यक्ति शौच के उपरान्त साबुन या राख से अपना हाथ नहीं धोता है तो वह स्वयं अपना मल खाता है''। इस समय प्रस्तुती दे रहे समुदाय के सदस्यों से हाथ धोने के तरीके को अपनाने हेतु बनाये गये खाका को मानचित्र अथवा चार्ट में दर्शाने के लिये कहें। उनके हाथ में मार्कर दें तथा चार्ट पर चित्र बनाने को कहें। मैने खुले में शौच से विमुक्त समुदायों द्वारा हाथ धोने के विभिन्न लुभावने तरीकों तथा उपकरणों को विकसित करते हुए ईथोपिया, ईरिट्रीया, माली तथा अन्य देशों में देखा है।

- अन्त में समुदाय के प्रस्तुतीकरण के अवसर पर आये हुए अतिमहत्वपूर्ण अतिथियों को बोलने का अवसर दें।
- समुदाय के सदस्यों को उनके प्रस्तुतीकरण तथा खुले में शौच से विमुक्ति की बनायी गयी योजना को सबके समक्ष रखने के लिये धन्यवाद दें।
- वहॉ उपस्थित सभी व्यक्तियों से कहें कि आप खड़े होकर समुदाय के सदस्यों को विदा करें।
- समुदाय के सदस्यों को दोपहर के भोजन पर साथ में ले जायें तथा दोपहर के भोजन के उपरान्त प्रशिक्षण के व्यवस्थापकों द्वारा समुदाय के सदस्यों की वापसी के लिये लगाये गये वाहनों के पास जाकर उन्हें विदा करें।

11.2 रिपोर्ट लेखन

कार्यशाला के प्रारम्भ होने से पहले प्रथम दिवस को ही प्रतिभागियों को बता दें कि प्रत्येक समूह को प्रत्येक दिवस का रिपोर्ट लिखना है। अन्त में गॉव में ट्रिगरिगं अभ्यास के उपरान्त तैयार किये गये उनके प्रस्तुतीयों को जोड़कर इसे अन्तिम रुप दिया जा सकता है। प्रतिभागियों को ये स्मरण दिला दें कि उनकी यह रिपोर्ट, उन गॉवों के लिये जहॉ उन्होंने ट्रिगरिगं किया है स्वच्छता कार्यक्रम की आधार रेखा होगी। गॉव को खुले में शौच से विमुक्त हो जाने के उपरान्त प्रतिभागियों द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट उस गॉव के अनुश्रवण, उपलब्धियों तथा सुधारों के स्तर को मापने हेतु उपयोग में लाया जायेगा। प्रतिभागियों को

अपनी रिपोर्ट तैयार करके कार्यशाला आयोजन करने वाली संस्था को सौंपकर कार्यशाला स्थल को छोड़ना चाहिये। कृपया परिशिष्ट 'च' देखें।

12. प्रतिभागियों की कार्ययोजना तथा उनका प्रस्तुतीकरण

- समुदाय के प्रस्तुतीकरण के उपरान्त प्रतिभागियों से कहें कि वे जिन संस्थाओं से आये हैं अथवा जिन संगठनों के साथ काम करते है, उसके अनुसार समूह बना लें।
- उन्हें छः महीने की कार्य योजना विकसित करने को कहें तथा इसके लिये पर्याप्त समय दें। उनसे कहें कि आपस में चर्चा करके यह तय करें कि वे क्या करेंगें और कैसे करेंगें तथा इस कार्यशाला से क्या सीख कर जा रहे है। इस अभ्यास को कार्यशाला समाप्ति से एक दिन पूर्व की सायं को प्रतिभागियों को दिया जा सकता है जिससे कि अन्तिम दिवस समय की बचत हो सके।
- कार्यशाला को आयोजित करने वाली संस्था, कार्यशाला के दौरान ट्रिगर हुए गॉवों में फालोअप की व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने की कार्ययोजना का विवरण प्रस्तुत करे।
- कार्यशाला से वापस जाने के बाद प्रतिभागियों द्वारा भविष्य की कार्ययोजना तैयार होने पर इसका प्रस्तुतीकरण चर्चा कक्ष में ही किया जाये। प्रस्तुतीकरण के उपरान्त प्रश्नोत्तर का सत्र भी हो।
- आपकी जिम्मेदारी संस्थाओं, प्रशिक्षकों तथा सुगमकर्ताओं को अन्य लोगों को प्रशिक्षण देने के प्रति प्रोत्साहित करने की है। जहॉ प्रतिभागियों के सामूहिक प्रयास से शुरुआती चरण में अच्छे परिणाम मिल सकते हैं वहॉ प्रशिक्षण आयोजित करें। प्रशिक्षक को अपने साथ प्रशिक्षण पाये लोगों के साथ प्रथम प्रशिक्षण को पूरे विश्वास के साथ आयोजित करना चाहिये।

13. मूल्यांकन

प्रतिभागियों द्वारा कार्यशाला का मूल्यांकन कई प्रकार से किया जा सकता है। सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षण में उपयोग में लायी गयी पद्धतियों एवं दृष्टिकोण के सम्बन्ध में कोई खास विशेषता नहीं है आप अपने अनुभवों तथा प्रतिभागियों के अनुभवों के आधार पर मूल्यांकन का प्रारुप विकसित कर सकते हैं।

14. प्रबन्धकों तथा वित्तपोषकों की बैठक

कार्यशाला के अन्तिम दिवस अथवा उसके बाद वरिष्ठ अधिकारियों तथा प्रबन्धकों की बैठक का आयोजन किया जाना उपयुक्त होगा जिसमें ट्रिगर किये गये समुदायों तथा स्वाभाविक नेताओं को भी आमंत्रित किया जाये। स्वाभाविक नेता और प्रशिक्षणार्थी अपने अनुभवों तथा अपनी वचनबद्धता के सम्बन्ध में बतायें। इस तरह की बैठक अकसर सकारात्मक फालोअप तथा प्रशिक्षण के परिणामों के लिये अत्यन्त प्रभावी है। इसमें उच्च स्तर का सहयोग भी मिलता है। अगर समय हो तो इस तरह की बैठक समुदायों से उनकी प्रगति जानने के लिये आयोजित होने वाली बैठकों के साथ की जा सकती है।

15. फालोअप

15.1 अनौपचारिक मूल्यांकन

प्रशिक्षण कार्यशाला में सी.एल.टी.एस. से सम्बन्धित विकसित भावना एवं विश्वास प्रतिभागियों के लिये सामान्य प्रमाण है। वित्त पोषण करने वाली संगठनों को उन प्रतिभागियों के बारे में अवश्य बतायें जिनके पास सी.एल.टी.एस. के प्रति विश्वास हो तथा जो सी.एल.टी.एस. सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण से जुड़ना चाहते हैं।

15.2 ट्रिगरिगं के उपरान्त समुदाय में फालोअप को सुनिश्चित करना

ट्रिगरिगं के उपरान्त की फालोअप गतिविधियों को विस्तार से हस्तपुस्तिका के अध्याय 4 में बताया गया है। व्यावहारिक एवं नैतिक कारणों से ट्रिगर हुए समुदायों में फालोअप अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

16. प्रतिभागियों के लिये सहयोग एवं परामर्श

प्रशिक्षणार्थियों को ट्रिगरिगं के अपने अनुभवों को और गहरा और विस्तृत करने की आवश्यक्ता है। यह लोग अकसर कार्यशाला के वातावरण के बाहर कठिनाईयों को महसूस करते हैं तथा इनके समक्ष समुदायों की चुनौतियां भी होती है। ऐसे प्रशिक्षणार्थियों को जहॉ तक हो सके परामर्श एवं सहायता प्रदान की जानी चाहिये -

- अगर आप परामर्शदाता के रोल में हैं तो ई-मेल, फोन पर अथवा व्यक्तिगत रुप से सम्पर्क में रहें।

- यह सुनिश्चित करें कि प्रशिक्षणार्थियों को उनके संगठन में कार्यरत वरिष्ठ लोगों से सहयोग मिले।
- उनकी उपलब्धियों को महत्ता दें।
- जहॉ कहीं सम्भव हो प्रमुख प्रशिक्षक को अपने प्रशिक्षणार्थी के साथ रहना चाहिये, जब वह ट्रिगरिगं के लिये अथवा दूसरों को प्रशिक्षण देने के लिये जाता है।
- कुछ अन्तराल पर प्रशिक्षणार्थियों के साथ प्रशिक्षण पाये लोगों के बीच बैठकों का आयोजन आपसी अनुभवों से सीखने तथा प्रोत्साहित करने के लिये करें।

अन्तिम बात

इस प्रशिक्षक मार्गनिर्देशिका में मैने उन स्थितियों की व्याख्या करने का प्रयास किया है जो चर्चा कक्ष अथवा गॉव में उत्पन्न हो सकती हैं तथा उनको हल कर सकने के सम्भावित तरीकों की भी व्याख्या की है। मैने यह भी व्याख्या किया है कि सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षण कार्यशाला क्यों और कैसे अन्य कार्यशालाओं से अलग है। यहॉ कोई पक्के नियम नहीं हैं परन्तु सहज बुद्वि अथवा समान्य नियमों की कमी किसी भी स्तर पर नहीं होनी चाहिये। सी.एल.टी.एस पद्वति में विलक्षण बात यह है कि यह एक ऐसा वातावरण तैयार करती है जहॉ दूसरे लोगों के दृष्टिकोण, व्यवहार अथवा उत्साह से सीखने का एवं अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है। सीखने की इस पद्वति के लिये इस मार्ग निर्देशिका का उपयोग करने वाले सभी लोगों की सफलता की मैं कामना करता हूँ।

भाग : 3

परिशिष्ट

परिशिष्ट क : प्रशिक्षण कार्यशाला हेतु सामग्री एवं उपकरण

क्योंकि 5 दिन का समय सीखने तथा आपसी अनुभव बॉटने के लिये बहुत कम है अतः कार्यशाला को प्रभावी एवं ठीक ढ़ग से चलाना महत्वपूर्ण है। इस स्थिति में कार्यशाला प्रारम्भ होने से पहले प्रशिक्षक द्वारा यह सुनिश्चित कर लिया जाये कि आवश्यक प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध है तथा सभी दृश्य-श्रव्य उपकरण ठीक से कार्य कर रहे हैं। 50 प्रतिभागियों के लिये सी.एल.टी. एस. की प्रशिक्षण कार्यशाला हेतु आवश्यक सामग्री की चैक लिस्ट निम्नवत् हो सकती है -

- वीडियो कैमरा समस्त सहायक उपकरणों जिसमें बैटरी, मल्टीमीडिया अथवा टी.वी. से कैमरा को सीधे जोडने वाला तार तथा अच्छी आवाज वाला स्पीकर सम्मिलित है।
- एल.सी.डी. प्रोजेक्टर एवं मल्टीमीडिया के उपकरण जो पावर प्वांट प्रस्तुतीयों को दिखाने में सक्षम हों।
- तार रहित माईक, कम से कम तीन।
- बड़ी स्क्रीन।
- यदि बिजली की सप्लाई अविश्वसनीय हो तो जनरेटर की व्यवस्था।
- बड़े फ्लिप चार्ट, कम से कम 200 पेज।
- फ्लिप चार्ट लगाने के लिये चार स्टैंड क्लिप सहित।
- पोस्टकार्ड आकार के रंगीन कार्ड (सफेद, नीला, पीला, लाल, हरा इत्यादि) प्रत्येक तरह के 200 कार्ड।
- मास्किगं टेप (कम से कम 8 रील)
- रंगीन मार्कर (नीला, लाल, हरा और काला) प्रत्येक रंग के तीन व चार डब्बे।
- कैंची (पॉच जोड़े)
- रंगीन चॉक (2-3 बॉक्स)
- रंगीन पाउडर (सस्ते दरों के 1 से 2 किलो पीला, नीला, लाल इत्यादि)
- बुरादे का बोरा, प्रत्येक टीम के लिये एक बोरा
- मध्यम आकार के बीज (500 से 750 ग्राम अलग-अलग किस्म के)। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध बीज का प्रयोग चर्चा कक्ष अथवा गॉव के अभ्यास में किया जा सकता है।

- 6-8 सफेद बोर्ड अथवा मुलायम बोर्ड पिन के साथ तथा सफेद बोर्ड मार्कर।
- प्रशिक्षण हॉल की दीवारों पर समूह कार्यो के बाद निकलने वाले फ्लिप चार्ट को लगाने के लिये पर्याप्त जगह हो।
- जहॉ कहीं उपलब्ध हो कड़ी एवं हल्के बड़ी सीट की व्यवस्था हो जैसे : पैराशूट, चिपकने वाला स्प्रे (3 बोतल) जो इस कपड़े को चिपकने लायक बना दे। प्रतिभागियों द्वारा विचार मंथन के दौरान प्रयोग में लाये गये कार्डो को प्रदर्शित करने हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है।

परिशिष्ट ख : सीखने का अनुभवात्मक चक्र

सीखने की यह पद्धति प्रमाण पर आधारित सिद्धान्तों से पैदा हुआ है। सीखने का अनुभवात्मक चक्र प्रशिक्षण के सत्रों के खाका को तैयार करने हेतु व्यवहारिक मार्गनिर्देश देते हैं। सीखने के अनुभवात्मक चक्र के अनुरुप ही प्रशिक्षण की रुपरेखा तैयार की जाती है -

1. यह वास्तविक जीवन से सम्बन्धित है।
2. यह प्रतिभागियों को अपने विचार तथा भावनाओं को व्यक्त करने तथा अपने पूर्व के ज्ञान तथा अनुभवों को बताने पर बल देता है।
3. यह मूल्यांकन पद्धति को समन्वित करता है जो प्रशिक्षणार्थी के बारे में उसकी प्रगति से सम्बन्धित फीडबैक तुरन्त देता है।

सीखने का अनुभवात्मक चक्र व्यक्तिगत स्तर पर तथा सामूहिक स्तर पर सीखने में तथा गतिविधियों में प्रयोग में लाया जाता है। सीखने के अनुभवात्मक चक्र के वर्णित सिद्धान्त का उपयोग सीखने के किसी भी विधि में प्रयोग में लाया जा सकता है।

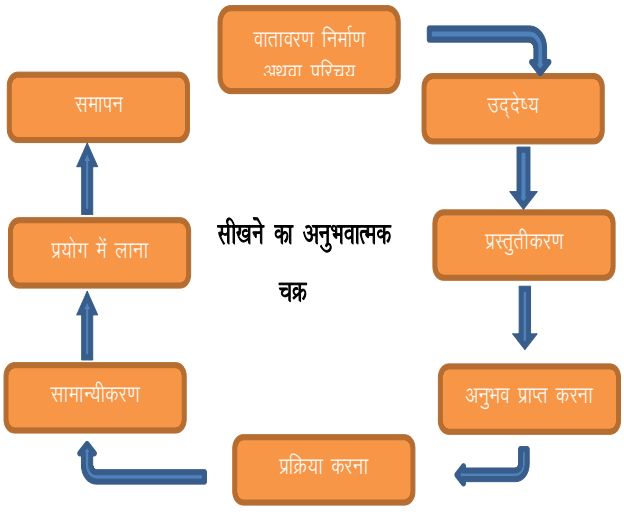

चरण 1 : वातावरण निर्माण तथा परिचय

- रुचि एवं उत्सुकता जागृत करें। प्रारम्भ में तेजी से सीखने वाले विषयों पर सोचना प्रारम्भ करते हैं।
- सीखने वालों को यह समझने में सहायता करें कि क्यों यह विषय उनके लिये आवश्यक है। कैसे यह आपके लिये उपयोगी होगा। सम्बन्धित अनुभव तथा कौशल सीखने की व्यक्तिगत या सामूहिक गतिविधि में सहायक है। प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकता तथा सीखने की रुचियों के लिये सीखने की कौन सी विधि अत्यधिक उपयोगी है इसकी सूचना एकत्रित करना महत्वपूर्ण है। सम्बन्धित अनुभवों, कौशल तथा पूर्णता को स्वीकारना सीखने वाले के लिये बहुत अधिक प्रेरणादायक होता है। विशेषकर जब सीखने के अनुभवों को क्रमबद्व तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

चरण 2 : उद्देश्य

- सीखने वालों को यह बतायें कि सीखने की गतिविधियों में प्रतिभाग करने के फलस्वरुप वह क्या करने लायक हो जायेगें। इस स्थिति पर सीखने वालों में यह स्पष्ट समझ विकसित करनी चाहिये कि कैसे सीखने के उद्देश्यों को हम अपने कार्यक्षेत्र के अपेक्षित परिणामों के साथ किस प्रकार जोड़ें।
- सीखने वाले को यह अवसर प्रदान करें कि वह सीखने के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की जा रही गतिविधियों को अपने व्यक्तिगत जीवन के कार्यो से जोड़ सके। सीखने के उद्देश्यों को सत्र प्रारम्भ होने से पूर्व जोड़े।

चरण 3 : परस्पर संवादात्मक प्रस्तुतीकरण

- विषय वस्तु को सम्बन्धित उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करें। प्रशिक्षणार्थियों से प्रश्न पूछें। स्पष्ट व्याख्या के लिये दृश्य-श्रव्य माध्यमों का प्रयोग करें। मुख्य बिन्दुओं को प्रकाश में लाने हेतु बीच-बीच में उन पर बल दें तथा संक्षिप्तीकरण करें।
- सीखने वाले को सिद्वान्त अथवा एक आदर्श/नमूने का ढॉचा प्रस्तुत करें जो बाद के अनुभवों का आधार बनता

है। अनुभव करने के उपरान्त लोग स्वीकार करने लगते हैं।

चरण 4 : अनुभव करना

- प्रशिक्षण के उद्देश्यों से निकली परिस्थितियों को बनायें तथा उसे अनुभव करने का अवसर दें। (यह किसी लघु नाटिका/नाटक/रोल प्ले/केस स्टडीज/महत्वपूर्ण घटना/ वीडियो फिल्म/छोटा समूह कार्य/अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण को प्रदर्शित करके करें। इनके अवलोकन की चैक लिस्ट दी जा सकती है।) यह सूचनाओं का सामान्य श्रोत होता है तथा सीखने वाला इस तरह की घटनाओं को देखकर आगे के सत्रों में विश्लेषण करता है।

- प्रशिक्षणार्थियों को यह अवसर प्रदान करता है कि जो कुछ उन्होंने सीखा है वह उसका वास्तविक अथवा कृत्रिम ढ़ंग से अभ्यास करे।

चरण 5 : प्रक्रिया करना/तुरन्त प्रतिक्रिया पाना

- सीखने वाले से उनके व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर उनकी प्रतिक्रिया प्राप्त करना तथा उन्हें यह सोचने के लिये चुनौती देना कि उन्होंने क्या सीखा।

- सीखने वाले का स्वयं पूर्ण किये हुए कार्यों पर प्रतिक्रिया देना तथा स्वयं की प्रगति पर दूसरों से फीडबैक प्राप्त करना।

चरण 6 : सामान्यीकरण

- सीखने वाले ने जो कुछ सीखा है उसको प्रशिक्षण सत्रों के उद्देश्यों के साथ जोड़ता है।

- सीखने वाला स्वयं सीखने के मुख्य बिन्दुओं की पहचान करता है।

चरण 7 : प्रयोग में लाना

- पीछे के चरणों से निकाले गये निष्कर्ष तथा उसमें अपनी अर्न्तदृष्टि का प्रयोग करके सीखने वाला यह पहचान करता है और बताता है कि -

  - कैसे अपनी सीख को वास्तविक कार्यस्थल पर प्रयोग करना है।
  - सीखने वाले अपनी सीख को वास्तविक कार्यस्थल पर प्रयोग में लाकर वास्तविक उपलब्धि तथा अपेक्षित उपलब्धि के बीच के अन्तर को कम करता है

- सीखने वालों को एक कार्ययोजना विकसित करने तथा उसको प्रयोग में लाने के लिये उत्साहित किया जाता है। इस बात की भी व्यवस्था की जाती है कि किस प्रकार नये ज्ञान एवं कौशल का उपयोग होगा।

- सीखने वालों के प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है जैसे कि इसके बाद क्या ? और जो कुछ सीखा है उसका उपयोग कैसे किया जा सकेगा ?

- सीखने वालों को इस बात को ध्यान में रखने हेतु उत्साहित किया जाता है कि जो कुछ आपने सीखा है अगर उसको प्रभावी ढ़ग से वास्तविक कार्यस्थल पर उपयोग नहीं करते हैं तो परिणाम क्या होगा ? विशेष रुप से अपेक्षित उपलब्धि न होने के परिणामों के बारे में।

चरण 8 : समापन

- सीखने हेतु की गयी गतिविधियों तथा किये गये हस्तक्षेप का संक्षिप्तीकरण।

- प्रशिक्षण की गतिविधियों को वास्तविक कार्यों से सम्बन्धित उद्देश्यों के साथ जोड़े और यदि उद्देश्य पूरे हो गये हों तो उसका निर्धारण करें।

- प्रशिक्षण तथा सीखने के उद्देश्यों को आगे के सत्रों के साथ जोड़ें।

- प्रशिक्षणार्थियों को उनके योगदान तथा सहभागिता के लिये धन्यवाद दें। प्रशिक्षण सत्रों के उपरान्त प्रशिक्षणार्थियों के पास यदि प्रश्न हों तो उसके लिये अपनी उपलब्धता सुनिश्चित करें।

सीखने के अनुभवात्मक चक्र के विस्तृत अध्ययन हेतु -

In: *Learning for Performance : A Guide and Toolkit for Health Worker Training and Education Programmes.*

Murphy C., Harber L., Kiplinger N, Stang A. and Winkler J, Capacity Project 2007

http://www.intrahealth.org/lfp/step9.html

Adapted from:

Training Resources Group, Inc. (TRG), Design components of an experiential session.

Alexandria, VA: Training Resources Groups, Inc. (TRG), 1997

University Associates, Inc. The experiential learning cycle. San Diego, CA: University Associates, Inc., 1990

परिशिष्ट ग : प्रशिक्षण कक्ष के अभ्यास

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण कक्ष में यह ध्यान में रखना चाहिये कि उदासीन, लम्बे खीचने वाले भाषण नहीं होने चाहिये जिससे कि कुछ प्रतिभागी ही लाभान्वित हो सकें। यह ध्यान में रखें कि जो कुछ आप सुगम कराने जा रहे हैं वह ''अध्यापन'' नहीं अपितु ''प्रशिक्षण'' है। यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि हम अनुभवों से सीखते हैं। ध्यान केन्द्रित करने की भी एक सीमा है। 20 मिनट से अधिक ध्यान केन्द्रित करना कठिन है। निम्न मार्गनिर्देशों का पालन करें।

क्या करें -

- कृपया भाषण नहीं व्याख्यान का प्रयोग करें।
- हमेशा सहयोगी प्रशिक्षक एवं सहयोगी सुगमकर्ता का प्रयोग करें जिससे चेहरा, व्यक्तित्व, तरीका तथा जेण्डर (महिला एवं पुरुष चेहरों) में परिर्वतन आता रहे। एकरुपता से बचें।
- साफ तथा जोर से बोलें जिससे कक्षा में सभी लोग सुन सकें।
- उचित शरीर की भाषा तथा प्रशिक्षणार्थियों के साथ ऑख का सम्पर्क बनाये रखें।
- अधिक से अधिक वास्तविक उदाहरण तथा वास्तविक घटनाओं पर आधारित अध्ययन का प्रयोग करें।
- समूह कार्य तथा समूह चर्चा सत्र चलायें जिसके उपरान्त बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण करायें।
- सहभागी तरीकों के अभ्यास के लिये प्रशिक्षण और प्रदर्शन के बाद अनौपचारिक पूर्वाभ्यास करायें।
- चर्चा कक्ष में समुदाय के सदस्यों तथा स्वाभाविक नेताओं के आमने-सामने बात करायें।
- दृश्य-श्रव्य संसाधनों का प्रयोग करें।
- चर्चा कक्ष में हॅसी-मजाक तथा उत्साहित करने के प्रसंगों का प्रयोग करें।
- गलतियों को होने दें- सफलताओं के बजाय गलतियों से अधिक सीख मिल सकती है।
- शर्मीले एवं अपने आप में रहने वाले प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- उन लोगों को प्रोत्साहित करें तथा प्रशंसा करें जो नये विचारों, तरीकों अथवा सुगम कराने की नयी विधियों को सामने लायें।
- हमेशा बहुत अच्छे प्रशिक्षणार्थी पर ध्यान केन्द्रित न करें। कक्षा में सभी लोगों को बोलने एवं प्रदर्शन करने का अवसर दें।
- प्रत्येक प्रतिभागी की आवश्यकताओं को देखते हुए व्यक्तिगत रुप से ध्यान दें।
- प्रशिक्षण सत्र को लम्बा चलाते समय प्रतिभागियों की एकाग्रता और रुचि को ध्यान में रखें।
- प्रत्येक प्रतिभागी का सम्मान करें।
- किसी प्रशिक्षणार्थी विशेष की समस्याओं को प्रशिक्षण सत्र के उपरान्त हल करें।
- यदि प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण को पूरी तरह अपने नियत्रंण में ले लें तो उस स्थिति में चर्चा कक्ष की पूरी व्यवस्था प्रशिक्षणार्थियों पर छोड़ दें। (यदि वो प्रशिक्षक हों।)
- साफगोई को बनायें रखें तथा प्रशिक्षण के प्रत्येक चरण पर ध्यान दें। आप कार्यशाला के दौरान तय किये गये उद्देश्यों को अपने लिये तथा दूसरों को याद दिलाने के लिये उपयोग में ला सकते हैं।
- स्वयं को समय पर बनाये रखने के प्रति दृढ़ रहें।
- प्रत्येक समय उत्साह बनाये रखें।

क्या न करें -

- कृपया भाषण न दें।
- प्रशिक्षण सत्र से पूर्व प्रशिक्षणों का मैनुअल तथा हैण्डआउटस वितरण न करें।
- प्रशिक्षणार्थियों को ट्रिगरिगं अभ्यास के उपरान्त प्रत्येक दशा में परिणाम लाने के लिये दबाव न बनायें।
- प्रत्येक विषय अपने नियंत्रण में न रखें तथा प्रत्येक कार्य के लिये निर्देशित न करें।
- ऐसा व्यवहार न करें जिससे यह पता चलें कि आप सब कुछ जानते हैं।
- प्रासंगिक न होने पर भी दूसरे के विचार अथवा दृष्टिकोण को खारिज न करें।
- उत्साह को नष्ट न होने दें तथा हतोत्साहित न करें।

टिप्स -

- यह ध्यान रखें कि कभी दो प्रशिक्षण के सत्र एक समान नही होते। प्रशिक्षण का सन्दर्भ, परिस्थिति, प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकता तथा स्तर को ध्यान में रखकर आप प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रुपरेखा बनायें। सी.एल.टी.एस का प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान के बजाय कला अधिक है। इसमें तात्कालिकता एवं लचीलापन की आवश्यकता रहती है। अपनी गतिविधि पर ध्यान रखें।
- प्रत्येक प्रशिक्षक अपने आप में विशेष होता है तथा उसके प्रशिक्षण के तरीके भी अपने आप में खास होते हैं। किसी एक व्यक्ति के दृष्टिकोण, व्यवहार एवं भाषा को अपनाना या किसी एक व्यक्ति की नकल करने से आपका मजाक बन जायेगा।

व्यवहार, दृष्टिकोण एवं सुगम कराने हेतु अभ्यासों के बारे में विस्तृत जानकारी आप रार्बट चैम्बर्स की पुस्तक "Participatory Workshop : a sourcebook of 21 sets of ideas and activities, Earthscan, London and Sterling VA, 2002." से प्राप्त कर सकते हैं।

परिशिष्ट घ : समुदाय में सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिंग एवं उनके स्वयं के विश्लेषण को सुगम बनाने हेतु क्षेत्र में उपयोग में लाने हेतु सामग्री की चेकलिस्ट

समस्त स्वयं के हाथ से कर के सीखने वाले स्थलीय कार्यशालाओं में सी.एल.टी.एस. की ट्रिगरिगं तथा समुदाय के विश्लेषण को सुगम कराना महत्वपूर्ण है। अतः मुख्य प्रशिक्षक तथा सुगमकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि गॉव में जाने वाले प्रत्येक समूह के पास सुगम कराने हेतु सामग्री का अपना स्वयं का पैकेट हो। मुख्य प्रशिक्षक को विभिन्न समूहों के प्रमुख सुगमकर्ता तथा बच्चों के समूहों के साथ सुगम कराने हेतु जाने वाले प्रतिभागी को गॉव में जाने से पहले आवश्यक सामग्री की अन्तिम रुप से जॉच कर लेनी चाहिये। इसकी सूची निम्न प्रकार हो सकती है-

1. रंगीन पाउडर, विशेष रुप से पीले पाउडर का पैकेट।
2. पर्याप्त मात्रा में लकड़ी का बुरादा (3 से 4 किलो प्रत्येक समूह के पास रहे। विशेषकर गॉव की आबादी व उसकी बसावट को ध्यान में रखकर।) बुरादा खुले में शौच को मानचित्र में दिखाने हेतु।
3. मार्कर (समुदाय को विश्लेषण हेतु कार्य करने के लिये ट्रिगरिगं के दौरान पर्याप्त मात्रा में मार्कर मिल जायें तथा कुछ मार्कर गॉव में छोड़ दें ताकि समुदाय अपना प्रस्तुतीकरण तैयार कर सकें।)
4. चार्ट पेपर (गॉवों में कम पैसे वाले शौचालय का खाका खीचने हेतु तथा गॉव वालों के लिये अपना प्रस्तुतीकरण बनाने हेतु)। कुछ चार्ट पेपर गॉव वालों के पास छोड़ देना चाहिये जिससे गॉव वाले ट्रिगरिगं के दौरान बनाये गये मानचित्र को चार्ट पर उतारेगें तथा कार्यशाला के अन्तिम दिन प्रस्तुतीकरण हेतु लेकर आयेगें।
5. रंगीन कार्ड।
6. मास्किगं टेप।
7. कैंची।
8. कैमरा।
9. पीने के पानी की बोतल (सील बन्द हो) और कुछ खाने की सामग्री। यह भोजन एवं मल के टूल को दर्शाने हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है। गॉव वालों से पीने का पानी तथा भोजन मौके पर यदि सम्भव है तो मॉगा भी जा सकता है।

10. जिस सुगमकर्ता को गॉव में पानी में मल के प्रदूषण की जॉच हेतु नमूने लेने हैं उन्हें चाहिये कि अपने साथ H_2S की शीशी अवश्य ले जायें।

11. स्थानीय परम्पराओं एवं सभ्यता के आधार पर सुगमकर्ता द्वारा गॉव वालों के साथ गपशप, बातचीत करनी चाहिये। मूँगफली, अखरोट अथवा सिगरेट इत्यादि गॉव के वरिष्ठ व्यक्तियों को उनके सम्मान में दिया जा सकता है। बच्चों के सुगमकर्ता को बच्चों के लिये कुछ टॉफी या चाकलेट ले जाया जाना चाहिये।

यह याद रखना चाहिये कि यह सब सामग्री बच्चों के लिये तथा वयस्कों के लिये अलग-अलग नहीं रखा जाना चाहिये। यह हमेशा उपयुक्त होगा कि इन सामग्री को अलग-अलग दो पैकेट में एक दिन पहले शाम को ही बना कर रख दें। प्रत्येक समूह का नाम पैकेट पर लिख दें ताकि बाद में सन्देह पैदा न हो। सामग्री की व्यवस्था के लिये एक छोटी टीम बनायी जानी चाहिये जो सामग्री को व्यवस्थित करके रखे जिसको समूह के लोग गॉव में ले जा सकें।

कार,बस अथवा गॉव में ले जाये जाने हेतु उपलब्ध कराये गये वाहन की व्यवस्था पहले ही हो जानी चाहिये तथा वाहन चालकों को पूर्व में ही बता दें। अकसर 2 या 3 समूह के लोग एक ही वाहन में जाते हैं और वह अलग-अलग स्थानों पर प्रतिभागियों को छोड़ती है। ऐसे में यह उपयुक्त होगा कि उस वाहन के चालक को गॉव का नाम व नक्शा दे दिया जाये।

समूहों के नाम तथा उनके भ्रमण हेतु निर्धारित किये गये सम्बन्धित गॉव को कागज में लिखकर वाहन के शीशे में चिपका देना चाहिये। समूहों को स्पष्ट किया जाना चाहिये कि वाहन किस रास्ते से उन्हें छोड़ते हुए जायेगा तथा ट्रिगरिगं के पश्चात किस रास्ते से वापस लेकर आयेगा।

परिशिष्ट ड. : पहले दिन की गॉव की ट्रिगरिगं के बाद सुगमकर्ता समूहों से पूछे जाने वाले प्रश्नों के कुछ उदाहरण

पहले दिन गॉव में ट्रिगरिगं के उपरान्त दूसरे दिन सुबह जब प्रत्येक समूह प्रशिक्षण कक्ष में उपस्थित हों तो निम्न प्रश्नों को फ्लिप चार्ट पर लिखकर समूहों से पूछना चाहिये तथा पूछने से पहले उन्हें समूहों में बैठकर चर्चा करने का समय दिया जाना चाहिये। चर्चा के उपरान्त उन्हें प्रस्तुतीकरण बनाने को कहा जाये।

व्यस्कों की सहभागिता के प्रश्न -

- आपने प्रारम्भ कैसे किया था ? पहला कार्य क्या किया था ?
- आपने वातावरण निर्माण कैसे किया था तथा निर्धारित विषय पर चर्चा कैसे प्रारम्भ हुई ?
- बच्चों को वयस्कों से कब अलग किया था ? क्या अलग किया जाना स्वाभाविक था ?
- सी.एल.टी.एस. के कौन से टूल का प्रयोग किया गया?
- क्या ठीक से कार्य किया तथा क्या कार्य नहीं किया ?
- किस तरह की कठिनाईयों का सामना किया ?
- किस तरह के टूल के प्रयोग में अधिक समय लगा ? कौन से टूल में प्रयोग करने से बातचीत के मौके अधिक पैदा हुए तथा समुदाय की सहभागिता बढ़ी ?
- किस समय प्रज्जवलन का समय आया ? किस टूल के प्रयोग के समय ?
- आपने इस समय को कैसे जाना ? क्या यह समय कुछ समय तक बना रहा तथा वहॉ से खुले में शौच से मुक्त होने की योजना की तरफ आगे बढ़े ?
- टीम वर्क कैसा था ? समूह के सदस्यों द्वारा दिये गये कार्यो को किया गया ? किस तरह की गलतियों को आपने चिन्हित किया ?
- कल गॉव में ट्रिगरिगं के दौरान किस चीज से आप आश्चर्यचकित हुए ?
- महिलाओं की सहभागिता कैसी थी ? (यदि महिलाओं को अलग से बैठाया गया हो)
- कल किये गये ट्रिगरिगं के परिणामों को आप कैसे ऑकेंगें ?
- क्या आपने वास्तविक स्वाभाविक नेताओं को चिन्हित किया तथा कार्यशाला के अन्तिम दिन के लिये आमंत्रित किया ?

- क्या गॉव वालों ने अपने गॉव को साफ करने तथा खुले मे शौच से मुक्त करने का निर्णय लिया ? यदि हॉ तो किस तिथि तक ?
- आपके समूह की सबसे महत्वपूर्ण सीख क्या है ?
- आपका समूह उपरोक्त के अतिरिक्त कोई नयी बात बताना चाहता है ?
- कल के अनुभव के आधार पर आपका समूह आज किस तरह अलग तरीके से कार्य करेगा अथवा अपनी रणनीति बदलेगा ?

बच्चों की सहभागिता के प्रश्न -

उपरोक्त प्रश्नों के अतिरिक्त बच्चों से सम्बन्धित प्रश्न निम्नवत् हो सकते है -

- बच्चों की रैली निकाली गयी ?
- खुले में शौच की प्रवृति के विरुद्व बच्चों के द्वारा नारे लगाये गये अथवा कविताएं पढ़ी गयी ?
- बच्चों का अपने अभिभावकों तथा अन्य लोगों के प्रति प्रस्तुतीकरण कैसा था ?
- बच्चों के विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण पर वयस्कों की प्रतिक्रिया कैसी थी ?
- क्या आपने बच्चों में से स्वाभाविक नेता चिन्हित किया ? यदि हॉ तो क्या उसे अन्तिम दिन के प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित किया ?
- कोई अन्य बात जो आप बताना चाहते हैं।

परिशिष्ट च : सी.एल.टी.एस. के द्वारा ट्रिगर हुए गांवों के रिर्पोट हेतु मार्गदर्शिका

गॉवों में ट्रिगरिगं के पश्चात समूहों द्वारा सी.एल.टी. एस. ट्रिगरिगं पर रिर्पोट तैयार करने के लिये पर्याप्त समय दिया जाना महत्वपूर्ण है। यह रिपोर्ट उन गॉवों के लिये बाद में मूल्यांकन, प्रगति की गणना तथा प्रभावों को जॉचने हेतु आधार का काम करेगी। गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनो तरह के गॉवों के स्वच्छता के प्रोफाइल को लिपिबद्व किये जाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये -

- गॉवों में कुल परिवारों की संख्या
- कितने परिवारों के पास शौचालय नहीं है ?
- शौचालयों के उपयोग की पद्वित, खुले में शौच की आदत
- डायरिया अथवा पेचिस की घटनाएं, बच्चों का मृत्युदर
- ऑत एवं पेट से सम्बन्धित बीमारियों पर परिवारों द्वारा किये गये कुल खर्चे
- डायरिया अथवा पेचिस के द्वारा कार्यदिवसों की औसत हानि
- गम्भीर बीमार व्यक्तियों का डाक्टर अथवा अस्पताल ले जाने के लिये मार्ग व्यय तथा दवा इत्यादि के खर्चे

इस तरह के अनेक तथ्य मानचित्रीकरण, गॉव के भ्रमण, मल की गणना तथा बीमारियों के खर्चे इत्यादि के दौरान अचानक ट्रिगरिगं के दौरान प्रकाश में आते हैं। एक जागरुक रिर्पोट लेखक इस तरह की चीजों को आसानी से समझ लेता है तथा लिपिबद्व करता है।

रिपोर्ट में समुदाय द्वारा खुले में शौच से मुक्ति हेतु स्तर को प्राप्त करने के लिये किये जाने वाले सामूहिक प्रयासों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिये। इस तरह की रिपोर्ट गॉवों में स्वच्छता प्रोफाईल के अनुश्रवण तथा उसमें होने वाले परिर्वतनों के लिये आधार का काम करती है।

सम्भावित स्वाभाविक नेताओं के नाम, स्वच्छता समितियों और फालोअप के लिये जिम्मेदार संस्थाओं और संगठनों को भी लिपिबद्व किया जाना चाहिये। यदि समुदाय द्वारा निर्णय ले लिया गया है तो खुले में शौच से विमुक्त होने की तिथि को भी स्पष्ट रुप से अंकित करें।

प्रशिक्षकों की रिपोर्ट -

स्वयं के द्वारा स्थलीय प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रधान प्रशिक्षक के द्वारा रिपोर्ट अतिशीघ्र तैयार की जानी चाहिये।

इस तरह की रिपोर्ट में अन्य बातों के अतिरिक्त आगे बढ़ने के सम्बन्ध में संस्तुतियां दी जानी चाहिये। विशेष रुप से भविष्य के लिये क्षमता संवर्धन एवं प्रशिक्षण की आवश्यकताओं, पद्वति एवं रणनीति के संस्थानीकरण अथवा मुख्य धारा में लाने का सुझाव सम्मिलित हो। सी.एल.टी. एस. सिद्वान्त को विस्तारित करने अथवा फैलने में आने वाली समस्याओं व चुनौतियों का जिक्र भी रिपोर्ट में किया

जाना चाहिये तथा जहॉ तक सम्भव हो इसका समाधान भी रिपोर्ट में दिया जाये।

भविष्य के प्रशिक्षणों के लिये सम्भावित प्रशिक्षकों अथवा रिसोर्स पर्सन के रुप में कार्य करने वालों की एक सूची भी संस्तुती की जानी चाहिये। सी.एल.टी.एस. की पद्वति को संस्थानीकरण तथा इसके देश के भीतर फैलने अथवा संस्था के भीतर विस्तारित करने में उपयोगी लोगों के नामों का जिक्र रिपोर्ट में किया जाना चाहिये।

नीचे इस तरह की रिपोर्ट के लिये एक मार्गनिर्देश दिया गया है जो स्थानीय आवश्यकताओं तथा मान्यताओं के आधार पर संसोधित किया जा सकता है। प्रधान प्रशिक्षक को यह ध्यान में रखना चाहिये कि पूरी कार्यशाला की विस्तृत रिपोर्ट भविष्य में सी.एल.टी.एस. के स्थलीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिये एक उपयोगी अभिलेख बन सकेगी। इसी लिये कार्यशाला के दौरान प्रतिदिन की गतिविधियों को विस्तार से रिकार्ड करना चाहिये। प्रत्येक दिन के अन्त में सभी प्रशिक्षकों तथा सुगमकर्ताओं को मिलकर पूरे दिन में हुई गतिविधियों पर विचार करना चाहिये तथा जो व्यक्ति रिपोर्ट लेखन का कार्य कर रहा है उसे मुख्य घटनाओं तथा पूरे दिन के परिणामों को सम्मिलित करना चाहिये।

विषय वस्तु के सम्बन्ध में मार्गनिर्देश -

परिचय तथा पृष्ठ भूमि
सी.एल.टी.एस. कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण
प्रतिभागियों की अपेक्षा
कार्यशाला का उद्देश्य
कार्यशाला का समय सारणी
कार्यशाला की प्रक्रिया
दिवस 1
दिवस 2
दिवस 3
दिवस 4
दिवस 5
गॉवों में सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं हेतु प्रतिभागियों का समूहों में विभाजन
पहले दिन गॉव में ट्रिगरिगं के पश्चात समूहों का प्रस्तुतीकरण
सी.एल.टी.एस. सिद्वान्तों पर नयी सीख के सम्बन्ध में समूह प्रस्तुतीकरण
समुदाय का सुगम कराने का कौशल तथा प्रक्रिया का उपयोग
सामुदायिक प्रस्तुतीकरण
आगे के छः महीनों के लिये पूरे देश के लिये कार्ययोजना
कार्यशाला का मूल्यांकन
संस्तुतियां
सी.एल.टी.एस. पर सूचनाओं के सम्बन्ध में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध श्रोतों की जानकारी
कार्यशाला में प्रतिभागियों की सूची
परिशिष्ट
गॉवों में ट्रिगरिगं की रिपोर्ट
पूर्व में स्वच्छता परियोजनाओं की असफलता के कारण (समूह कार्य के आधार पर)
प्रशिक्षण सामग्री की सूची जो वितरित की गयी

परिशिष्ट छ : सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षण कार्यशालाएं कहॉ तक परम्परागत प्रशिक्षण कार्यक्रमों से भिन्न एवं विशेष हैं

सी.एल.टी.एस. की कार्यशाला अन्य परम्परागत प्रशिक्षण कार्यशालाओं से बहुत तरीकों से अलग है। सी.एल.टी.एस. के स्थलीय प्रशिक्षण में प्रतिभागी सैद्वान्तिक ज्ञान प्राप्ति के साथ ही अपने अनुभवों को लोगों के बीच रखता है तथा कौशल सीखता है। व्यवहारिक सत्रों में समुदाय के साथ वास्तविक रुप से काम करता है। सी.एल.टी.एस. की ट्रिगरिगं का स्वागं किसी भी तरह से बनावटी परिस्थितियां बनाकर नहीं की जा सकती। यद्यपि यह ''स्वयं कर के सीखना और स्वयं करके प्रशिक्षण प्राप्त करना'' के सिद्वान्तों पर आधारित है। यह एक कदम आगे की बात है। सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षण में स्थानीय समुदाय द्वारा सामूहिक व्यवहार परिर्वतन की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने हेतु उनकी गतिविधियों का दिखाई देना आवश्यक है।

सी.एल.टी.एस. कार्यशाला की सफलता इस बात पर होनी चाहिये कि समुदाय स्थानीय स्तर पर समुदाय आधारित प्रयासों को प्रारम्भ करता है। प्रशिक्षण के दौरान सामान्य रुप से प्रतिभागियों द्वारा कई समुदायों में सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं किया जाता है। बहुत खराब स्थिति में भी कुछ समुदाय खुले में शौच की प्रवृति को बन्द करने का निर्णय लेते हैं तथा सामूहिक प्रयास प्रारम्भ करते हैं।

सी.एल.टी.एस. का प्रशिक्षण कार्यक्रम परिणाम आधारित है। यदि प्रशिक्षण के दौरान किसी भी गॉव में ट्रिगरिगं नहीं हो पाती है तो ऐसी कार्यशाला को सी.एल.टी.एस. कार्यशाला नहीं माना जा सकता। कार्यशाला के उपरान्त

कौन सी बात सी.एल.टी.एस. के स्थलीय प्रशिक्षण को स्वच्छता के विषय पर आयोजित होने वाले परम्परागत प्रशिक्षणों से पृथक करता है ?

	स्वच्छता पर अन्य परम्परागत प्रशिक्षण	सी.एल.टी.एस. प्रशिक्षण
प्रशिक्षण का मुख्य बिन्दु	प्रतिभागियों के क्षमता संवर्धन के परिणामों के रुप में	गॉवों का खुले में शौच से विमुक्त होने के परिणाम के रुप में तथा प्रतिभागियों का क्षमता संवर्धन
अन्तिम परिणाम	▪ प्रशिक्षकों एवं सुगमकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाना ▪ सामान्य रुप से निर्धारित परिणामों का होना	▪ प्रशिक्षकों एवं सुगमकर्ताओं को प्रशिक्षित किये जाने के अतिरिक्त स्थानीय समुदाय द्वारा खुले में शौच से विमुक्त के स्तर को प्राप्त करने के लिये सामूहिक स्थायी प्रयास किये जाने के परिणाम ▪ अन्तिम परिणाम की जानकारी न होना। बाहर के सुगमकर्ताओं की सोच में यह सकारात्मक हो सकता है अथवा अनैपक्षित रुप से नकारात्मक हो सकता है।
प्रशिक्षण देने के तरीके	यह सहभागी हो सकता है परन्तु पूर्व निर्धारित प्रशिक्षण परिणामों पर बल दिया जाता है।	सहभागी के साथ स्वयं के अनुभव आधारित सीख पर बल दिया जाता है। नयी सीख के लिये हमेशा तैयार रहना।
चर्चा कक्ष में तथा समुदाय के बीच जाकर काम करने के बीच समय का बटवारा	▪ चर्चा कक्ष में अधिक समय ▪ गॉवों में भ्रमण के उपरान्त निकाले गये परिणामों के विश्लेषण पर अधिक समय दिया जाना	▪ चर्चा कक्ष के बजाय समुदाय के बीच जाने पर अधिक समय देना ▪ समुदाय के सदस्यों को अपने विचारों को रखने के लिये बुलाया जाना जिसमें समुदाय स्वयं अपना विश्लेषण करती है तथा तत्काल कार्य करने की योजना भी बनाती है।
किसके द्वारा सीखना	विषय विशेषज्ञ, एवं विशिष्ट लोगों से सीखना	स्थानीय समुदाय तथा स्वाभाविक नेताओं से सीखना
पी.आर.ए. का प्रयोग होता है	सामान्य सूचनाओं स्थानीय विश्लेषण और प्रतिभागी योजना के लिये, यदि ठीक से सुगम कराया गया तो धीरे-धीरे स्थानीय प्रयास पी. आर.ए. के अभ्यास के परिणाम के रुप में निकलता है।	समुदाय तत्काल सामूहिक स्थानीय प्रयास के लिये जोर लगाती है। अपने स्वयं के विश्लेषण से सीखती है तथा तात्कालिक प्रयास के द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति की समय सीमा निर्धारित करती है।
मुख्य केन्द्र	सहभागी विश्लेषण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाना तथा बाहरी लोगों तथा प्रतिभागियों के द्वारा सीखना	विश्लेषण को सुगम करना जिसके द्वारा घृणा, शर्म, भय, आत्मसम्मान तथा सामूहिक एकता के द्वारा सीखने का आधार बनता है जिससे व्यवहार में तेजी से परिर्वतन आता है।
प्रशिक्षण का परिणाम अथवा प्रभाव देखने के लिये समय	कुछ महीनों अथवा वर्षों के बाद प्रतिभागियों के क्षमता संवर्धन के रुप में दिखायी पड़ता है।	तीन चार सप्ताहों अथवा तीन चार महीनों के भीतर तेजी से परिर्वतन आता है।
सुगम कराने के तरीके	सभ्य एवं सुशील तरीका (खराब शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है जिससे लोग उद्‌द्वेलित हो जायें)	सकारात्मक, क्रियाशील एवं सीधी बात करने वाला (सामान्य रुप से स्थानीय भाषा एवं शब्दों का प्रयोग किया जाता है तथा किसी को खुश करने का प्रयास नहीं होता)

ट्रिगर हुए गॉवों में से 60 प्रतिशत गॉव 3 महीने के भीतर खुले में शौच से विमुक्त किये जाने का लक्ष्य रखना अच्छा है (मौसम के आधार पर समय बढ़ घट सकता है)। यदि एक भी गॉव में खुले में शौच से विमुक्ति नहीं हुई तो ऐसे प्रशिक्षण को सफल प्रशिक्षण नहीं माना जाना चाहिये।

इसलिये ट्रिगर हुए समुदायों में फालोअप की गति विधियों की योजना पहले ही बना ली जानी चाहिये। बिना फालोअप के ट्रिगर करना एक खराब तरीका है। यह समुदाय के लिये खराब है तथा भविष्य में सी.एल.टी.एस. को दुष्प्रभावित करेगा।

परिशिष्ट ज : ऐसे अर्न्तराष्ट्रीय प्रशिक्षकों के लिये ध्यान देने योग्य बातें, जो ऐसी भाषा में कार्यशाला आयोजित कर रहे हैं जिनमें उनकी धाराप्रवाहिता नहीं है

अकसर अर्न्तराष्ट्रीय प्रशिक्षक एवं सुगमकर्ता अपनी भाषा से अलग अथवा उस भाषा में जिनमें वह धारा प्रवाह नहीं हैं प्रशिक्षण देते हैं। उदाहरण के लिये मैने मोजाम्बिक में पुर्तगाली में, बोलविया में स्पैनिस में, माली तथा अन्य 11 फ्रैन्च बोलने वाले अफ्रीका के पश्चिमी देशों में फ्रान्सीसी में, इण्डोनेशिया में बहासा में, फिलीपिन्स में ताहलोग तथा अन्य दूसरी भाषाओं में अनुवादक के सहयोग से प्रशिक्षण आयोजित किया था। मैं सोचता हूँ कि अन्य अर्न्तराष्ट्रीय प्रशिक्षकों के लिये निम्न टिप्स उपयोगी साबित होगें-

- अनुवादक से पहले ही मिल लें तथा सी.एल.टी.एस. के सिद्वान्तों को बता दें। विशेष रुप से यह अवश्य बता दें कि यह प्रशिक्षण अन्य परम्परागत प्रशिक्षणों से किस तरह भिन्न है।

- इस पर बल देने की आवश्यकता है कि ''गूह'', ''गूह'', ''गूह'' सी.एल.टी.एस. में मल विर्सजन या शौच नहीं है।

- व्यक्तिगत रुप से आप प्रशिक्षण के समस्त उपकरणों जैसे दृश्य एवं श्रृव्य के उपकरण, तार रहित माइक, हैडफोन तथा अनुवाद करने के वास्तविक माध्यमों इत्यादि की जॉच कर लें।

- यदि तार रहित माइक सिस्टम उपलब्ध नहीं है तथा पुराने तरीके के तार से जोड़ने वाले हैडफोन उपलब्ध है तो प्रत्येक कनैक्शन तथा तार की लम्बाई की जॉच कर लें। अकसर इस तरह की तकनीकी बातें आपको प्रशिक्षण के बीच में परेशान कर सकती हैं। हमेशा तार रहित हैडफोन सिस्टम पर बल दें क्योंकि सी.एल.टी.एस. की कार्यशाला में प्रशिक्षक को चर्चा कक्ष में अकसर घूमते रहना पड़ता है तथा लोगों को कुर्सियां बदलनी पड़ती है। समूह के गठन, रोल प्ले, खेल तथा अन्य प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियां संचालित की जाती हैं अतः एक स्थान पर फिक्स अथवा जुड़ी हुई कुर्सियों के चर्चा कक्ष में यह प्रशिक्षण आयोजित करना अत्यधिक कठिन है।

- जिस समय आप कोई खेल या समूह अभ्यास करा रहे हों तथा आपको सभी प्रतिभागियों को एक साथ निर्देश देने हों। उस स्थिति में आप अनुवादक को उसके लिये बनाये गये बूथ से बाहर निकाल कर ठीक अपने बगल में खड़ा करायें तथा उसे तार रहित माइक्रोफोन अथवा माइक दे दें। उससे कहें कि जो आप कह रहे हैं उसको माइक के द्वारा ठीक-ठीक अनुवाद करे। इस तरह के अनुवाद या भाषा परिर्वतन के तरीकों की आवश्यकता उन समयों पर पड़ती है जब प्रतिभागियों को तेजी से स्थान बदलना हो अथवा समूह का गठन करना हो अथवा उन्हें खड़ा कराकर उनमें ऊर्जा संचालित करने की कोई गतिविधियां की जा रही हों। अनुवाद के इसी तरीके को सी.एल.टी.एस. के द्वारा ट्रिगर हुए समुदायों के चक्रानुक्रम में आयोजित होने वाले प्रस्तुतियों के समय भी जरुरत पड़ती है। (इसे सामान्य रुप से चर्चा कक्ष के बाहर आयोजित किया जाता है जिसके लिये बड़े एवं खुले स्थान की आवश्यकता पड़ती है), जहॉ 10 या 12 समुदायों के लोग एक ही समय पर अपनी प्रस्तुतियां देते हों।

- यह महत्वपूर्ण है कि अनुवादक अथवा भाषा को रुपान्तरित करने वाले व्यक्ति के साथ आप प्रतिदिन बैठें तथा अगले दिन की गतिविधियों के बारे में उसे स्पष्ट रुप से बता दें। कृपया उसे अनुवाद के तरीकों के बारे में भी बता दें जैसे : हैडफोन के साथ अथवा हैडफोन के बिना सीधे माइक पर अनुवाद करना हो। आप अलग-अलग सत्रों में इन दोनों तरीकों की आवश्यकता महसूस करेंगें।

- यदि आप प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों के लिये कुछ पठन सामग्री वितरित कर रहे हैं तो उनका अनुवाद किया जाना सुनिशचित करा लें। कार्यशाला के पहले ही अनुवाद की गुणवत्ता की जॉच, अनुवादक के साथ तथा अन्य सम्बन्धित लोगों के साथ बैठकर अवश्य कर लें।

- सी.एल.टी.एस. की कार्यशाला में वरिष्ठ नीतिनिर्धारक, प्रबन्धक अथवा राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय लेने वाले उपस्थित हों तथा कुछ लोग ऐसी भाषा में अपना प्रस्तुतीकरण करना चाहतें हो जो सभी उपस्थित लोगों को समझ में नहीं आ रही हो तो ऐसे प्रस्तुतीकरण को, यदि सम्भव हो तो आप पहले ही देख लें। भाषा की समस्या के कारण स्पष्ट रुप से जानकारी प्राप्त नहीं होने से चर्चा कक्ष में अनावश्यक चर्चा बढ़ती है तथा समय बर्बाद होता है।

परिशिष्ट झ : सी.एल.टी.एस. रणनीति के लिये चैकलिस्ट

क्या सी.एल.टी.एस. के सिद्वान्तों की प्रकृति के अनुसार आपकी रणनीति ठीक एवं सही दिशा में है ?

कहॉ प्रशिक्षण सही है, इसके लिये प्रतिभाग कर रहे संगठनों द्वारा विकसित की गयी सी.एल.टी.एस. रणनीति सही दिशा में है, इसको जानने के लिये निम्न बिन्दु उपयोगी हो सकते हैं-

- क्या कुछ गॉव अथवा पूरे जनपद या बड़े क्षेत्र में एक साथ आगे बढ़ने के लिये आपकी रणनीति सक्षम है ? सामान्यतः सी.एल.टी.एस. का दृष्टिकोण वाह्य पोषित स्वच्छता के कार्यक्रमों की अपेक्षा तेजी से विस्तारित होना चाहिये।

- क्या आप उन स्थलों पर सामाजिक संरचना तैयार करने के लिये प्रयास कर रहे हैं जहॉ समुदाय के लोग स्वयं मुख्य चालक की भूमिका में हैं, जबकि बाहर के विशेषज्ञों की सहायता और संरक्षण प्राप्त हो रहा है ?

- क्या आपकी रणनीति परिणाम आधारित सिद्वान्त पर है ? परिणाम जैसे कि ''निर्मित शौचालयों की गणना'', जबकि परिणाम ''समुदाय में स्थाई व्यवहार परिर्वतन'' या ''खुले में शौच से पूर्ण विमुक्ति''

- क्या आपने संस्थागत ढॉचा तैयार किया है ? तथा इसके साथ जनपद, विकासखण्ड, गॉव तथा समुदाय स्तर पर समर्पित लोगों की टीम बनी है ?

- क्या रणनीति स्वच्छता हेतु दिये जाने वाले आर्थिक सहायता को प्रोत्साहित करती है अथवा यह बाहर से मिलने वाले पुरुस्कारों पर आधारित है ?

- क्या आपकी रणनीति का क्रियान्वयन पूरी तरह सरकारी विभागों, अनुभागों तथा संरचनाओं पर निर्भर है ?

- समुदाय द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों तथा समुदाय के लोगों को नियोजन तथा क्रियान्वयन की पूरी प्रक्रिया में किस सीमा तक शामिल किया गया है ?

- क्या समुदाय से उभरने वाले स्वाभाविक नेताओं को सामुदायिक सलाहकार के रुप में उपयोग में लाने की व्यवस्था स्पष्ट रुप से बनायी गयी है ? क्या इन लोगों को नाममात्र के लिये शामिल किया गया है अथवा सी.एल.टी.एस. को विस्तारित करने के लिये बराबर के सहयोगी की भूमिका दी गयी है ?

- क्या स्थानीय स्वयं सेवी संस्थाएं अथवा समुदाय आधारित संगठन, जिन्हें सामान्य रुप से समुदाय में मॉग पैदा करने की जिम्मेदारी दी गयी है, सरकार के ठेकेदार के रुप में काम कर रहे हैं अथवा ये लोग काम के प्रति जागरुक एवं प्रतिबद्व हैं।

- क्या प्रत्येक स्तरों पर आवश्यक प्रशिक्षण एवं क्षमता संवर्धन का प्राविधान है ?

- क्या सी.एल.टी.एस. ट्रिगरिगं के बाद कोर टीम के सभी सदस्य फालोअप के लिये उठाये जाने वाले कदमों के प्रति पूरी तरह स्पष्ट हैं ?

- क्या जनपद के लिये सी.एल.टी.एस. पर पॉच दिन का प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्याप्त है ? क्या रणनीति में फालोअप के लिये तथा भविष्य के क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों की व्यवस्था रखी गयी है ?

- किस सीमा तक आपकी रणनीति में सूचना, शिक्षा एवं संचार की सामग्री को विकसित करने के पुराने तरीकों को रखा गया है ? (जैसे कि निर्देशात्मक पोस्टर, हैण्डआउट्स) जैसा कि सी.एल.टी.एस. से पूर्व उपयोग में लाये जा रहे थे।

- क्या आपके पास अपने जनपद अथवा अपने क्षेत्र की सी. एल.टी.एस. प्रशिक्षण में प्रशिक्षित लोगों की विस्तृत जानकारी है ? वे क्या कर रहे हैं ? क्या इन लोगों ने सी.एल.टी.एस. का प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त अपने गॉवों में सी.एल. टी.एस. की ट्रिगरिगं अथवा सी.एल.टी.एस. का प्रशिक्षण आयोजित किया था ? किसने कुछ नहीं किया था ? यदि ऐसा है तो क्यों ? किस तरह की बाधाएं इन लोगों ने झेली थी ?

- आपके जनपद के कितने सी.एल.टी.एस. के प्रशिक्षक चैम्पियन अथवा मजबूत समर्थक के रुप में उभर कर आये हैं तथा कितने लोगों को दूसरे गॉव के लोगों ने विषय विशेषज्ञ अथवा रिसोर्स पर्सन के रुप में आमंत्रित किया है ?

- कितनी बार आपने इन लोगों को जनपद स्तरीय आयोजित होने वाले वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों की बैठकों में प्रतिभाग करने के लिये आमंत्रित किया है ? क्या इन लोगों ने नाममात्र को प्रतिभाग किया था ?

- आपके जनपद में सी.एल.टी.एस. के सिद्वान्तों के प्रयोग से कितने प्रकार के अनुश्रवण के गैर परम्परागत सूचक विकसित हुए हैं ? उदाहरण के लिये गॉव के डाक्टर तथा दवा बेचने वालों की आय में अत्यधिक गिरावट हुई है, उपमण्डल अथवा सबडिविजन के अस्पताल पर भेजे जाने वाले मरीजों की संख्या में गिरावट अथवा विकास खण्ड स्तर पर स्वास्थ्य क्रेन्दों के प्रवेश में गिरावट अथवा स्थानीय दुकानों पर शौचालयों में प्रयोग में आने वाले पिट एवं पैन की बिक्री में वृद्वि।

- खुले में शौच को विमुक्त करने के अभियान के दैनिक अनुश्रवण हेतु बच्चों की सहभागिता कैसी है ?

- अनुश्रवण हेतु बनाये गये आपके सूचक कितने गुणात्मक है तथा कितने मात्रात्मक ?

- आपके जनपद में किस समय शौचालयों की तकनीक से लोगों को परिचय कराया गया ? क्या आपने इच्छित व्यवहार परिर्वतन से पहले तकनीक से परिचय कराया ?

- क्या आपने लोगों के समक्ष चुनने हेतु शौचालयों के तकनीक के विभिन्न विकल्प प्रस्तुत किये अथवा आपने अपनी बाहरी तकनीकी लोगों पर थोपी ? क्या हम सामुदायिक इन्जीनियरों को सशक्त कर रहे हैं ?

- क्या हम विभिन्न तकनीकों में सुधार तथा शौचालय के तकनीकों के मूल्यांकन के प्रति गम्भीर हैं अथवा हम सीधे तकनीक के बारे में निर्देशित कर रहे हैं ?

- क्या हम इस बात पर आश्वस्त हैं कि हमारा ग्रामीण समुदाय ''स्वच्छता सीढ़ी'' पर क्रमशः आगे की तरफ बढ़ रहा है ? शौचालयों के सुधार हेतु स्वच्छता सीढ़ी में दर्शाये गये किन कदमों का अनुपालन हो रहा है ? क्या हम समुदाय से यह अपेक्षा कर रहे हैं कि स्वच्छता सीढ़ी में सबसे ऊपर समुदाय सीधे कूदकर पहॅुच जाये ?

परिशिष्ट ञ : सी.एल.टी.एस. के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी

सी.एल.टी.एस. की बेबसाइट www.communityledtotalsanitation.org पर सी.एल.टी.एस. के बारे में विभिन्न देशों की सूचनाएं उपलब्ध हैं। विभिन्न प्रकाशन, शोध पत्र, सम्मेलनों के पेपर, छायाचित्र तथा अन्य बेबसाइट तथा इलैक्ट्रोनिक श्रोतों की जानकारी इस बेबसाइट पर उपलब्ध है।

सी.एल.टी.एस. के बारे में दी जा रही सूचनाओं हेतु अपना नाम अंकित कराने तथा बेबसाइट एवं सी.एल.टी.एस. के समाचारों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु कृपया पैट्रा बोर्गोट्ज (p.bongartz@ids.ac.uk) से सम्पर्क करें।

प्रकाशित सामग्री

दिसम्बर 2008 में आई.डी.एस., यूनिर्वसिटी ऑफ ससैक्स में आयोजित सी.एल.टी.एस शोध सम्मेलन में बंग्लादेश, भारत तथा इण्डोनेशिया के सम्बन्ध में प्रस्तुत किये गये शोध पत्रों तथा द्वितीय दक्षिण एशियाई देशों के स्वच्छता सम्मेलन, इस्लामाबाद, तृतीय दक्षिण एशियाई देशों के स्वच्छता सम्मेलन, नई दिल्ली तथा द्वितीय अफ्रीकी देशों के स्वच्छता सम्मेलन, डरबन में प्रस्तुत पत्रों को शामिल करते हुए डाउनलोड करने लायक प्रकाशन सामग्री उपलब्ध है।

अन्य प्रकाशनः

Chambers, Robert (2009) Going to Scale with Community-Led Total Sanitation : Reflections on Experience, Issues and Ways Forward. IDS Practics Paper. Brighton: IDS

http://www.communityledtotalsanitation.org/resource/going-scale-community-led-total-sanitation-reflections-experience-issue-and-ways-froward

George, Rose(2008) The Big necessity-The Unmentionable World of Human Waste and Why it Matters, Metropolitan Books, Henry Holt and Company, New York

Kar, Kamal (2006) Subsidy or Self Respect? IDS Working Paper 184, Brighton IDS

Kar, Kamal with Robert Chamber (2008) Handbook on Community-Led Total Sanitation. London : Plan International (UK).

http://www.communityledtotalsanitation.org/resource/handbook-community-led-total-sanitation

सी.एल.टी.एस. की उपरोक्त हस्तपुस्तिका की फ्रान्सीसी, स्पेनिस, पुर्तगाली, बंगाली एवं हिन्दी में अनुवाद की प्रति मुफ्त में डाउनलोड की जा सकती है।

Kar, Kamal and Petra Bongartz (2006)Latest Update to Subsidy or Self Respext? (Update IDS Working Paoer 257) Brighton: IDS.

http://www.communityledtotalsanitation.org/resource/latest-update-subsidy-or-self-respect-update-ids-working-paper-257

Kar, Kamal and Katherine Pasteur (2005) Subsidy or self-respect? Community led total sanitation. An update on recent developments. IDS Worksing Paper 257. Brighton : IDS

http://www.communityledtotalsanitation.org/resource/subsidy-or-self-respect-community-led-total-sanitation-update-recent-developments

Mehta, Lyla and Synne Movik (forthcoming) Shit Matters. Book Manuscript.

Musyoki, Samuel Musembi (2007) 'Sceptics and Evangelists': Insights on Scaling up community-Led Total Sanitation (CLTS) in Southern and Eastern Africa. Brighton : IDS

http://www.communityledtotalsanitation.org/resource/sceptics-and-evangelists-insights-scaling-community-led-total-sanitation-clts-southern-and-

फिल्म

बी.बी.सी./टी.वी.ई. अर्थ रिपोर्ट भाग-1 ''क्लीन लिविगं भाग-1'' (बांग्लादेश)

उपरोक्त फिल्म को प्राप्त करने के लिये कृपया दिना जुनकेरमान, वितरण प्रबन्धक, टी.वी.ई. से सम्पर्क करें। दूरभाष +44 20 7901 8834, email: dina.jukermann@tve.org.uk

उपरोक्त फिल्म के छोटे भाग को यू ट्यूब पर देखा जा सकता है।

http://www.youtube.com/watch?v=kSCFJxhjNqg

दिल्ली स्थित नौलेज लिंक्स ने निम्न फिल्में बनाई हैं -

1. No Shit Please (English)
2. Understanding CLTS with Kamal Kar (English)
3. People and their voices (English)
4. एक बेहतर दुनिया के लिये (हिन्दी)

उपरोक्त फिल्म को प्राप्त करने के लिये कृपया निम्न ईमेल पर सम्पर्क करें - knowledgelinks@gmail.com

WSP: Awakening : The story of achieving total sanitation in Bangladesh

Part 1 http://uk.youtube.com/watch?v=2ZObVlirCzQ

Part 2 http://uk.youtube.com/watch?v=HkiCi3AEa8O&feature=related

अधिक जानकारी के लिये श्री अजित कुमार से सम्पर्क करें - ईमेल Ckumar1@worldbank.org

WSP: Awakening Change: CLTS in Indonesia (in English and Bahasa Indonesia), available from Water and Sanitation Program- East, Asia and Pacific, Contact Djoko Wartono dwartono@worldbank.org

You Tube **पर भी उपलब्ध**

Plan, Bangladesh http://uk.youtube.com/watch?v-SPtM4pZrf1g

http://uk.youtube.com/watch?v=mOGvUgQCDc&feature=related IRSP Pakistan

http://uk.youtube.com/watch?v=mzpR-xVH8nQ

छायाचित्र

सी.एल.टी.एस. से सम्बन्धित छायाचित्र एवं स्लाइड शो उपलब्ध है - http://www.communityledtotalsanitation.org/page//cits-photos. नियमित रुप से सी.एल.टी.एस. से सम्बन्धित छायाचित्र जोड़े जा रहे है & http://www.flickr.com/photos/communityledtotalsanitation/

लेखक के बारे में

कमल कार ने 1999-2000 में बंग्लादेश के राजशाही जिले के मोस्माईल गॉव में वाटर एड, बंग्लादेश तथा उसके सहयोगी स्वयं सेवी संस्था वी. ई. आर. .सी. (विलेज एजुकेशन रिर्सच सेन्टर) द्वारा संचालित परम्परागत वित्तपोषित पेयजल एवं स्वच्छता परियोजना के मूल्यांकन के दौरान सी.एल.टी.एस. के विचार एवं सिद्धान्त को विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभायी। कमल कार, जिनका विकास की विभिन्न परियोजनाओं में सहभागी सिद्धान्तों का कई वर्षों का अनुभव रहा है, समुदाय के दृष्टिकोण को समझना चाहते थे कि क्यों लोग खुले में शौच करते हैं।

स्थानीय समुदाय से सीखने के उपरान्त स्थानीय स्वयं सेवी संस्था को यह समझाने में कमल कार सफल रहे कि ऊपर से संचालित शौचालय निर्माण हेतु दिये जा रहे धन की सहायता को बन्द कर दें। इन्होने संस्थागत दृष्टिकोण में परिर्वतन तथा समुदाय की अत्यधिक भागेदारी की आवश्यकता की वकालत की। समुदाय को प्रशिक्षण के माध्यम से इन्होने इस रुप में सशक्त बनाया कि बिना बाहरी हस्तक्षेप के समुदाय अपनी वर्तमान स्वच्छता एवं कचरे की स्थिति का विश्लेषण करके सामूहिक निर्णय लेते हुए खुले में ौच की आदत को बन्द करे। इन सबका परिणाम अत्यन्त विशिष्ट आये तथा बाद में जैसा कि स्पष्ट है वहॉ की पूरी घटना एक इतिहास है।

कमलकार ने पिछले 10 वर्षों में अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे डब्लू.एस.पी., डी.एफ.आई.डी., यूनीसेफ, डब्लू.एस.एस.सी.सी., आईरिस एड, डब्लू.एच.ओ., प्लान इन्टरनेशनल, वाटर एड, केयर इत्यादि अनेकों संगठनों के साथ एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के 28 से भी अधिक देशों में प्रशिक्षण, सलाह एवं समर्थन के माध्यम से सी.एल.टी.एस. को विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भारत, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, पाकिस्तान तथा एशिया के कुछ अन्य देशों में इस सिद्वान्त को परिचित कराने के उपरान्त श्री कमल कार ने पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका के देशों में 2006 से इस सिद्वान्त को प्रारम्भ किया, इनमें यूगाण्डा, इथोपिया, तन्जानिया, केन्या, जाम्बिया, मोजाम्बिक, मलावी, इरिट्रिया एवं सूडान प्रमुख हैं। 2007 में इन्होने सी.एल.टी.एस. के सिद्वान्त को पश्चिम अफ्रीका के देशों में प्रारम्भ कराया तथा सियरा लियोन में प्रथम 3 कार्यशालाएं आयोजित किया जिसके उपरान्त माली, नाइजीरियां, चाड में 2009 में कार्यशालाएं आयोजित की गयी। आज सी.एल.टी.एस. दुनिया के 32 से अधिक देशों में क्रियान्वित की जा रही है तथा कम से कम 5 देश ऐसे हैं जिन्होंने सी.एल.टी.एस. को अपनी राष्ट्रीय स्वच्छता नीति में स्वीकार किया है।

डॉ0 कमल कार की वर्तमान अभिरुचियों में सी.एल.टी.एस. का संस्थानीकरण तथा विस्तारित करने के कार्य, शहरी इलाकों में सी.एल.टी.एस. के उपयोग, संक्रमण से होने वाली बीमारियों, पशुओं से पैदा होने वाले मानवीय संक्रमण, खुले में शौच से होने वाली बीमारियों तथा जानवरों एवं मानव के आपसी सम्बन्धों इत्यादि पर समझदारी विकसित करना है। कार अस्थायी रुप से विश्व स्वास्थ्य संगठन के बीमारियों के दो सन्दर्भ समूहों के अस्थायी सलाहकार हैं, जिनके नाम हैं - नेगलेगटेड ट्रौपिकल डिजीज (एन.टी.डी.) तथा जूनोसेस एण्ड मार्जेनलाइज्ड इन्फैक्शस डिजीज (जूम-इन्न)।

कार ने पूरी दुनिया में प्रशिक्षकों एवं व्यवसायिकों तथा ज्ञान प्रबन्धन की मॉग को देखते हुए तथा सी.एल.टी.एस. के प्रयोग करने वालों, नीतिनिर्माताओं तथा सरकारों के बीच क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिये सी.एल.टी.एस. फाउन्डेशन की स्थापना की है।

पशुधन उत्पादकता, कृषि एवं प्राकृतिक संसाधनों के विशेषज्ञ होने के कारण कार, कृ-ि की कम कीमत की तकनीकी तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन हेतु बहुत से नये सिद्वान्तों को आगे लाने में अग्रणी रहे हैं। डॉ0 कार मंगोलिया के गोबी में सामूहिक चारागाह प्रबन्धन तथा प्राकृतिक संसाधनों (नुखुरलुल्स) के अग्रणी व्यक्ति रहे हैं। इन कार्यो के अतिरिक्त ाहरी गरीबी झोपड़ पट्टियों के विकास तथा भारत, मंगोलिया, बांग्लादेश एवं कम्बोडिया में स्थानीय स्वशासन में कार्य किया है। श्री कार इन्टरनेशनल फैडरेशन फार वूमन इन एग्रीकल्चर (नई दिल्ली) के संस्थापक सदस्य हैं।

डब्लू.एस.एस.सी.सी. के बारे में

वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलोबरेटिव काउन्सिल (डब्लू.एस.एस.सी.सी.) अनेक स्टेक होल्डरों की साझेदारी एवं सदस्यता आधारित एक वैश्विक संगठन है जो लोगों के जीवन को बचाने तथा आजीविका में सुधार हेतु कार्य करता है। यह विश्व के सुरक्षित एवं साफ ौचालय रहित 2.6 बिलियन लोगों तथा स्वच्छ पेयजल से रहित 884 मिलियन लोगों के लिये पेयजल एवं स्वच्छता सेक्टर में कार्य कर रहे विभिन्न संस्थाओं तथा व्यवसायिकों के बीच सहयोग बढ़ाने का काम करता है। अपने काम के द्वारा डब्लू.एस.एस.सी. गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण सुधार, लिगं भेद को समाप्त करना तथा दीर्धकालीन सामाजिक एवं आर्थिक विकास जैसे बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देता है। इसका 36 देशों के साथ साझेदारी है तथा इसकी सदस्यता 160 से भी अधिक देशों में है। इसका सचिवालय जनेवा में यूनाइटेड नेशन्स ऑफिस फार प्रोजेक्ट सर्विसेज (यू.एन.ओ.पी.एस.) में है। अधिक जानकारी के लिये बेबसाइट www.wsscc.org पर जायें।

स्थलीय अभ्यास प्रशिक्षण को सुगम बनाने हेतु

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये कार्यशालाएं

प्रशिक्षकों के उपयोगार्थ प्रशिक्षण मार्गनिर्देशिका

सी.एल.टी.एस. दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत तेजी से फैल रहा है। प्रशिक्षण प्राप्त तथा अपना समय एवं ऊर्जा लगाने वाले सुगमकर्ताओं एवं सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षकों की उपलब्धता अभी भी बहुत कम है।

यह और भी गम्भीर है क्योंकि अन्य प्रशिक्षणों से अलग सी.एल.टी.एस. की ट्रिगरिगं समुदाय में होती है। यहॉ प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण के विशे-ा प्रकार के तरीके, बातचीत एवं व्यवहार की आवश्यकता है। सी.एल.टी.एस. का प्रशिक्षण अनिवार्य रुप से वास्तविक समयावधि में समुदाय के साथ वास्तविक ट्रिगरिगं का स्थलीय एवं व्यवहारिक होना अनिवार्य है। जिसके द्वारा आगे चलकर खुले में शौच से विमुक्त गॉव तथा समुदाय उभरते हैं। प्रशिक्षकों तथा प्रशिक्षण की सही परीक्षा यह नहीं है कि प्रशिक्षण में कितनी संख्या थी अपितु ऐसे प्रशिक्षणार्थियों की संख्या महत्वपूर्ण है जो स्वयं प्रभावी तरीके से समुदाय के भीतर सी.एल.टी.एस. को सुगम बनाते हैं। अच्छे स्थलीय व्यवहारिक प्रशिक्षण का मुख्य सूचक यह है कि प्रशिक्षण के दौरान समुदाय में प्रज्जवलन हुआ है तथा समुदाय के लोग तत्काल सामूहिक प्रयास का निर्णय लेते हैं, जिसके उपरान्त फालोअप करते हुए यथा सम्भव समय में गॉव को खुले में शौच से विमुक्त बनाते हैं।

सी.एल.टी.एस. सिद्वान्त में विकासशील देशों के ग्रामीण स्वच्छता की स्थितियों को सुधारने, विकास के सहत्राब्दी लक्ष्यों की प्राप्ति तथा मानव के जीवन स्तर में सुधार करने की बड़ी क्षमता है। इस क्षमता की प्राप्ति के लिये आवश्यकता के अनुरुप पर्याप्त संख्या में अनुभवी, क्षमतावान, सूक्ष्मदर्शी एवं अवसरों को उपयोग में लाने वाले प्रशिक्षकों की उपलब्धता आवश्यक है जो अन्य प्रशिक्षको तथा समुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिये अनिवार्य है। अतः अच्छे प्रशिक्षकों की संख्या में तेजी से वृद्वि आवश्यक है तथा इनके कार्य को पर्याप्त सहायता मिलनी चाहिये।

वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलोबरेटिव काउन्सिल

15, चेमिन लोईस-दूनेन्त
1202 जेनवा
स्वीटजरलैण्ड

दूरभा-ा : +41 22 560 8181
फैक्सः + 41 22 560 8184
बेबसाइट - www.wsscc.org
ई मेल - wsscc@wsscc.org

CLTS Foundation a better tomorrow

WATER SUPPLY & SANITATION COLLABORATIVE COUNCIL